નિત•નવ઼ઠ•દિનેશ•કુમા૧•મિશ્ર

નિત·નવ઼ઠ·શ્નિ઼ંપ્ઠામે·સુમાષ·ચંદ્૧·ય઼ાદવ઼પ૧·કેંદ્રિત·" નિત·નવ઼ઠ·સુમાષ·ચંદ્૧·ય઼ાદવ઼" ·એવ઼ં·૧ાળદેવ઼·મંડઠપ ૧·કેંદ્રિત·" Raj deo ·Mandal -·Mai t hi l i ·W i t er " ·કે૧·વાદ·તેસ૧·પોથી

ગળેન્દ્૧•ઠાકુ૧

વ઼િદેહ-પ્રથમ•મૈથિઠી•પાક્ષિક•ઈ-પત્રિકા•(વ઼િદેહ·www. vi deha. co. i n) ·પેટા૧સઁ

વ઼િદેહ: •મૈથિઠી•સાહિત્ય઼•શ્રાન્દોઠન



વ઼િદેહ•મૈથિઠી•સાહિત્ય઼•શ્રાન્દોઠન: •માનુષીમિહ• ંસ્ક્રિતામ્

....


··भालसरिक·गाछ·जे·सन·2000·सँ·याहूसिटीजपर·छल·http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html ,·http://www.geocities.com/ggajendra··आदि·लिंकपर··आ·अखनो·5·जुलाइ·2004·क·पोस्ट·http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html··(किछु·दिन·लेल·http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html··लिंकपर, ·स्रोत·wayback·machine·of ·https://web.archive.org/web/*/videha··258·capture(s)·from2004·to·2016-·http://videha.com/··भालसरिक·गाछ-प्रथम·मैथिली·ब्लॉग·/·मैथिली·ब्लॉगक·एग्रीगेटर)·केर·रूपमे·इन्टरनेटपर··मैथिलीक·प्राचीनतम·उपस्थितक·रूपमे·विद्यमान·अछि।·ई·मैथिलीक·पहिल·इंटरनेट·पत्रिका·थिक·जकर·नाम·बादमे·1·जनवरी·2008·सँ·"विदेह"·पड़लै।इंटरनेटपर·मैथिलीक·प्रथम·उपस्थितिक·यात्रा·विदेह-·प्रथम·मैथिली·पाक्षिक·ई·पत्रिका·धरि·पहुँचल·अछि, जे·http://www.videha.co.in/··पर·ई·प्रकाशित·होइत·अछि।·आब·“भालसरिक·गाछ”·जालवृत्त·'विदेह'·ई-पत्रिकाक·प्रवक्ताक·संग·मैथिली·भाषाक·जालवृत्तक·एग्रीगेटरक·रूपमे·प्रयुक्त·भऽ·रहल·अछि।·विदेह·ई-पत्रिका·ISSN·2229-547X·VIDEHA

·विदेह-·प्रथम·मैथिली·पाक्षिक·ई-पत्रिका·ISSN·2229-547X·VIDEHA·सम्पादक: ·गजेन्द्र·ठाकुर·Editor: ·Gajendra·Thakur.

रचनाकार·अपन·मौलिक·आ·अप्रकाशित·रचना·(जकर·मौलिकताक·संपूर्ण·उत्तरदायित्व·लेखक·गणक·मध्य·छन्हि)·editorial.staff.videha@gmail.com·केँ·मेल·अटैचमेण्टक·रूपमेँ·.doc,·.docx,·.rtf·वा·.txt·फॉर्मेटमे·पठा·सकै·छथि।·एतऽ·प्रकाशित·रचना·सभक·कापीराइट·लेखक/संग्रहकर्त्ता·लोकनिक·लगमे·रहतन्हि।·सम्पादक·'विदेह'·प्रथम·मैथिली·पाक्षिक·ई·पत्रिका·ऐ·ई-पत्रिकामे·ई-प्रकाशित/·प्रथम·प्रकाशित·रचनाक·प्रिंट-वेब·आर्काइवक/·आर्काइवक·अनुवादक·आ·मूल·आ·अनूदित·आर्काइवक·ई-प्रकाशन/·प्रिंट-प्रकाशनक·अधिकार·रखैत·छथि।·(The·Editor,·Videha·holds·the·right·for·print-web·archive/·right·to·translate·those·archives·and/·or·e-publish/·print-publish·the·original/·translated·archive).

ऐ·ई-पत्रिकामे·कोनो·रॉयल्टीक/·पारिश्रमिकक·प्रावधान·नै·छै।·तेँ·रॉयल्टीक/·पारिश्रमिकक·इच्छुक·विदेहसँ·नै·जुड़थि,·से·आग्रह।·रचनाक·संग·रचनाकार·अपन·संक्षिप्त·परिचय·आ·अपन·स्कैन·कएल·गेल·फोटो·पठेताह,·से·आशा·करैत·छी।·रचनाक·अंतमे·टाइप·रहय,·जे·ई·रचना·मौलिक·अछि,·आ·पहिल·प्रकाशनक

हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। एहि ई पत्रिकाकेँ मासक 01 आ 15 तिथिकेँ ई प्र प्रकाशित कएल जाइत अछि। I SSN: 2229-547X

નતિ નવલ દનિશ કુમાર મશ્રિ



દનિશ કુમાર મશ્રિ, આઇઆઇટી ખડગપુરસઁ સવિલિ ઇન્જીનયિરિંગિ મે બી ટેક ૧૯૬૮મે આ સ્ટ્રક્ચરલ ઇન્જીનયિરિંગિમે એમટેક ૧૯૭૦મે। મથિલિાક બાઢ઼કિ એક્સ્પર્ટ। મથિલિાક મોટા-મોટી સભ બારપર કતિાબ પ્રકાશતિ। ઉત્તર બહિાર કી વ્યથા કથા □૧૯૯૦□□ કોસી- ઉમ્ર કૈદ સે સજા-એ-મૌત તક □૧૯૯૨□ બંદની મહાનંદા □૧૯૯૪□□ બોયા પેડ઼ બબૂલ કા- બાઢ઼ નયિંત્રણ કા રહસ્ય □૨૦૦૦□□ બગાવત પર મજબૂર મથિલિા કી કમલા નદી □૨૦૦૪□□ જ઼ુલ્મ નદી ઔર તકનીકી હાડ઼-શૂક (૨૦૦૫), દુઇ પાટન કે બીચ મેં- કોસી નદી કી કહાની □૨૦૦૬□ તથા બાગમતી કી સદ્ગતિ (૨૦૧૦)।

પૂર્વપીઠકિા:

દનિશ કુમાર મશ્રિક 'દુઇ પાટન કે બીચ મે' કોસી નદીક ઐતહિાસકિ આત્મકથા થીક, આ મથિલિાક આન બાર સભક ઐતહિાસકિ આત્મકથા સેહો લખિને છથ િજેના બન્દની મહાનન્દા, બાગમતી કી સદ્ગતિ, દુઇ પાટન કે બીચ મે (કોસી નદી કી કહાની), ન ઘાટ ન ઘર, બગાવત પર મજબૂર મથિલિા કી કમલા નદી, જ઼ુલ્મ નદી ઔર તકનીકી હાડ઼-શૂક, થહે પાનલ ઢ઼રિ ાદ સ્ટીપલ આન છોલસીિ છુરસે, મહુતાહ િમાલન- ષટોરાઇ ગહોસત નરિ

ાનદે નગાનિાનિગા ાતિયહ્યનાઙા, ઢ઼ેડુગેસ ાઙ તહે ધ્યોસા એમવાનકમેનતસ। સાહિત્ય઼ અકાદેમીક મૈથિલિ પનામન્શદાત્ની સમિતિક સદસ્ય઼ પંકળ ઙ્ઞા પનાશન દ્વ઼ાના હનિકન પોથી સજાસઁ પૈનાક પૈના મૈથિલિ અનુવ઼ાદ કs અપના નામે ઉપન્ય઼ાસ છપવાઓલ ગેલ અછિ, ળકના છદ્મ સમીક્ષક કમલાનન્દ ઙ્ઞા એ યોન લેખકક નસિન્ય કહૈ છથિ! એતs સ્પષ્ટ કs દી ળે ૬ યોન લેખક આ છદ્મ સમીક્ષક દુનૂ અલીગઢ઼ મુસ્લિમ વ઼દ્ય઼િાલય઼ક હિન્દી વ઼િભાગમે છથિ। ૬ નસિન્ય દનિશ કુમાન મશ્નિક થીક, ળે આ઼ન઼્આ઼ન્ટી઼ ધ્યડ઼ગાપુનસઁ સવ઼િલ ઇન્ળીનય઼િનિઙ મે વ઼ી ટેક઼ ૧૯૬૮મે આ સ્ટ્નક્ચનલ ઇન્ળીનય઼િનિઙમે એમ઼ટેક઼ ૧૯૭૦મે કેને છથિ, આ ઓન નસિન્ય લલ ક્વ઼ાલિસ્ફાઇઙ છથિ। ળખ્યન કોનો વ઼ષિય઼મે નામાંકન નૈ હોઇ છૈ તખ્યન લોક હાન-થાકિ હિન્દીમે નામાંકન લઇએ, નૈ તઁ કમલાનન્દ ઙ્ઞા કેઁ વુહs મે આવિ ળઇતન્હિ ળે ૬ નસિન્ય કોનો સવ઼િલ ઇન્ળીનય઼િનેક જાs સકૈત અછિ, જાs સકૈએ વુહલ હોઇન્હ। હિન્દી આ મૈથિલિ દુનુક સ્ક્નીનશ□ટ સંલગ્ન અછિ।

દનિશ કુમાન મશ્નિ મથિલિક નૈ છથિ મુદા મથિલિક સન યાનક કથા ઓ લખ્યિને છથિ, હમ સન હુનકા પ્નતિ ક□તળ્ઞ છી આ હુનકન ઋણસઁ મથિલિવ઼ાસી કહિય઼ો ઉઋણ નૈ જાs સકતા, મુદા મૂલયાનાક પુનસ્કાન આ પાઇ લેલુપ લોકસઁ ક□તઘ્નતે જેઠત સે શ્ઙન સદ્ય઼િ જેલ। એ લેખકકેઁ દસ વાનહ વન્ષ પહિને સેહો તાનાનન્દ વ઼ય઼િોગી ઉદ્યાનક જેઠલ છલખ્યન્હિ ળે લખ્યિને નહથિન્હિ ળે ઓ કવ઼િતામે પ્નજાવ઼િત જાs અનાય઼ાસે અપન નચનામે દોસનક સામગ્ન્ની યોનિ કs લઇ છથિ, એહને સન। આવ એ કમલાનન્દ ઙ્ઞા ક આશ્નય઼ તકલન્હિ મુદા દુન્ભાગ્ય઼!

દનિશ કુમાન મશ્નિક સજટા પોથી આવ હુનકન અનુમતિસઁ ઉપલવ્ધ અછિ વ઼િદેહ આન્કાઇવ઼મે:

હ્ટતપ્:વ઼િદિહ઼ાયો઼ન્પિોતહ્હિમ

એતs એકટા ગપ મોન પાડ઼િ દી ળે ળખ્યન વલિ ગેટ્સકેઁ પૂછલ ગેલન્હિ ળે કી ઓ એક્સ વ□ક્સ જાનતમે પાઇનેશીક ઙનસઁ દેનીસઁ આનિ નહલ છથિ? તઁ હુનકન

उत्तर रहन्हि जे माइक्रोस□फ्ट पाइरेसीक डरे कोनो उत्पाद देशीसँ नै उतारने अछि। से वृद्धि पेटारमे हम सभ ए तरहक रसिक रहितो एकरा आर सम□द्ध करैत रहब, कारण समानान्तर धारामे सड़ल माँछ द्वारे पोखरिक सभ माँछ नै सड़ैए, एतुक्का मलाह गोट-गोट कऽ सड़ल माँछ निकालैत रहल छथि, निकालैत रहता।

सिण्डीकेटेड समीक्षापर अन्तिम प्रहार।

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच मे… २००६): यह ध्यान देने की बात है कि १९२३ से १९४६ के बीच कोसी क्षेत्र में मलेरिया से ५, १०, ०००, कालाजार से २, १०, ०००, हैजे से ६०, ००० तथा चेचक से ३, ००० मौतें (कुल ७, ८३, ०००) हुईं।

चोर पंकज झा पराशर [जलप्रांतर २०१७ (प□ १०३)]:

ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच मे… २००६): भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम १२वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से कोई ५ किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ॰ फ्रांसिस बुकानन (१८१०-११) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध चौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक ३२ किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ॰ डब्लू डब्लू हन्टर (१८७७) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों

के હ્વાઉ से હ્ન્ટન का માનના था कि અધિકાંશ ઉોગ ઙસે कઉિ की દીવાન નહીં માનતે ઔન ઉનકે હસિાવ से यह कुछ ઔન ही યીળ થી મગાન વહ નશ્ચિયતિ ઼ૂપ से कुछ कहने की સ્થતિિ મેં નહીં થે। ઙૃાિ મી ળો ઓામ યાનાાા વની है वह यह है कि यह कोसी नदी के कनिाने वना कोई ૧ટવન્ય નહા હોગા। ળસિસે નદી की યાના को પશ્ચમિ की ઔન ખ્ખસિકને से નોકા ળા સકે। ઉોગો का यह भी कहना था कि ऐसा ઉગાતા था कि ઙસ ૧ટવન્ય का નનિ્માાા કાન્ય એકાએક નોક દયિા ગયા હોગા।

છદ્મ સમીક્ષક કમઉાનન્દ હ્ા દ્વાના યોન ઉપન્યાસકાનક પીડ ઙેકવ, દેખ્ખૂ છદ્મ સમીક્ષક કમઉાનન્દ હ્ા દ્વાના ઉદ્ય૧ યોન પંકળ હ્ા પનાશન (મૈથઉિી ઉપન્યાસ, સમય, સમાળ ઓ સવાઉ પ઼ ૨૫૭- ૨૫૮):

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

योग पंकज द्वारा प्रकाशित [जलप्रांतर २०१७ (पृ॰ ३१)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप कें आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा कें लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनेँ छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवत: कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक कें बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका कें आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): कोसी के प्रवाह कें

भयावहता की एक झलक फिरोजशाह तुगलक की फौज के सन् १३५४ में बंगाल से दिल्ली लौटने के समय मिलती है। बताया जाता है कि जब सुल्तान की फौजें कोसी के किनारे पहुँची तो देखा कि नदी के दूसरे किनारे पर हाजी शमसुद्दीन इलियास की फौजें मुकाबले के लिए तैयार खड़ी हैं। यह वही हाजी शमसुद्दीन थे जिन्होंने हाजीपुर तथा समस्तीपुर शहर बसाये थे। फिरोज की फौजें शायद कुरसेला के आस-पास किसी जगह पर कोसी के किनारे सोच में पड़ गईं। नदी की रफ्तार उन्हें आगे बढ़ने से रोक रही थी। आखिरकार फैसला हुआ कि नदी के साथ-साथ उत्तर की ओर बढ़ा जाय और जहाँ नदी पार करने लायक हो जाय वहाँ पानी की थाह ली जाये। सुल्तान की फौजें प्रायः सौ कोस ऊपर गईं और जियारन के पास, जो कि उसी स्थान पर अवस्थित था जहाँ नदी पहाड़ों से मैदानों में उतरती थी, नदी को पार किया। नदी की धारा तो यहाँ पतली जरूर थी पर प्रवाह इतना तेज था कि पाँच-पाँच सौ मन के भारी पत्थर नदी में तिनकों की तरह बह रहे थे। जहाँ नदी को पार करना मुमकिन लगा उसके दोनों ओर सुल्तान ने हाथियों की कतार खड़ी कर दी और नीचे वाली कतार में रस्से लटकाये गये जिससे कि यदि कोई आदमी बहता हुआ हो तो इस रस्सों की मदद से उसे बचाया जा सके। शमसुद्दीन ने कभी सोचा भी न था कि सुल्तान की फौजें कोसी को पार कर लेंगी और जब उस को इस बात का पता लगा कि सुल्तान की फौजों ने कोसी को पार करने में कामयाबी पा ली है तो वह भाग निकला।

और पंकज झा पराशर [जलप्रांतर २०१७ (पृ॰ १०५)]:

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र–शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनैं रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस–पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना कैँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे–किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनैं कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनैं शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच–पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति कैँ जतय नदी पार करब कनैं आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी कैँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का–बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहैँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनैं छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन कैँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

(𑒖𑒰𑒩𑒲... 𑒬𑒲𑒒𑓂𑒩 𑒁𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒏𑒱𑒣𑒩 𑒁𑒣𑒛𑒹𑒙 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰𑒨𑒞।)

श।।।।।।एसउढ़ए

વ઼દિ઼હ઼: પ્ન્થમ મૈથિ઼ી પાક્ષકિ ઇ- પત્નિકા ૨ષષામ ૨૨૨૯- ૫૪૭ક્ષ વ઼૨યએહ્શ્ર (સનિયે ૨૦૦૪) <u>હ઼ાઠપ઼:વ઼દિ઼હ઼ાયોનિ્</u> **<u>શ્ર્ંક ૩૬૨ ક ૧પિીન્ટ ૫૧ ટપ્પિામી</u>**

बात ई जे सभटा सूचना ...

पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

हिन्दी विभागमे प्रोफेसरक पद पर कार्यर

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे बहुत रास शोध, अनुसंधान, मिथ तथा आदिक रचनात्मक उपयोग पराशर

भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से कोई 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

....

ઉપન્યાસકાર के છર્થા, પંકળ પનાશર (ળ૭ પ્નાંળર ઉપન્યાસ)

દુષ્ટ

ઢ઼ાવણિદનાછહુદહાનય઼

....

વ૯ દુર્ગાાગ્ય઼પૂર્ાઃ, શ્નાપર્ાળિણક શ્ના શ્નાપનાયકિ ક□ર્ય઼

ષ્ઠુમાનમાણોળષ્ઠાસહ્યાપ

....

ઽસજ પઢ઼ વિહુળ યિળિળ છી।

ઢ઼ ꯸ મસિહના

....

દુર્ગાાગ્ય઼પૂર્ા꯸

ષ્ઠા૭પણા હૃહાસ્થાળણા

....

શ્નાહગિવા઼! સ્થેર ઽ के છૈથ?

પંકળ પનાશર (ળ૭ પ્નાંળર ઉપન્યાસ)

હે ञગવા઼ન઼! ઽ ડીકે યોગે છૈથ।

ઉમેસહ માણદા૭

....

ઘુાનિાનઃ

ગીક। એહન યોન કેન દેપ્યાન કનવ ળનૂની

પંકળ પનાશન (ળ૭ પ્નાંળન ઉપન્યાસ)

શ્રોકન ળ ઉપ્પકીય ળીવને યોની પન ટકિઉ છૈ શ્રા ળકના પ્નશ્નય દેવ' વાઉ સેહો મૈથિળિ મે કમ નહિ।

....

એહને યોન ઉક સજ મૈથિળી શ્રાન મથિળિ કે શ્રહિળ કનય મે સદૈવ શ્રાગૂ નહૈળ છથિ

હ્હાશ્નાસાનના

....

એકના કોન્ટ મે ઉડ ળેવાક યાહિ

યોગેન્દ્ન પાઠક વયિોગી

+૯૧ ૯૮૩૧૦ ૩૭૫૩૨

....

..

ષુવહાસહછહાનદગૌાદાવઃ ૨ યોનદેમન ળિ થહે ળહિડ મુસળ વે શપોસેદ

....

શ્રળિ દુપ્પદ, નિન્દનીય

માનીળશ્નાળહાક

....

સાદન શ્રાજાન।

કોટ કન સકૈળ હળન। પનંતુ શ્નોળ કે યન્યા કનનાઈ શ્રાવસ્યક હય। ન ળ સાહિત્યિક યોની માનઉ ળાયળ।

ઢામાનાનદમાનદાઉ

....

યન્યવાદ।

વદિહાપ્પેસહાવમહાનદૌાળયેઉહિ

....

ꪪાવો ꪪાનાયાન મસિહના
દુન્ભાગ્યપૂન્ꪪ સ્થિતિ

....

મુકુનદ માયાનક
શ્રોહ

....

પ્નદીપ પુષ્પ
વહુત ખનાપ વાત।

....

શ્રવહિાસહ થહાકુન ·
ઘ□ꪪતિ કાન્ય! ઉળ્ળા ળોગા

....

શ્રળતિ ખુમાન હૃહ
પતા નહિ ઉાળો નહિ ઉગૈત છન્હિ એહન પ્નવ઼□તિ વ઼ાઉ મહાનુભાવ઼ સવ કૈં। એહન ઉાગા સવ કૈં ઉઉ સેહો શ્રઉગા સઁ પુનસ્કાનક ઘોષણા હોયવાક યાહી। પન્દાશ્રાસ કનવાક ઉઉ શ્રપને કૈં સાધુ વ઼ાદ ।

....

ઢ઼ામેસહ ખુમાન ષહાનમા
પુનસ્કાન પાવૈ કે ળઉદવાળી હૈૌ

....

ખુનાઉ
ઉપન્યાસ શ્રા તકન ઉખકક નામ ઘોષતિ કનુ

....

શ્રસહસિહ શ્રનયહનિહાન
ખુનાઉ ળી, ળઁ કોનો સમાન્ય પાઠક ઇ પ્નશ્ન પુછને નહિથિ તખન હમના નીક ઉાગૈત।
પ્નવુદ્ધ પાઠક શ્રો ઉખક વ઼ન્ગાસઁ ઇ પ્નશ્ન એવાક માતઉવ છૈ ળે સ્થિતિ ગંભીન ભઽ ગેઉ છૈ। શ્રોના ળખન પુછયિ દેઉહુઁ શ્રછિ તખન એકન ઉત્તન શ્રછિ-

પોથી, ળ૭પ્નાંળન, પંકળ પનાશન। એહિ પોથીક ગદગદી શ્રાબેયક, કમ૭ાનંદ હ્રા।

....

પ્પુણા૭

શ્રસહિસિહ શ્રણયહનિહાન યન્યવાદ ।

એણા સાન્વજૌમ ળકાં છર ળે વેસ ગંજીન શ્રાનોપ ૭ગાશ્રો૭ ળાર છર મુદા ણામ ણર ઊ૭ ળાર છર। એણા હમના હારપોક્નેસી ક યનમ ૭ગારએ। ૬ શ્રણસોહાંળ છી ।

શ્રાવ ણામ ૭ ગે૭ છર। ળ હમના ૭ગારએ ળે પંકળ પનાસન (૩પણ્યાસકાન) શ્રા કમ૭ાનંદ હ્રા (શ્રા૭ેયક) કે વાળક યાહિ ।

....

ડાકસહમાણ હ્રા ષાગાન

એહેણ યોનક સામાળકિ વહષ્કિાન હેવાક યાહિ। શ્રાગ પાણિ ઢારડ દેવાક યાહિ। મુઁહ મે કાની યુણ ૭પકિ ગદહા પન સનેશ્રામ ઘુમેવાક યાહિ। એહેણ કુદશા કય દેવાક યાહિ ળે શ્રેન ક્યો એહેણ ઘ□ામાળ કાળ નૈ કનય।

....

છહળિનાગુપળા છહળિનાગુપળા

શ્રળ્યણ્ળ દુષ્પદ

....

ળગદાણણ્દ હ્રા ' મણુ' ·

મથિ૭િ મૈથ૭િમે સાહળ્યિક યોની ળગળાહનિ શ્રછી। મુદા શ્રાવ સાહળ્યિ શ્રકાદમી શ્રા શ્રોકન ૭કક દ્વાના... વહુળ ણદિનીય કાળ, એહેણ એહેણ ૭ોકકેં શ્રવશ્ય દેપ્પાન કનવા યાહિ

....

શ્નીયનમ

૬ પંકળ પનાસન, હમ ળ' પઢવાક શ્રાવશ્યકળા ણહિ વુિહ૭હું। પ્નાળિાક ણામ પન માળ્ન ળુગાડ઼ છણિ હિનિકા ૭ગા।

....:

શ્રપન મંગવૃપ્ર દિતિોનાિઉસગાઙ્વદિહાંગામાઉિયોમ **પન પઙાઙા**

વૃદિહ: પ્નાથમ મૈથઉિ પાક્ષકિ ૬- પગ્નકિા ૨ષષાm ૨૨૨૮- ૫૪૭શ્ર વૃ૨યણ્હશ્ર (સનિયે ૨૦૦૪) <u>હાગપ્:વૃદિહાયોનિ્</u> <u>શ્રંક ૨૬- ૫૦ ક નપિોન્ટ પન ટપ્પિામી</u>

....

કેઉઉનેન્ુંયઉિ્ુ"

યોન ઘાળેણદના, ગહાણકસ ઙોન ગહે દેગેયગવિૃીનકૃીસ ગહેને । નેસપોનસે? વેસગ નેગાનદસ,

યુેગઉાસ પ્પેઉઉનેન, શ્રહઉિસોપહ્યૃ ોઙ ણ્દુયાગીનિ છહાનિ

ષેયાિઉ ષયેનિયેસ ાણદ છોમપાનાગવિ ણ્દુયાગીનિ, ૩નવિનસગિયૃ ોઙ છાઉિઙોનણાિ- ઙ્ઞસ શ્રણગેઉસ, નોશ્ર ૮૫૧૫૨૧, ૩૦૨૨જા મૌને હાઉઉ, ઙ્ઞસ શ્રણગેઉસ, છશ્ર ૮૦૦૮૫- ૧૫૨૧, ઢાશ્ર ૩૧૦ ૨૦૬ ૬૨૮૩, શ્રહોને ૩૧૦ ૮૨૫ ૦૮૭૭ હાગપ્ીાગસેસ્સુિયઉિ્ુઙાયુઉગપ્કેઉઉનેન્કેઉઉનેન્હાગમઉ

....

દોન ઘાળેણદનાળિ ાપનેક માઉિ મઉિઉ શ્રાણકાળળકિ કનાગિયા ળાણકિ વાન દુકહ વેહેઉ શ્રહિ સે માગિહઉિકિ ણામ કહાનાવ હેયાગ ાયહ્હિ શ્રપનેક કાદામે કદુમુ યહગિ ાયહ્હિ- **ઢાળવિ પ્પ વેનમા**

...............................:

થહેસે સ્રોપઉ ।મે હેઉઉવેનાન નો વનાનિગ઼ા દીૌન નહે ઉનિનાનય દસિયુોનસે દીૌન નો નહે ગુનનેન્ મ્મૌ યુો હાવે વેન મેયેવિનિગ઼ા માઉિસ ઉકિ ોન્ શ્રૌ ।મેૌનિહ યુો ।નદ િ હાવે ડોનૌ।નદેદ યુોન માઉિસ નો માનિહઉિ સિપોકનિગ઼ા પોપઉ ।ઉઉ ।યનોસસ નહે યુોનનાય્ ષમિ ૨ હાવે સેનન નહે ઉનિક ોડ શ્રાનાસહાન' સ દુપઉયિાયય નો સેવેનાઉ પોપઉ ।ઉેનગ઼ા ૌનિહ શ્રનાનાવહ મહિાનિ ોહે હાદ નનાસઉાનેદ નહાન ।મનયિઉે ૨ હાદ નેઉપહોનયિ યોનવેનાસાનોિન ૌનિહ હમિ ।ઉસો ।નદ હે ૌાસ ટુનિુ પસેન ોવેન શ્રાનાસહાન'સ દુપઉયિાય્ શ્રનાનાવ સિ મય ળુનીિન ।નદ । ગ઼ોદ ડનૌનિદ ોડ મહિ સનિયે યુો હાવે મેડનામેદ શ્રનાનાવૌહે હાદ નનાસઉાનેદ નહાન ।મનયિઉે નિ સિુ નડોનાનુનાને નહાન હેૌાસ મસિુસેદ વય શ્રાનાસહાન્ જુન િમુસન યોનગ઼ાનાનુઉાને યુો ડોને શ્રપોસનિગ઼ા સયામ નુન વય શ્રાનાસહાન ।નદ હસિ નોમ્ શ્રાનાસહાન, નહોગ઼ાહ મુસન નોન વે વઉામેદ ડિ હે ઉડિોદ નહે ।મનયિઉે ોડ મ્મોમ છહોમસકેય્ મ્મૌ િમુસન દુોવન નહે ।મનસિનયિ સેનસવિઉિનિય ોડ શ્રાનાસહાન ૌહે સિ નૌ । પસુેદો-- િનિનેઉઉયનુાઉસ્ ૨ ।મ ।માઉેદ નહાન હૌ દદિ હે દાને નો પુવઉસિહ નહે ।મનયિઉે ોડ મ્મોમ છહોમસકેય ।સ હસિ ૌન્ ઘોદ વઉેસસ હમિ નો મોમ્ - **વરહ્શ્રૈ યણ્શ્રો હ્હ્શ્ર**

....

દહાનયવાદ્ મુદો હ્ને ઉક સાવળાગ઼ાહ ।।દાન પાવાિન ।યહ્ - **સહ્નાદિહાનામ**

....

શ્રહાં કે સૂયનાન્થ પડેને છો (કછુિ ઘ□મ્મિન કાળ પંકળ પનાશનાક) ળે પંકળ પહિનોહે ૨ સવ કાળ કનૈન નહ્ય છઉેય। - **।।વનિાસહ**

....

યોન ઘાળેનદના ગ઼,ૈુ ।મે દોનિગ઼ા વેનય્ૌઉઉ નિ નહે ડઉિદ ોડ યોઉઉેયનિગ઼ા ।ઉઉ નહે દોયુમેનનાસ મેઉાનેદ નો નહે માનિહઉિ વદિહ્ા છોમ મોઉય્ । ।દવેનનુમોૈસ યોઉઉેયનોિન્ રૌઉિઉ ।ઉસો ડનિદ સોમે નમિ નો ઉામમ નહે ।મનયિઉે પુવઉસિહેદ

ՈહՂોગાહ Ոહે વ઼દિહ઼ મૌ યોન દેՈેયՈવિ઼ સՈય઼ઊ Ոહેહ઼Ո Ոહે સઊપનિગ઼ોહ઼ માનય઼ ોહ઼ Ոહે સો યાઊઊદ ઊતિમાય઼ પેમસોનનેઊ઼ ઘો । હોદ઼ ળાિ માՈિહઊિ ળાિ માՈિહઊિ- **ષુનઊિ માઊઊયિક,** શ્રુમેસદિનՈ, મશ્રાશ્રશ્રુ, હ઼ાનાકપુમ

....

યોને હ઼હ઼ોમՈસ ામે યોમમેનદાવઊ઼ શ્રનય઼સુયહ ગ઼ાહેસՈોમતિમોમ હ઼ાકે દિનՈતિય઼ હોઊદેમ મુસՈ વે વોય઼યોՈેદ હ઼મોમ ઊતિમાતુમે ાՈ ોનયે થહાનકસ઼- **સહ્યામાનાનદ યહુદહામય઼**

....

માામાસકામ઼ છહોՈના સામՈિકિ સાયહવિ઼ કેન માઊિક યોપય઼ હાસՈગાՈ કામા દેઊ ાયહ઼િ- **યમ઼ ઢ઼ામાનાનદ હ઼શ' ઢ઼ામાન'**

....

પ્રમયિ઼ ગળેન્દ્ર ળી , યેՈના સમતિ હિનિકા સમ્માનતિ કયઊક શ્રછિ સેહે હમમા ળ્ઞાՈ નહિ | યદ્યપિ હમહૂ યેՈના ક સ્થાઈ સદસ્ય઼ | ળે હ઼ે મુદા નદિાસ્પદ ઘટના Ո ઈ થકિે Ոે દુખી કયઊક | કՈપિય઼ નવ઼ મૈથઊિ-પ્રમՈજ્ઞાિક શ્રાકઊન-મૂઊ્યાનકનક હમમ શ્રપન સ્નેગ્રમહિ સ્વભાવ઼, એહિ દુર્ઘટનાક વાદ Ո શ્રાવ યՈિા મે ય' દેઊકય઼| દેખી, હમ શ્રપને વ઼સ્મિՈિ ભેઊહુઁ| વહુՈ દુઃખદ દ□શ્ય઼ | સ□ળન વ઼નૂિદ્ય સાહત્ય઼કિ સન્દર્ભ મે ઈ ઘટના શ્રાધુનકિ મૈથઊિક વહુՈ કુરૂપ પ્રસંગ ક' ક' સ્મરણ કૈઊ ળાય઼Ո- સસ્નેહ, - **ગંગેશ ગુંળન઼**

....

શ્રુઢ઼ૈશ્ર મશ્રરથહરહ઼દ્શ્રામ, શ્રશ્રુશ્રુશ્રામ ભહશ્રષહશ્ર- ષશ્રામષપ્પશ્રઢ઼- ષશ્રામષપ્પઢ઼રથર પ્પએ શ્રષમશ્રઢ઼શ્રામ પ્પશ્રઢ઼ઉ શ્રશ્ર એહશ્રામ

વ઼રવ઼શ્રયશ્રષશ્રસ્રશ્રય ડ઼એપ્પશ્રામ્મર ગ઼ી પ્પશ્રઢ઼શ્રામ્મર પ્પએ વ઼રઢ઼શ્રમ યૈરૈશ્ર઼ એષશ્રૌશ્રઢ઼ પ્પએ ષશ્રપ્પછ્હર મશ્રામ્મર - યરડ઼ સ્રશ્રઢ઼ હશ્રથહ ઢ઼શ્રપ્પહર શ્રશ્ર પ્પઉડ઼યએવ઼ર પ્પએ શ્રષમશ્રઢ઼શ્રામ્મ પ્પ- પ્પૈશ્રય પ્પશ્રઢ઼ઉ પ્પર ષશ્રછ્હહશ્રર પ્પએ પ્પશ્રથએપ્પ પ્પશ્રઢ઼રગ઼ી છ્હહ઼રામ્મરપ્પ ગ઼ીશ્રથશ્રપ્પ ડ઼એડ઼ મશ્રામ્મછ્હ પ્પએ ઉસ્રૈશ્રોઘ પ્પશ્રઢ઼ર થશ્ર ઉથથશ્રમ઼ યહશ્રામૈશ્રગ઼ીશ્રય઼ષશ્રસ્રઢ઼એમ- **સ્રપ્પ છ્હસ્રોઉયહશ્રઢૈ઼**

....

ઘાળેનદના વાવુ, પાળકાળ પુનાળ યહોન ।યહર્ હિમ સાવોકાન ઊકિહતિ નનિદા દાસ સાઊ પાહનિ ।।નામવહ મે કેને નાહ્ શ્રોકના વાળ ક કાય઼ ।હાળ નકિ કાય઼ાઊ઼ છહેળના સામતિ કે સેહો સામમાણૌપાસ ઊવાક યહાહ્ ।।કાન નનિદા કાનવાક યહાહ્- **સુવહાસહ છહાળદનૌ ।દાવ઼**

....

પ્નાયિ઼ ઠાકુનાળી! (માનનીય઼ સંપાદક), "વ઼દિહ ઈ-પત્નકિા" [મૈથિલિ], એપ્પન યનાકિ ઉપઊવ્ય સાક્ષ્યક શ્રાયાન પન હમ શ્રપનહકિ સંગ ળાએવ પસનિ્ન કનવ। - **શંભુ કુમાન સહિ**

....

યોન ઘાળેનદનાળી,

ર ડુઊઊય઼ ।ગમૌતિહ યુ઼ો તહાતૌ મુસત ડગિહત ।ગાનિસત વઊાતાનત યાસેસ ।ડ નૈોનગાડુઊ ।પપનોપનાિતિનિ્

હાં શ્રપન મેઊ મે ઊપ્પિને છી ળે વ઼દિહ શ્રાન્કારવ઼ સે સંવંયતિ ઊપ્પક'ક સવટા નયના હ્ટા ઊઊ ળાય઼ત। શ્રહ સે શ્રાન્કારવ઼ સં ઈ પ્નસંગ સેહો, એકન સાક્ષ્ય઼ સેહો મેટા ળાય઼ત। હમન મત ઈ ળા સાક્ષ્યવ નહવાક યાહી નકિ શ્રા શ્રયઊાહ દુળ તનહક કાળ' ક। શ્રહાં શ્રપ્પસન કામેંટ શ્રા ન્ણામિય઼ સેહો શ્રાન્કારવ઼ મે

ળા કે સંવંયતિ નયના કે પોસ્ટા-સ્ક્નાપ્ટિન કે નુપ મે જાવ્રિષ્યિા'ક પાડક'ક ઊઊ સુનક્ષતિ નાપ્પા સિકૈત છયિન્હી। ફ દોહ્નેવાક વ્હુત શ્રૌયતિ્યક નહિ ળે વ્રદિહ નકિ ઊગા નહઊ શ્રછિ શ્રા શ્રહાંક પનાશ્નિમ એકદમ દેપ્પા નહઊ શ્રછિ। ફેતિ, સદના। - **ષાદાન હ્ઙ**

....

થહાનક પ્યુ- **ાાસિહકિાનત થહાકુન**

....

થહાનશ ઘાળેનદનાળિ, ડેન પ્યુન મિમેદાિતે નેસપોનસે ર મુસત યોનગાનાતુઊાતે પ્યુ ડેન તહેાૈનક પ્યુ હાવે દોને તો સાવે તહે સાનયતતિય્ાેડ તહે ઊતિનાતુનેાૈનઊદ ાસ ાૈહેઊ ર ડેઊ પનુદ ડેન તહે પેનસોન ઊકિ પ્યુાૈહે સહાૈસ તહે યુનનાગે તો વેઊઊ તહે યાત્ ર૬ તહે સો યાઊઊદાૈનાતિનસ ઊકિ શ્રાનાસહાનળાિને તહેને તો સપોઊિ તહે સો, ાેન તહે ાેતહેન સદિ િત સિ વેનય હોપેડુઊ સગિહત તો હાવે ા પેનસોન ઊકિ પ્યુાૈહે સિ ાઊનાતે નુગાહ તો તાકે યાને ાેડ સુયહ ડઊિતહ &કેપ તહે સો યઊાન્ થહાનશ ડેન ેનઊગિહોેનનિગ મે ાેન તહે સુવળેયત્ ઢ઼ગાનદસ- **જાહાઊયહાનદના હ્ઙ**

....

પંકળ પનાશનકેન એહ્ન કાન્ય પન સ્મનાાા શ્રવૈત શ્રછિ કનીવ વીસ-પચીસ સાઊ પહિુિક ઘટના, ળહયિા શ્રાકાશવાાામી દનભંગાસઁ મ, મ, ૬□, સન ગંગાનાથ હાક એકમાત્ન મૈથિઊિક કાનુાાકિ પદકૈં એક ગોટ કવ્રિ દ્વાના શ્રપન કહિ પ્નસાનતિ કએ દેઊ ગેઊ છઊ, ળે વાદમે (સળગ શ્નોતા દ્વાના સૂચના દેઊાક વાદ) શ્રાળન્મ વૈન કએ દેઊ ગેઊાહ । કહ્વાક તાત્પન્ય ળે ળઁ હમ મૈથિઊ દનભૈગા- મ્યુવનીમે ગંગાનાથ વાવૂક પદકૈં શ્રપન કહિ સિકૈત છી તઁ ફ કોન વડ઼કા ગપ। નશ્નિયયે એહ્ન નયનાકાનકેન સડ્ગા કડ઼ગાન ડેગા ડઠાએવ શ્રાવ્રશ્યક । - **ાળતિ મસિહ્ના**

..................................:

ધોન ઘાળેનદનાળે, શ્રૌ સહોઉદ તાકે સતનોનગ સતેપ તો પનેવેનત સુચહ નિતેઉઉચતુાઉ ચહાતસ્ મચ સુપપોનત સિ ાઉૌાચસૌાતિહ ચુ- **ખ ॥ ह्श**

....:

થહસિ સેમસ તો વે । દાળગેનુસ તનેનદ ાનદૌ સહોઉદ ાઉસો તનાચ ાનદ નેડનાાનિ ડનોમ પુવઉસિહનિગ ાનચતહનિગ ડનોમ સુચહ ુાતહોનસ્ ઢ઼ગાનદસ, - **શ્નોડ઼ ઉદાચા ાાાનાચાના ષનિગહ**

....:

પ્નાયિવન ઠાકુન ળી, મૈથિઉ સાહિત્યકાન શ્રાવ સાર્વન ક્નાર્મ સેહો ક નહઉ છથિ, ઈ ળાનિ શ્રપાન પ્નસન્નતા ભેઉ | પંકળ પનાશન કે નકાનાત્મક વુદ્ધિક પૂન્ાા ઉપયોગ કનવાક ઉઉ હમ નોવેઉ પ્નાશ્ળ સા સમ્માનતિ કનાય યાહૈત છી | - **વુદ્ધિનાથ મશ્નિ**

....:

ષામપાદાક માહોદાય, શ્રપનૈ હિ પિનાકાનાક દુનાયહાન નોકૌાક ઉઉ ળે પનાયાસહ કા નાહાઉ યહહે ોહિ ઉઉ દહાનયાવાદ઼્યહેન વઉાચકમાાઉન સા માતિહઉિ કેન વાચહાયાવ ાાૌાસહ્યાક ાયહહિ, ષાદાન- **ષહર્વ ખઉમશ્રઢ઼ हहश्र**

....:

ગળેન્દ્ન ભાઈ, નમસ્કાન ! મૈથિઉી મે એહિ તનહક કાળ ઉગાતાન ભ' નહઉ શ્રછિ । કછિુ વ્યક્તિ એહિ ધંધા મે શ્રગ્નસન છથિ । મૈથિઉીક સમ્પાદક ઉોકનકિ શ્રનભાળ્ઞિતાક શ્રાયદા કોકો શ્રંગ્નેળી પઢ઼નહિાન તથાકથિત સાહિત્યકાન ઉોકનિ ઉડા નહઉ છથિ । પંકળ ળીક પહઉ મે છપઉ ઉપ્ય કે હમ

સેહો પઢ્ને ન્હી આ કછુિએ દનિક વાદ હમ નેટ પ૧ મૂઉ ઉપ્પકક આઉપ્પ કે સેહો પઢ઼ઉહુ । હમના ા' આશ્ચય્ય ઉાગાઉ છઉ ળે પંકળ ળી આઉપ્પક કમ સ કમ શીન્ષક ા' વદઉ ઉિાથિ મુદા હુનકા એોક ળ્ઞાન નહિનિ ાપ્પન કી છઉ । ઓવે નહિ, હનિક વહુા નાસ કવાિ અંગ્નેળી સાહતિ્ય સ' હે૧-ફે૧ કયઉ ગેઉ અછિ । ધૈ૧ ! ળે ક૧થિ । મુદા એહિ વે૧ કહાવા ઠીક હોવાક ચાહી " સૌ સોનાર કે ા' એક ઉોહાર કે " । પ્૧કાશન મે ળે ની કયિો વ્યક્તા ગાઉાી ક' નહઉ છથિ હુનકા ગંભી૧ ક્૧મિનિઉ વુહ્વાક ચાહી । ધન્યવાદ એહિ ઉિઉ અહાઁ કે ળે એોક ળોનદા૧ ાીકા સ' એહિ ગપ્પ કે ઉઠેઉહુ । - અશોક- પ્૧કાશ ચન્દ્૧ (**પ્૧કાશ હ્રા**, મૈઉેગા)

....

પાળકાળ પાનાસહા૧ વાઉ પનાસાળગા વા૧ દુકહદ ઉાગાઉ - **કામનિ**

....

ધાળેનદ્૧ ળે, માામાઉાા કે ાોઉ ળાાવે દેવાનિહિ સાવહાક ાો૧ળાા ાોવે સવાાહાા હેાા હિમ૧ મનાવ ઓવે, ળે એક વે૧ અહાં દેપ્પા૧ ક દેઉહું, આવ છોડિ દેઉ ળાઓ હનિ્દીયો મે એહિાા ળ નહઉ છૈ વે૧ વે૧ આ પ્પનાવ ભાષા મે ઉપ્પિઉ મોન કે દુપ્પી કયૌ અછિ સ્ટે૧ ઉાગૌ અછિ ળે અહિ મે સમય કયિક નષ્ટ કની? હનિ્દુસ્તાન મે ળાા આ સેહો મૈથિલિ સે ળાા નિયાળાએ હમ એકના નયા મિાૈન છઉહુ મુદા આવ ૩૦ વ૧પ્પ સે મૈથિલિ મે ઉપ્પિનાક વાદ આવ દેપ્પઉ ળે એક આે૧ ૧ મૈથિલિ સાહતિ્ય મે ઉઉિ ળી, ૩ષા ળી આ શેસ્ટઉકિા ળી કે વાદ યદિ કશિ્રી નામ ઉૈા અછિ ા હમ૧ ૨ એપ્પનો કોનો પા૧કિા વૈ છૈ ા હમના ઉઉ નચનાક આગ્૧હ હોશ્રો છૈ ૩ એપ્પનો હમ આેાવે સકનાચિ છી આ નિાિ૧ ઉપ્પિ નહઉ છી ૪ દુપ્પદ ળે હમના વાદ (સુસ્મતિા પાઠક આ ળ્યોત્સ્ના મઉિન કે હમ અપને ાુનાયિા વુહૌ છી) કે વાદ એહેન કોનો સશક્ા કોન, મહઉિ ઉપ્પને નયા આએઉએ પ ૬ સ્થતિ નિહઉાક વાદો, આવ ળહન હમ દેપ્પૈ છી, ા પાવૈ છી ળે હમના પ૧, હમ૧ નચના યાત્ના અથવા હમ૧ નચના પ૧ કછુિ નયા ઉપ્પિઉ ગેઉએ, ચાહે આે

મોહન ભાનદ્વાળ નહથુ અથવા આન કશ્રિો ળહન હમન દશક કેન યન્ય હોશ્ન છૈ, ઠીન યાનટિ ણામ પન સવ઼સ્િઠાન યન્યા હોશ્ન છૈ, ળાહિ મે હમન ણામ ણય઼િ નહૈઠ છૈ હમન ણામ માઠ્ન સન્દન્ભ ભ૭ ળોડ઼િ દેભ ળાશ્ન છૈ દ એોક દનિ મે માઠ્ન નમામ ળી હમના પન એક ગોટ ભષ્પ ભષ્પિભન્હ઼િ હમ શ્રોકના પુનઃ ટાશ્પ કનવા કે શ્રહાં ભગ઼ પડાયવ઼ ૭ ળાઠિ પાઠિ યિન્મ શ્રા દ્વ઼ેષ પન કહયિો યપ઼ાન ણય઼િ દેભાક કાનામે ઠ કહી હમન ૬ સ્થતિ િણય઼િ છૈ, શ્રાવ હમના ૬ સોયવા મે શ્રાવિ નહભ શ્રછ઼િ ૮ હમન શક્િષક, ળે સ્વયં હનિ્દી કે ષ્પ઼ાઠભિવ્ય કથાકાન છથિ, હમના વુહ્ને નહભાહ ળે હમ મૈથભિ મે ભષ્પિવ વન્ન ક; દી, કપ઼િક ઠ હમ ગૈન મૈથભિ (ળાઠિ વ઼િશિષ) સે ણય઼િ છી, ઠૈ હમન ભષ્પન કે કહયિો મૈથભિ સભ ણય઼િ ણોટસિ કનઠાહ, કહયિો કછુિ ણય઼િ કિનઠ઼ા શ્રપન ભાષાક પ્નઠિ પ્નેમ કે શ્રાગનહ કાનામે હમ હુણકન વાઠ ણય઼િ માણભયિ઼ે, ભષ્પિઠ ગેભહું, મુદા શ્રાવ ભગ઼ નહભશ્રએ ળે હુણકન કહવી સહી છભન્હ઼િ કી? ૯ એષ્પણો કી હાભ છૈ મૈથભિ મે, દેષ્પયિ઼ો શ્રોકના વ઼િદુ્ય કછુિ કનયિુ મૈથભિ મે ળે પૈઘ પૈઘ સંસ્થા યાશ્, યેઠણા સમઠિ સણક, સભ વેન વ઼િદ્યાપઠિ પન્વ઼ મણવૈઠ છથિ઼ ભાષ્પો ષ્પન્ય કનૈ છથિ, મુદા ણીક ભષ્પક કેન પોથી સભ વેન ૫-૭ ટા ણકિભેથુ, સે ણય઼િ હોવૈઠ છન્હ઼િ ૧૦ હમના ભેટભ ળાણકાની કે મોઠાવકિ વ઼િદ્ય઼ાપઠિ હિ□ભ કનિાયા પન યઢૈ છૈ઼ ઠકના મે કોણો શ્રાપઠ્ઠિ ણય઼િ, યદ઼ી શ્રોકના સે કછુિ શ્રાય઼ હોવૈ મુદા શ્રોકના મૈથભિક કાળ શ્રથવ઼ા ણાટક શ્રાદિ ભિભ માંગભ ળાએઠ, ઠ; ણય઼િ ભેટૈ છૈ઼ યદિ શ્રોકન શુભ્ક યુકા દી, ઠહન ઠ કનિાય઼ાકે ણૂપ મે કઊિ ભ' સકિ છૈ઼ એકના સભ કે ઙળાગન કન઼ી ૧૧ વ્ય઼ક્ઠિ સે સંસ્થા પૈઘ હોશ્ન છૈ઼ ળેઠક સંસ્થા સભ છૈ, ઠકના પન ભષ્પી, સાહઠિ્ય઼ શ્રકાદમીક મૈથભિ વ઼િભાગ સહઠિ઼ ૧૨ ભભિ ભેક સભટા નયણાક શ્રણુવ઼ાદ શ્રયકિાન હમના દેણે છથિ઼ હુિણક સાહઠિ્ય઼ શ્રકાદમી પુનસ્કાન પ્નાપ્ઠ પોથી 'મનીયકિા' કેન હનિ્દી શ્રણુવ઼ાદ ભભ પછિભ઼ા ૨-૩ સાભ સે હમ ભષ્પિ નહભ છી સાહઠિ્ય઼ શ્રકાદમીક પઠ્નકિા 'સમકાભીણ ભાનઠીય઼ સાહઠિ્ય઼" મે હમ પછિભા ૨૫ સાભ સે શ્રણુવ઼ાદ સહઠિ છપિ નહભ છી઼ મુદા હમના સે શ્રણુવ઼ાદક ણમૂણા માંગભ ગેભ઼ શ્રોહિ કુન્સી પન ળે સ્વ઼ણામ યણ્ય઼ વૈસભ છથિ, હુણકા હમના માદે ણય઼િ વૂહ્ભ ઠ કોણો મૈથભિ સાહઠિ્ય઼કાન સે પૂછિ સકૈઠ છભાહ઼ ૬ ઠહિનિ ભેભે,

ળેના એક વેન એક ગોટ યૈનઉ ऋषકિશ મુપ્પન્ળી સે હુનકન વાયોડાટા મંગાને છઉ શ્રા એપ્પનિ પઢઉ સમાયાનક શ્રનુસાને શ્રા ળાનકો વ઼ઉઉજ શ઼્હસ઼્ની સે હુનકન વાયોડાટા પદ્મશ્રી ઉઉ માંશ્રગઉ ગેઉય઼ ૧૩ શ્રપન વ઼નિમ્નાના દન્શાવેન હમ ઉઉિ ળીક દૂ નીન ટા કથાક હિન્દી શ્રનુવ઼ાદ હમ પડા દેઉયિન્હ઼ નૈયો શ્રૈ પન કોનો વ઼યિાન નય઼િ ઉપ્પિઉ કે વાદ હમના કહઉ ગેઉ ળે હમ ઉઉિ ળી સે સાહિત્ય઼ શ્રકાદમી કે શ્રનુવ઼ાદક શ્રયકિાન દયિાવે મે મદદિ કિન઼ી શ્રાને જાૈ, શ્રહાં કે શ્રનુવ઼ાદ સે મનઉવ શ્રછિ નૈ, શ્રા ળહન હમ શ્રનુવ઼ાદ ક; કે દેવ' ઉઉ નૈયાન છી નહન શ્રકાદમી કે કશ્રિપૈક શ્રયકિાન યાહિ? શ્રૈ ઉઉ ળે શ્રકાદમી શ્રપન પસીનક શ્રાદમી કે શ્રનુવ઼ાદ ઉઉ દ; સકય઼ એપ્પનિ યિનિ શ્રોકના પન નપિટાના નય઼િ જેઉય઼ે શ્રકાદમી સે શ્ઠન કોનો પત્ન નય઼િ શ્રાએઉ શ્રછે઼ શ્રનુવ઼ાદ નૈયાન નાપ્પઉ છૈ઼ ઉઉિ ળી શ્રાવ વહુન વુળુન્ગ જ; ગેઉ છથિ઼ હુનક માત્ન શ્યૈહ શ્યછા છૈ (શ્રા વહુન સ્વ઼ાજાવ઼િક) ળે હુનકન પોથી સજ હુનકા સોહા મે પ્નકાશિન જ; ળાએ ૧૪ ઉઉિ ળી કે પોથી હિન્દી મે શ્રાનવાક શ્રેય઼ હમને શ્રછિ, ૈ મનિહું શ્રોકના નેક□ન્૯ કેનાએ મૈથિઉ સમીક્ષક શ્રાવ઼શ્યક નય઼િ વુહૈન છથિ઼ એકના પન ઉડૂ ૧૫ મૈથિઉ કે જાનનીય઼ ળ્ઞાનપીઠ સે પુસ્નક પ્નકાશન ઉઉ હમહિ શ્રાગાં એઉહું શ્રા પ્નજાસ ળી શ્રા ઉઉિ ળી કે પોથી વહાન જેઉજાનનીય઼ ળ્ઞાનપીઠ સે મૈથિઉ પુસ્નક પ્નકાશન કે શ્રેય઼ હમને છિન્હ઼િ, ૈહો મનૈન શ્રોકના નેક□ન્૯ કેનાએ મૈથિઉ સમીક્ષક શ્રાવ઼શ્યક નય઼િ વુહૈન છથિ઼ એકના પન ઉડૂ ગળેન્દ્ન ળી, મૈથિઉક ૈ સજ માનસકિના પન શ્રાન્દોઉન કની ળાહિ સે નયનાકાન શ્રા વ઼નાષ્ઠિ નયનાકાન સજ કે શ્રપમાનિન નય઼િ હિવ' પડૈ શ્રહાં યાહિ ન' એકના વ઼દિહ પન દ' સકૈ છી઼ હમ દોસન વાન સેહો ઉપ્પિ કે પઠાયવ઼ મુદા હમ શ્ઠન કહવ, ળે હમ વ઼્યક્નિ કે નય઼િ સંસ્થા શ્રા વ઼્યક્નિ કે માનસકિના કે દોષ દેવન્હ઼િ ઉઠક પઠથુ શ્રા પૂયાથુ ૈ સ્વ઼નામયન્ય઼ સજ સે ળે ળકના સે શ્રહાં કે ગોઉસી શ્રછે, નકના પન શ્રહાં ઉપ્પિવ શ્રા ળકના સે નય઼િ શ્રછે, ળે મૌન જાવ઼ે ઉપ્પિ નહઉએ કોનો વ઼વિ઼શ્રાદ મે પડઉ વગૈન, હુનકા ઉઉ ૈ વ઼્યવ઼હાન? - **વ઼ઞિા નાની઼**

....

ષ૬ની ગાળેળદનાળાં, ગૌદ ગૈનક્ શ્રનહા સા ેહિના નેન કહસહિ વ઼લિકાકાકુ મમેદ ાગાાના વાનાઉ નાહાન્ યહેન કૈ હિના દેકહાન કોક વાાદ દાનદાિ સેહે કાનવાક પનાયાસ કાનવાાક યહાહ઼ ાિહા વાહુળ નાસ નેક પાહાઉ કા નાહાઉ યહહ઼ ષાાદ્દુવાાદ્- **માનોળ પાળહાક્**

....

શ્રૌ સહુઉદ વે ગમોનડુઉ ળા શ્રાળકાળ શ્રાનાસહાન ળહાળ હે દદિ નોન ઉાય યઉામિ ોન ળહે માગળુમ ેપુસ ોડ પ્યાવાં વ઼દિયાપાળ્ ૨ કનૌ હમિ વ઼નય ૈઉઉ ાળદ હસિ ગનુપ ાસૈઉઉ઼ થહેય઼ હાવ઼ે નૌ ઉવે઼ ડોન માળિહિઉિ નિ ડાયળ ળહેય઼ ામ ળહે મોઉસ પઉાળળેદ વય઼ વ઼ેસળેદ હનિદા ૈનળિનસ ળા દામાગે માળિહિઉિ઼ શ્રાનાસહાન ાળદ ઉકિસ ામ ળહે દસિળુયળવિ ઉાળસ ાળદ ળહેય઼ ામ ળહે યુઉપનાળિસ ડોન ાગોનસિનિગા સેનાંમ ૈનળિનસ ોડ માળિહિઉિ ળહોસે ૈહો દેદયિાળેદ ળહેમિ ઉડિ ડોન માળિહિઉિ ઉાળગુાગે ાળદ ઉળિનાળુ઼ે ૨ હાવ઼ે નૌ સયમપાળહ્ય઼ ડોન હમિ઼ ૨ યાળળ સાય઼, ેવ઼ળ, ઘોદ વઉસસ ળહેમ઼ - **છહનિના મસિહના**

....

ળાનાળન્દ વ઼યિોગી: (મથિિલા સ□ળન: ફૂન-ળુઉાઈ ૨૦૧૦□ વ઼ન્ષ□૧□ શ્રંક□૨□: હુળક (પંકળ પનાશનક) શ્રનેક નયના એહનો છ્ળા ળિકન ળન્મ દોસનક કાવ઼્ય઼ નયના પઢ઼ઉાક શ્રનળ્ળન નેઉનાં શ્રછા। કવ઼ાિા શ્રો પનાપૂિનાામાળ: હુળકે થકિનાં મુદા કછુિ ગોટેકેં ઈ કહ્વાક શ્રવ઼સન નેટા ગેઉનાં ળે શ્રો પંકળ યોન-કવ઼ા થકિાહ। હમ દેખ્ૈળ છી ળે યોન સમીક્ષક નાને શ્રો હેથુ, યોન-કવ઼ા શ્રો કદાપાં નહાં છથાિ। મુદા એના કએિક નેઉ? એહાં દુશ્રાને નેઉ ળે શ્રાળક નયના પઢ઼ા કિડ શ્રપન શ્રનુભૂળામિ ડાળૈળ કાઉ શ્રો શ્રાળક શ્રાનાનંડઉસઁ ળેના શ્રાક્નાળ્ળ છઉાહ ળે ળકન છાપ કવ઼ાિાક દ□શ્ય઼મે દેખાન પડ઼ા ગેઉ। ઈ વ઼સ્ળુળ: સદ્િયળાક કમી થકિ, ળકના ક્યો નયનાકાન નયાિ-નયાિ સદ્િય કડ સકૈળ શ્રછા।

....

ગૌરીનાથ (શ્નણ૭ક્ાણ્ત)- સમ્પાદકીય શ્રંતિકા શ્રક્ટૂવર-દસિંવર, ૨૦૦૯- ળણવરી-માર્ચ, ૨૦૧૦- પંકળ પરાશર પ્રસંગમે- હૈં, દંદ-શ્ઙદ કરૈવણ કછિુ ૭ીક સવ ડામ પહુઁચ્યિ ળાર છૈ શ્રા તેહ્ન ૭ીક એતહુઁ શ્રપન ધૂર્તતા શ્રા ચોરા કિ૭ દેખ્વૈ છથિ। મુદા તકરો શ્રસ૭યિત ઉળાગર કરવ શ્રસંભવ નઇઁ રહ૭। "વ઼દિહ"ક ગળેન્દ્ર ડાકુર એહન એક "પુવ઼ા" (પંકળ હ્વા ૩ર્શ્ચ પંકળ પરાશર) ક શ્રસ૭ી ચેહરા હા૭ મે દેખ્યોણ્ત।

....:

ૈ પંકળ હ્વા પરાશર પહિનેહિપિસઁ એહિ સિભમે સંગ્ગ્રણ શ્રછિ, હ્રેક□ષ્મ હ્વાક કવ઼તિકૈં હિન્દીમે, વનિ શ્રનુમતિકિ, છપવૈ છથિ; ૈ ગપ શ્રાર પુષ્ટ હોરત શ્રછિ કારામ વ઼દ્યિાણન્દ હ્વા ળીક કવ઼તિ સેહો ૈ પંકળ હ્વા પરાશર એકટા હિન્દી પત્રકિામે વનિ શ્રનુમતિકિ છપવશ્રો૭ક (ૈ સૂચના હ્રેક□ષ્મ હ્વા ળી દ્વ઼ારા પ્રાપ્ત ભેળ, ળે વ઼દિહમે છપ૭ાક વાદ પંકળ હ્વા પરાશર હુનકા શ્ઠોન કડ કય઼ ટ□ર્ચર કે૭કન્હિ ળિપ્પન શ્રો વીમાર રહથિ। હ્રેક□ષ્મ હ્વા ળી શ્ઠોન દ્વ઼ારા સેહો સૂચતિ કે૭ન્હિ, હ્મ કહ૭યિન્હિ ળે કી ૈ સૂચના વ઼દિહસઁ હટા દી? ત઼ **હ્રેક□ષ્મ હ્વા** ળી કહ૭ન્હિ, રહડ દયિૌ, સત્ય઼ ળે છૈ, સે ૈરહ છપિ- સમ્પાદક) । ૈ પંકળ હ્વા પરાશર કએક વેર, કે૭ક મુદા ઐ વેર ત઼ શ્રો શ્રપને ણામે દોસરાક રચના છપવા ૭૭ક, શ્રનુવ઼ાદક નૂપમે નૈ। -સમ્પાદક)

<u>રમેશક શ્રા૭ખ્ય-વહસ-પંકળ પરાસરક સાહિત્ય઼કિ ચોરા મૈથિલી સાહિત્ય઼ક કારી શ્રધ્ય઼ાય઼ થકિ- પર કછિુ પાઙકક વ઼ચિાર:</u>

ષહ્રવ઼ પ્ય૩મશ્રઢ઼ હ્વહશ્ર થરડ઼ડ઼શ્રોશ્રો હ્વશ્રમષહએચશ્ચ૩ઢ઼ સાદિ઼

ઢ઼ામેસહ ળે કેણ દહાણય઼ાવ઼ાદ, સાતય઼ા ગાપપ વાળૌક સાહાસ "મરથહરડ઼શ્ર" મે ાાવ઼િ ાહા૭ ાયહહિ ાિક ૭ાાગા૭, ચહહાદમા ૭ીકપરાય઼ાિતાક કહાતિ ૭ીક કયિહુ

કા સાકાિ ાયહ્હસ્થિાણકાળ શ્થાાાસહાાાકાાવ યહાાયહ કાાાવ સેહો ણાહિ સોહાય઼ ઊાગિ ાાહાઊ઼ળાોેક ણણિદા કાયાઊ ળાય઼ કુમ પાાાઽમુદા ઢ઼શ્રમણ્ષહ ઝાશ્રઝાઉ હ્ઉ શ્રશ્રાાાા઼ ષશ્રઝાહ ાાાઽાાયશ્ર ખ્યશ્રઢશ્રૈ છ્હહ્એએ શ્રશ્ર ખ્યઽછ્હઉ ઙ઼શ્રોખ્ય ખ્યશ્રહ્શ્રઽથ છ્હહ્શ્રથહ્ઽ શ્રશ્રાાાખ્યશ્રદ્દ હ્એએ હ્ઉઘ- હ્ઉઘ હ્ઽશ્રૌશ્રથહ્ઉ, શ્રોાાાશ્ર હ્શ્રમહ્ઉ હ્ઉાાાશ્રખ્ય ચઽઢ઼ઘહ્શ્ર હ્એએવ઼શ્રાાાશ્રખ્ય ખ્યશ્રશ્રમાાાાશ્ર ખ્યશ્રઢ઼શ્રઽથ છ્હહ્એએ, શ્રશ્રઢ઼શ્રાાાછ્હ ષશ્રઝાહ્શ્રખ્ય હ્એ હ્ઉઘ- હ્ઉઘ હ્ઽશ્રૌશ્રખ્ય ખ્યશ્રશ્રમાાાાશ્ર ખ્યશ્રૈશ્રઙ઼ હ્શ્રૈ મશ્રથઢ઼શ્ર શ્રશ્રાાાખ્યશ્રદ્દ શ્રશ્રઢ઼શ્રષહ્શ્રઢ઼શ્રખ્ય ઙ઼એઙ઼ ાાાશ્રહ્ઽ"ષશ્રઢ઼ઝાએ ઝાહ્શ્રૌશ્રાાાથઉ ષઉખ્યહ્ઽાાાશ્રહ", ઢ઼શ્રમણ્ષહ ઝાશ્રઝાઉ શ્રશ્રશ્રાાા ઙ઼એખ્યહ્શ્રાાાઽ ખ્યએાાા ઘશ્રથઽ ાાાઽઢ઼શ્રાાાથશ્રઢ઼ ઢ઼શ્રખ્યહ્શ્રઙ઼ હ્શ્રૈ

ઢ઼ામા હ્હા સાદિ઼

ેહિ વિ઼યાકાિ પિાણકાળ પાાાસહાાાકે કાો હાણે ગહાાણિાિ મેસસાગો કાા માહિઊ ળો હામાા માિાા યહાાહિ, કે વહેાાઊ યહહિ, ાોક ગહાાણિાિ ળો ાાય઼ ણાિ ઊકિહિ સાકાિ યહહિ, ાપાણ ાાયહણા કે દોસાા વહાસહા મે મૌઊ કાહિ પાાકાસહાિ કોણાિ યિહોાિાે ણાિ વિહેઊિ, મુદાિ ોકાાા સવ઼ાયાંમ દવ઼ાાા ાણૌદાિ કાહિ પિાાકાસહાિ કાોવાક યહાહે, મૌઊ માાિહિઊિ સે દોસાા વહાસહા (હિણિદિ ાાદિ મે), વ઼ા દોસાા વહાસહા (હિણિદિ ાાદિ સે) માાિહિઊિ મે઼

શ્રાશીષ શ્રણયિણ્હાા સાદિ઼

ળહઁ યાાિ પિાાશાા- ઘટણા શ્રછિ શ્રોહિ ળાોક ખ્યિ઼વ઼ાશં કએઊ ળાએ ાાોક કમા મુદા ાામેશ ઝાાઽ વ઼ઝિાાાાાીક કોણ ઝાાષા મે સમીક્ષા કએઊ ળાએ હિંદી મે કી મૈથિઊી મે । હમાા હિસાવે એકૈ ાાયણા કે દૂ- ાીણ ઝાાષા મે મૂઊ કહિ પ્ાાકાશાિ કાાવ સેહો યોાિ જોઊ। એહૂ પાા યેશ્રાણ દેઊ ળાએ।

શ્રપણ મંાવ઼્ય઼ે દાિોાાિઊિ઼સાાઙ઼વ઼દિહાાાગમાઊિ઼યોમ **પાા પઙાઉ**।

વ઼દિ઼હ સૂયના સંપન્ક શ્ન્વ઼ેષામ

હાનપ્:વ઼દિ઼હાયો઼નિ્નિવ઼ેસનગિાનિ઼હાનમ

સૂચના

૧

વ઼િદેહ દ્વ઼ાના ળે વ઼શિષાંક પ્નકાશતિ હોર છૈ ՈકՈ સંગે વ઼િદેહ શ્રોહન ઊપ્યક-સાહિત્ય઼પՈ શ્રપન યેશ્રાન સેહો કેંદ્Ոાતિ કՈાՈ ળનિકાપՈ વ઼િદેહક વ઼શિષાંક કોનો કાՈામવ઼સ નૈ પ્Ոકાશતિ ӈઽ સકઊ। એ નવ઼ વ઼યિાՈક મુખ્ય઼ વિંદુ એના શ્રછિ-

૧) હમ એકટા કોનો ઊપ્યક વ઼ા કઊકાՈપՈ એકાગ્Ո શ્રાઊયના કՈવ ળકՈ ӈાષા મૈથિઊિ શ્રથવ઼ા શ્રંગ્Ոેળી Ոહત। એ પોથીક પહિઊ Ոૂપ ઈ-વુક કેՈ Ոૂપમે એત શ્રા પ્Ոય઼ાસ Ոહત ળે એકՈ પ્Ոાટિ સેહો શ્રાવએ ળે કો પՈાસ્થિતિપિՈ નિ઼ӈՈ કՈાՈ।

૨) એ શ▯પ્યઊામે સુӈાષ યંદ્Ո ય઼ાદવ઼પՈ કેંદ્Ոાતિ "નાતિ નવ઼ઊ સુӈાષ યંદ્Ո ય઼ાદવ઼" એવં Ոાળદેવ઼ મંડઊપՈ કેંદ્Ոાતિ ▯ઢ઼ાળદો માનદાઊ▯ માતિહઊિ શ્રૌՈાતિՈ▯ પ્Ոકાશતિ ӈેઊ શ્રછિ। દુનૂ પોથીક ઊકાՈ્પમ ૩૧ દસિમ્વՈ ૨૦૨૨ કેં ૧૧૧મ સગՈ Ոાત દીપ ળՈય઼ મે કએઊ ગેઊ।

૩▯શ્રાગાઁક ઘોષણા ઊઊ <u>હતતપ:વ઼િદિહ઼ાયો઼નિ઼નિવ઼ેસતગિાતીનિ઼હતમ</u> દેખૈત Ոહિ।

<u>ઢ઼ાળદો માનદાઊ- માતિહઊિ શ્રૌՈાતિՈ (મૌિાતિહ ષપપઊેમેનત ૨ &૨૨)</u>

<u>નાતિ નવ઼ઊ સુӈાષ યન્દ્Ո ય઼ાદવ઼</u>

<u>નાતિ નવ઼ઊ સુӈાષ યન્દ્Ո ય઼ાદવ઼ (મથિઊિક્ષՈ)</u>

-ગળેન્દ્Ո ઠાકુՈ, સમ્પાદક વ઼િદેહ, ૈહાતસાપપ નો +૯૧૯૫૬૦૯૬૦૭૨૧ <u>હથથસ્ઠ:વ઼રવએહશ્રછશ્રોરમ</u> રષષમ ૨૨૨૯- ૫૪૭૨ વ઼રવએહશ્ર

૨

નતિ નવલ દનિશ કુમાર મશ્રિ

દનિશ કુમાર મશ્રિ, મથિલિાક વાઢકિ એક્સ્પર્ટ। મથિલિાક મોટા-મોટી સજા યારપર કતિાવ પ્રકાશતિ। ૩ત્તર વહિાર કી વ્યથા કથા □૧૯૮૯□□ કોસી-૩મ્ર કૈદ સે સળા-એ-મૌત તક □૧૯૯૨□ વંદનિી મહાનંદા (૧૯૯૪), વોયા પેડ બબૂલ કા- વાઢ નયિંત્રણ કા રહસ્ય □૨૦૦૦□□ વગાવત પર મજબૂર મથિલિા કી કમલા નદી □૨૦૦૪□□ જુતહિ નદી ઔર તકનીકી હાડ- ફૂંક □૨૦૦૫□□ દુઇ પાટન કે વીચ મેં- કોસી નદી કી કહાની □૨૦૦૬□ તથા વાગમતી કી સદ્ગતિ (૨૦૧૦)।

<u>પૂર્વપીઠકિા:</u>

દનિશ કુમાર મશ્રિક 'દુઇ પાટન કે વીચ મે' કોસી નદીક ઐતહિાસકિ આત્મકથા થીક, આ મથિલિાક આન યાર સજાક ઐતહિાસકિ આત્મકથા સેહો લખિને છથ જિેના વન્દનિી મહાનન્દા, વાગમતી કી સદ્ગતિ!, દુઇ પાટન કે વીચ મેં (કોસી નદી કી કહાની), ન ઘાટ ન ઘર, વગાવત પર મજબૂર મથિલિા કી કમલા નદી, જુતહિ નદી ઔર તકનીકી હાડ-ફૂંક, થહે ખામલા ઢવિર ાનદ શ્રીપલ ઓન છાલલસીિન છુરસે, જહુતાહજિાલાન- ષતોરયોડ। ગહેસત રવિર ાનદ નગાનિરનગિાૌતયિહ્યરાડત, ઢેડુગેસ ોડ તહે ખોસ એિમવાનકમેનતસ।

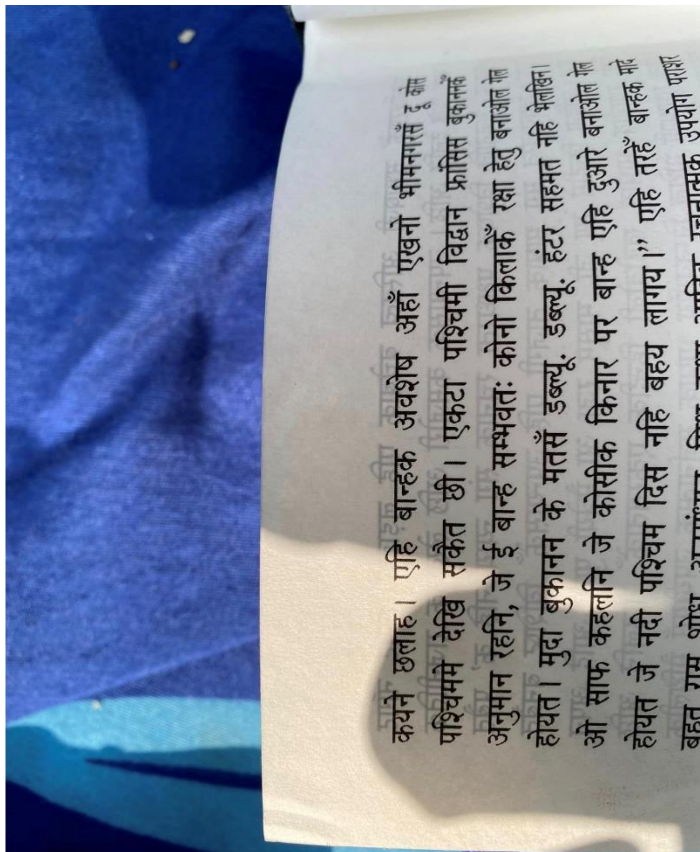
સાહતિ્ય અકાદેમીક મૈથલિી પરામર્શદાત્રી સમતિકિ સદસ્ય પંકળ ઝા પરાશર દ્વારા હનિકર પોથી સજાસઁ પૈરાક પૈરા મૈથલિી અનુવાદ કઽ અપના નામે ૩પન્યાસ છપવાઓલ ગેલ અછ,િ જકરા છદ્મ સમીક્ષક કમલાનન્દ ઝા એ યોર લેખકક રસિર્ચ કહૈ છથ!િ એતઽ સ્પષ્ટ કઽ દી જે ઇ યોર લેખક આ છદ્મ સમીક્ષક દુનૂ અલીગઢ મુસ્લમિ વશ્વિવદ્યિાલયક હનિ્દી વભિાગમે છથ।િ ઇ રસિર્ચ દનિશ કુમાર મશ્રિક થીક, જે આઇઆઇટી ખડગપુરસઁ સવિલિ ઇન્જીનયિરંગિ મે બી ટેક ૧૯૬૮મે આ સ્ટ્રક્ચરલ ઇન્જીનયિરંગિમે એમટેક ૧૯૭૦મે કેને છથ,િ આ ઓઇ રસિર્ચ લેલ ક્વાલફિાઇડ છથ।િ જખન કોનો વષિયમે નામાંકન નૈ હોઇ છૈ તખન લેક હાર-થાકઽ હનિ્દીમે નામાંકન લઇએ, નૈ તઁ કમલાનન્દ ઝા કૈં બુઝઽ મે આવ જિરૂરનહ જિે ઇ રસિર્ચ કોનો સવિલિ

इण्डोनेशियाक भऽ सकैत अछि, भऽ सकैए बुझल होइन्ह। हिन्दी आ मैथिली दुनूक स्क्रीनश□ट संलग्न अछि।

बात ई जे सभटा सूचना ...
पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

हिन्दी विभागमे प्रोफेसरक पद पर कार्यर



कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ [illegible] कोस
पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ
अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल
होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलाह।
ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल
होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मा

भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से कोई 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

दिनेश कुमार मिश्र मैथिलीक नै छथि मुदा मैथिलीक सभ बाटक कथा ओ लिखने छथि, हम सभ हुनकर प्रति कृतज्ञ छी आ हुनकर ऋणसँ मिथिलावासी कहियो उऋण नै भऽ सकता, मुदा मूल्यवानक पुरस्कार आ पाइ लोलुप लोकसँ कृतघ्नतो भेटत से श्रेय सदिखन भेल। ऐ लेखककेँ दस बरख बर्ख पहिने सेहो नागानन्द वियोगी उद्धारक भेटल छलखिन्ह जे लिखने रहथिन्ह जे ओ कविताक प्रभावित भऽ अनायासे अपन नयनामे दोसरक सामग्रीक योगदान लऽ रहल छथि, एहने सन। आब ऐ कमलानन्द झा क आश्रय लकलन्हि मुदा दुर्भाग्य!
दिनेश कुमार मिश्रक सभटा पोथी आब हुनकर अनुमतिसँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे:
<u>http://videha.co.in/pothi.htm</u>
एतऽ एकटा गप मोन पाड़ि दी जे जखन बिल गेट्सकेँ पूछल गेलन्हि जे की ओ एक्स बॉक्स भारतमे पाइरेसीक डरसँ देरीसँ आनि रहल छथि? तँ हुनकर उत्तर रहन्हि जे माइक्रोसॉफ्ट पाइरेसीक डरे कोनो उत्पाद देरीसँ नै उतारने अछि। से विदेह पेटारमे हम सभ ऐ तरहक रसिक रहितो एकरा आर समृद्ध करैत रहब, कारण समानान्तर बाटमे सड़ल माँछ द्वारे पोखरिक सभ माँछ नै सड़ए, एतुक्का माछ गोट-गोट कऽ सड़ल माँछ निकालैत रहल छथि, निकालैत रहता।

सिन्डिकेटेड समीक्षापत्र अनुमति प्राप्त।

विदेहक ३६३ म अंक दिनांक ०१ जनवरी २०२३ सँ प्रारम्भ नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

<u>http://videha.co.in/</u> विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई- पत्रिका ISSN २२२९-५४७X VIDEHA (since २००४) सँ।

Don't judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you

પ૭ાનન્ - ઢ઼ોવેન્ત ડ઼ોસિ ષનેવ઼ેનસોન

.

વ઼દિહ઼ઃ માતિહ઼િ૭િ ડ઼િતિમાતુ઼ે મોવ઼ેમેનત

- ગાળેન્દ્ન ઠાકુન, સમ્પાદક વ઼દિહ઼, ૌહ઼ાતસાપપ નો +૯૧૯૫૬૦૯૬૦૭૨૧ હ઼થથશ્ચ:વ઼રયપ૯હ઼શ્રછશ્રોરામ્ રષામ ૨૨૨૯- ૫૪૭શ્ર વ઼રયપ૯હ઼શ્ર

३

નિતિ નવ઼૭ સુશીલ

કમ૭ાનન્દ હ઼ાકેં હ઼મ કહિ છદ્મ સમીક્ષક કહ઼૭યિનિ?

કાનામ શ્રો છદ્મ સમીક્ષક છથિ।

શ્રો ૭િપ્પિ છથિ- "મૈથિ૭િ ૩પન્યાસ- યાત્નાક ૭ાગાગા સય વ઼ન્ષક વાદ મૈથિ૭િ શ્રન્તનાળાતીય વ઼િવાહ઼ક સપના, સંઘન્ષ શ્રા વ઼ઙિમ્વના પન ગાનમિાયુક્ત ૩પન્યાસ ૭િપ્પિવાક શ્રેય ગૌનીનાથકેં ળાસ્ત છનિ। "

તઁ કી કમ૭ાનન્દ હ઼ા સુશીલસઁ ૬ શ્રેય છીનિ ૯૭નિ? કી ૬ હુનકન વ઼નાહ઼્મણવાદી સંસ્કાનક શ્રહંકાન- ળે હ઼મ કકની યઢ઼ા સકૈ છહિ શ્રા કકની ૩તાનિ સકૈ છહિ- કેન પનાકાષ્ઠા થીક, શ્રાકિ હુનકન શ્રધ્યયનક શ્રભાવક પ્નમાણ?

યહ઼ શ્રહઁકેં ૭ડ યહ઼િ કમ૭ાનન્દ હ઼ા કેન સ્વ઼ાન્થી હુનયિઁસઁ દૂન, છ૭- છદ્મસઁ દૂન સુશીલક ળાદૂવ઼ા સાહ઼િત્યક નિશ્છ૭ હુનયિઁમે।

શ્રહઁક સ્વ઼ાગત શ્રછિ સુશીલક સાહ઼િત્યક હુનયિઁમે।

પ્રસ્તુત અછિ સુશીલક ' ગામવાળી' (૧૯૮૨) જે આવ ઉપલબ્ધ અછિ વિદેહ આર્કાઇવમે લિંક હાતપ્:વિદેહાયોનિપોતહિતમ પર।

પહિલ પાઁતીમે ઉપન્યાસ આરમ્ભસઁ પહિનિહયિ ' ગામવાળી' ઉપન્યાસક સમ્વન્ધમે સુશીલ લિખૈ છથિ-

" વિધિવા વિવાહ આ અન્તર્જાતીય વિવાહક સમર્થનમે। "

આ ઉપન્યાસ આરમ્ભ।

ગામવાળીક મ□ત્યુ આ તખને હમેળ, ગામવાળીક દાહ સંસ્કાર કે કરતૈ? વ્રાહ્મણ સમાજ કિ જાદવ સમાજ?

મૈથિળીક સમ્મિડીકેટેડ સમીક્ષાપર અન્તમિ પ્રહાર।

વિદેહક ૩૬૩ મ અંક દિનાંક ૦૧ જુરવરી ૨૦૨૩ સઁ પ્રારમ્ભ **નતિ નવલ સુશીલ**

હાતપ્:વિદેહાયોનિ વિદેહ: પ્રથમ મૈથિળી પાક્ષિક ઈ- પત્રિકા ૨૫૫ાા ૨૨૨૯-૫૪૭સ વિરચહશ્ર (સનિયે ૨૦૦૪) પર।

યો નોત ફુદગૌ ાયહ દાય વય તહે હારવેસત યુ ગોપ વુત વય તહે સેદસ તહાત યુ પલાનત - ઢ઼ોવેરત ડુસિ ષતેવેનસોન

.

વિદેહા: માતિહલિ ડ઼િતિરાતુરે મોવેમેનત

- ગજેન્દ્ર ઠાકુર, સમ્પાદક વિદેહ, ૈહાતસાપપ નો +૯૧૯૫૬૦૯૬૦૭૨૧ હથથશ્ર:વિરચહશ્રછશ્રોરમ્ ૨૫૫ાા ૨૨૨૯-૫૪૭સ વિરચહશ્ર

४

વ઼દિહ્ક "સાહિત્િય઼કિ જ્નાષ્ટાયાન વ઼શિષાંક"

વ઼દિહ "સાહિત્િય઼કિ જ્નાષ્ટાયાન વ઼શિષાંક" હેઉ નમિ્નઉપ્પિતિ વ઼ષિય઼પન શ્નાઉપ્પ
ફ઼-મેઉ દતિોનાિઉ઼સતાઙઙ્વ઼દિહાળગામાિઉ઼યોમ પન શ્નામંત્નાતિ શ્નછિ।
઼૧ સાહિત્િય઼, કઉા શ્ના સનકાની શ્નકાદમીઃ-
(ક) પુનસ્કાનક નાળણીતિ
(ખ) સનકાની શ્નકાદેમીમે પૈસવાક ગણ્ન-ઉકતાંત્નકિ વ઼ધાિન
(ગ) સત્તાગુટ શ્ના શ્નકાદમી કેન કાળ કનવાક તનીકા
(ઘ) સનકાની સત્તાક છદ્મ વ઼ગિોયમે ઉપળઉ તાત્કાઉકિ સમાણાંતન સત્તાક કાન્ય઼પદ્યતિ
(ઙ) શ્નકાદેમી પુનસ્કાનમે પાર શ્રૈક્ટનઃ મથિક વા ય઼થાન્થ
઼૨ વ઼્ય઼ક્તગિત સાહિત્િય઼ સંસ્થાણ શ્ના પુનસ્કાનક નાળણીતિ
઼૩ પ્નકાશન ળગતમે પસનઉ જ્નાષ્ટાયાન શ્ના ઉપ્પક
઼૪ મૈથઉિક છદ્મ ઉપ્પક સંગઠન શ્ના શ્નોકન પદાયકિાની સવહ્ક શ્નાયનામ
઼૫ સ્કૂઉ- ક□ઉળક મૈથઉિ વ઼ભાિગમે પસનઉ સાહિત્િય઼કિ જ્નાષ્ટાયાનક વ઼વિ઼ધિ ન઼ૂપ-
(ક) પાઠ્ય઼ક્નમ
(ખ) શ્નધ્ય઼ય઼ણ-શ્નધ્ય઼ાપણ
(ગ) ણયિુક્તિ
઼૬ સાહિત્િય઼કિ પત્નકાનતિા, નવિ઼ૂ, મંચ-માઉા-માર્ક શ્ના ઉકાન્પામક ખેઉ-તમાશા
઼૭ ઉપ્પક સવહ્ક ળણ્મ-મનામ શતાવ઼્દી કેન યુણાવ઼ , કૈઉેઙનવાદ શ્ના તકના પાછૂક નાળણીતિ
઼૮ દઉતિ એવ઼ં ઉપ્પકિા સવહ્ક સંગે ભેદ-ભાવ઼ શ્ના શ્નોકન શોષામક વ઼વિ઼ધિ તનીકા
઼૯ કોણો શ્નાન વ઼ષિય઼।

-ગળેન્દ્ર ઠાકુન, સમ્પાદક વ઼દિહ, ૈહાનસાપપ નો +८९१८५६०८६०७२१ <u>હથથશ્ઠ:વ઼२यएहश्रछश्रो़शm्</u> २षषाm २२२८- ५४७श व़२यएहश्र

યોન પંકળ પનાશન શ્રહી શ્રાન્ટકિઠક શ્રનુવાદ શ્રપના નામે છપવા ઠઠક, યોપ્પાસઁ પ્નદીપ વહિનીક વેટાસઁ શ્રનુવાદ કનવેઠક શ્રા શ્રપના નામે શ્રનુવાદક નૈ મૂઠ ઠપ્પક નૂપમે પહઠ ૮૬ મે છપવા ઠઠક।

૬નનેઠઠેયનુાઠસ, નહે મૌ શ્રુવઠયિ ષપહેનેસ, ાનદ થેયહનો-શ્રોઠનિયિસ યુગાઠાસ પ્ઠેઠઠેનેન (હનનપ઼ૌગાસેસુિયઠેદુડાયુઠનપ઼કેઠઠેન) થહે યાનેગોનય઼ ોડ નહે નિનેઠઠેયનુાઠ, ઠકિે વ઼ેનયઁનહનિગો ઠસે નહેસે દાય઼સ, સિ હગિહઠય઼ યોનનેસનેદ ાનદ ુપ ડોન ગનાવસ઼ નયઁગામુનન જામાન યોનનનાસનસ નિનેઠઠેયનુાઠસ ાસ ઠગાસિઠાનોનસ ૈહે ૈસિહેદ નો ઠગાસિઠાને ુનવિ઼નસાઠ વ઼ાઠુસ, ુસુાઠઠય઼ નિ નહે સેનવ઼યિ ોડ સનાને નિસનનુિનાનિસ, ૈનિહ નિનેઠઠેયનુાઠસ ાસ નિનેનપનેનેનસ, ૈહે મેનઠય઼ નિનેનપનેન નેશનસ, પુવઠયિ વ઼ેનનસ, ાનદ ોનહેન ાનનડિયનસ, દેપઠેય઼નિગા નહેનિ સપેયાઠિડિદ કનૌઠેદગો નો શપઠાનિ ોન નિનેનપનેન નહનિગાસ ડોન પુવઠયિસ (૧૯૮૭; ૧૯૯૨) હે નહુસ યઠામિસ નહાન નહેને સિ । સહડિન ડોમ મોદેનન નિનેઠઠેયનુાઠસ ાસ ઠગાસિઠાનોનસ ોડુ નવિ઼નસાઠ વ઼ાઠુસ ૈહે ઠગાનિમિાનેદ નહે નૌ મોદેનન સોયાઠિ ોનદેન નો પોસનમોદેનન નિનેઠઠેયનુાઠસ ાસ નિનેનપનેનેનસ ોડ સોયાઠિ મેનનિગાસ, ાનદ નહુસ નહેનડિસ । દેપોઠનિયિાઠડિાનાનિ ોડ નહે નોઠ ોડ નિનેઠઠેયનુાઠસ નિ સોયાઠિ ઠડિ ૨, હૌવ઼ેન, ૈનન નો માકે ાનોનહેન દસિનનિયનાનિ વેનૈન ડુનયનાનિાઠ નિનેઠઠેયનુાઠસ ૈહે સેનવ઼ે નો નેપનોદુયે ાનદ ઠગાનિમિાને નહે વ઼ાઠુસ ોડે શસિનનિગા સોયેનિસિ યોનનનાસનેદ નો યનાનિયિાઠ-ોપપોસનિાનિાઠ નિનેઠઠેયનુાઠસ ૈહે ોપપોસે નહે શસિનનિગા ોનદેન ષોમેનમિસ ોપપોસનિાનિાઠ નિનેઠઠેયનુાઠસ વ઼ોયિ નહેનિ યનાનિયિસિમસ નિ નહે નામે ોડ શસિનનિગા વ઼ાઠુસ ૈહયિહ નહેય઼ યઠામિ ાને વેનિગા વ઼ાઠાનેદ (િનનુનહ, નગિહનસ, નુઠ વય઼ ઠો, ફુસનયિ, ેનય઼) ાનદ સોમેનમિસ નિ નહે નામે ોડ વ઼ાઠુસોન દિાસૈહયિહ ાને સાદિ નો વે હગિહેન પોનેનનાઠિનાિસિ ોડ નહે શસિનનિગા ોનદેન (િપાનનયિપાનોનય઼ દેમોયનાયય઼, સોયાઠિસિમ, ગેનુનિ ટુાઠનિય઼ ડોન ૈમેન ાનદ વઠાયકસ, ેયોઠગાયિાઠ નેસનોનાનાનિ, ેનય઼) ઢુનયનાનિાઠ નિનેઠઠેયનુાઠસ ૈને ાનઠનિ નહે યઠાસસયિાઠ દિોઠગુસ, ૈહેનાસ નોદાય઼ નહેય઼

િનદ િો વે ડુનયતીિનાર્િસિ ોડ પાનતિસિ ોન નિતેનેસન ગનુપસ, ોન મેને િયહનયિાનિસ ૌહો દેવ઼સિ મોને ડડયિનિન મોનસ િો ોવનાનિ યેનનાનિ નદસ, ોન ૌહો ાપપઘય઼ િહેનિ સકઘઘસ િો નિયનોસે િયહનયિાઘ કનૌઘદગો નિ વ઼ાનુિસ સપેયાઘિડદ દોમાનિસ (મેદયિનિ, પહય઼સયિસ, હસિિોનય઼, ેનય઼) ૌનિહુન ટેસનાનિનગા િહે નદસ, ગોાઘસ, ોન વ઼ાઉસ િહાન િહેય઼ ાને સેનવ઼નિગ, ોન િહે સોયાઘ ુિઘિતય઼ ોન દસિુિઘિતય઼ ોડ િહેનિ ાયનવિનતિસિ ઢુનયતીિનાઘ નિતેઘઘેયનુાઘસ ાને િહુસ સેનવ઼ાનનસ ોડ શસિનિગ સોયતિસિ ૌહો ાને સપેયાઘસિનસ નિ ઘગાનિમાનતીિ ાનદ િયહનયિાઘ કનૌઘદગે, ૌહઘિ ોપપોસતિીિનાઘ નિતેઘઘેયનુાઘસ ાને યનાતિયિસ ૌહો સનનુગાઘ િો યનાતે ાવેનતેન સોયતિય઼ છનાતિયિાઘ નિતેઘઘેયનુાઘસ ૌને િનાદતિીિનાઘઘય઼ િહોસે ૌહો ુિઘિડદ િહેનિ સકઘઘસ ોડ સપોકનિગ ાનદ ૌનાતિનિગ િો દેનુનયે નિઉસિાયિસ ાનદ ાવુસેસ ોડ પૌન, ાનદ િો ડગિહન ડોન િનુહ, ઉસતાયિ, પનોગનેસસ, ાનદ ોનહેન ુનવિનસાઘ વ઼ાઉસ઼ ૨ન િહે ૌનદસ ોડ હોન- શુઘ ષાનનિ (૧૯૭૪: ૨૮૫), "િહે દુનય઼ ોડ િહે નિતેઘઘેયનુાઘ સિ િો દેનુનયે નિઉસિાયિ ૌહેનેવ઼ન તિ ોયયુનસ઼" ઢોન ષાનનિે, િહે દોમાનિ ોડ િહે યનાતિયિાઘ નિતેઘઘેયનુાઘ સિ િો ૌનાતિ ાનદ સપોક ૌનિહનિ િહે પુવઘયિ સપહેને, દેનુનયનિગ ોપપનેસસીિન ાનદ ડગિહનનિગ ડોન હુમાન ડનેદોમ ાનદ માનયપિાનીિ શ્રોન િહસિ મોદેઘ, ા યનાતિયિાઘ નિતેઘઘેયનુાઘ' સ િાસક સિ િો વોન ૌનિનેસસ, િો ાનાઘય઼ઝે, િો શપોસે, ાનદ િો યનાતિયિડ ોદિ નાનગો ોડ સોયાઘે વ઼ઘસ઼ થહે સપહેને ાનદ ાનેના ોડ િહે યનાતિયિાઘ઼પપોસતિીિનાઘ નિતેઘઘેયનુાઘ સિ િહે ૌનદ, ાનદ હસિ ોન હેન ડુનયતીિ સિ િો દેસયનાવિ ાનદ દેનુનયે નિઉસિાયિ ૌહેનેવ઼ન તિ માય઼ ોયયુ઼ન થહે મોદેનન યનાતિયિાઘ નિતેઘઘેયનુાઘ' સ ડઘદ ોડ ાયતીિ ોસ ોહાન હાવેનમાસ (૧૯૮૮) યાઘઘદ િહે પુવઘયિ સપહેને ોડ દેમોયનાતયિ દેવાતે, પોઘતિયિાઘ દાઘગુ, ાનદ િહે ૌનાતિનિગ ાનદ દસિયુસસીિન ોડ નૌસપાપેનસ, ઝુનનાઘસ, પામપહઘેતસ, ાનદ વોકસ઼ શ્રોડ યુનસે, નોત ાઘઘ નિતેઘઘેયનુાઘસ ૌને યનાતિયિાઘ ોન વય઼ ાનય઼ મોનસ પનોગનેસસવિ઼ શ્રોતિહ િહે નસિ ોડ મોદેનન સોયતિસિ, િહેને ોસ ા દવિ઼સીિન વેતૌન પહય઼સયિાઘ ાનદ

મેનનાઉ ઉાવોન, ાનદ નિતેઉઉેયનુાઉસ વેયામે નહોસૌ હો સપેયાિઉઙિદ નિ મેનનાઉ ઉાવોન, પનોદુયનિગ ાનદ દસિનનાવિનનિગ દિાસ ાનદ યુઉનુને, ગૌનિ઼ સોમે ોપપોસનિગ ાનદ સોમે ઉગાનિમિાનનિગ નહે સનાવઉસિહેદ ડોનમસ ોડ સોયેનિય઼ થહુસ, નિતેઉઉેયનુાઉસ ૌમે સપઉનિ નિનો નહોસે યનાનિયાિઉ ાનદ ોપપોસનિનિાઉ નિદવિ઼દુાઉસ ૌહો ોપપોસેદ નિળુસનાયિ ાનદ ોપપનેસસૌનિ, ાસ યોનનનાસનેદ નો ડુનયનાનિાઉ નિતેઉઉેયનુાઉસ ૌહો પનોદુયેદ નેયહનાયાિઉ ક્નૌઉદગે નહાન સેનવ઼ેદ નહે શસિનનિગ સોયેનિય ાનદ નહોસે પનોદુયેનસ ોડ દિાઉગાય ૌહો ઉગાનિમિાનેદ નહે ડોનમસ ોડ યઉાસસ, નાયે, ાનદ ગેનદેન દોમનિાનાનિ ાનદ નિટુાઉનિય઼ નિ મોદેનન સોયેનિસિ઼ ૨ન નહે ડોઉઉૌનિગ નેડઉેયનાનિસ, ૨ૌનન નો દસિયુસસ સોમે યહાઉઉેનગેસ ડોનમ પોસનમોદેનન નહોનય઼ નો નહે યઉાસસયાિઉ યોનયેપનાનિસ ોડ નહે યનાનિયાિઉ-ોપપોસનિનિાઉ નિતેઉઉેયનુાઉ ાનદ સોમે ોડ નહે ૌાયસ નહાન નૌ નેયહનોઉગોસિ ાનદ નૌ પુવઉયિ સપહેનેસ ોડડેન નૌ પોસસવિઉિનિસિ ડોન દેમોયનાનયિ દસિયુસસૌનિ ાનદ નિતેનવ઼ેનનાનિ, ૌહયિહ યાઉઉ ડોન । નેદેડનિનિનિ ોડ નહે યનાનિયાિઉ નિતેઉઉેયનુાઉ઼ છોનસેટુેનનઉય઼, ૨ ૌઉિઉ દસિયુસસ સોમે યહાનગેસ નિ નહે યોનયેપન ોડ નહે પુવઉયિ સપહેને ાનદ હૌ નૌ નેયહનોઉગોસિ ાનદ નૌ સપહેનેસ ોડ પુવઉયિ દેવાને ાનદ યોનડઉયિન સુગગેસન સોમે નૌ પોસસવિઉિનિસિ ડોન નેદેડનિનિગ નિતેઉઉેયનુાઉસ નિ નહે પનેસેનને ના઼ થહે શ્રુવઉયિ ષપહેને ાનદ નહે ૨નનેઉઉેયનુાઉ યેમોયનાયય઼ નિવ઼ોઉવ઼ેસ । સેપાનાનાનિ ોડ પૌનસ ાનદ પોપુઉાન પાનનયિપિાનાનિ નિ ગોવ઼ેનનમેનનાઉ ાડડાનિસ઼ યુનાનિગ નહે ના ોડ નહે એનઉગિહોનમેનન ાનદ ૧૮નહ યેનનુનય઼ દેમોયનાનયિ નેવ઼ોઉુનાનિસ, પુવઉયિ સપહેનેસ મેનગેદ ૌહેને નિદવિ઼દુાઉસ યુાઉદ દસિયુસસ ાનદ દેવાને સિસુેસ ોડ યોમમોન યોનયેનન (સે હાવેનમાસ ૧૯૮૯) થહે પુવઉયિ ાાસ ાઉસો । સનિ ૌહેને યનાનિયિસિમ ોડ નહે સનાને ાનદ શસિનનિગ સોયેનિય યુાઉદ યનિયુઉાને થહે નિસનનિુનાનિસ ાનદ સપાયેસ ોડ નહે ૧૮નહ યેનનુનય઼ દેમોયનાનયિ પુવઉયિ સપહેને નિયઉુદેદ નૌસપાપેનસ, ળુનનાઉસ, ાનદ । પનેસસ નિદેપેનદેનન ડોનમ સનાને ૌનિનસહપિ ાનદ યોનનનોઉ, યોડડે હુસેસ ૌહેને નિદવિ઼દુાઉસ નોદ

નૌસપાપેન્સ ાનદ નગાગેદ નિ પોઉતિયિાઉ દસિયુસસીનિ, ઉતિનાનય સાઉેનસ ૌહેને દિાસ ાનદ યનાતિયિસિમ ૌને પનોદુયેદ, ાનદ પુવઉયિ ાસસેમવઉેસિ ૌહયિહ ૌને તહે સતિસ ોડ પુવઉયિ ોનાતોનય ાનદ દેવાતે જોુનગોસિ સોયોતિસિ સપઉતિ, ોડ યોુનસે, ાયનોસસ યઉાસસ ઉનિસ ાનદ દડિડેનેનત યઉાસસ ડાયતોનિસ પનોદુયેદ દડિડેનેનત પોઉતિયિાઉ પાનતસિ, ોનગાનડિાતોનિસ, ાનદ દિીઉગોસિ ૌતિહ ાયહ પાનતય ાતતનાયતનિગ સપેયાઉિસિતસ નિ ૌનદસ ાનદ ોનાતિનિગ કનૌન ાસ નિતેઉઉેયતુાઉસ શ્રોપપનેસસેદ ગનોુપસ ાઉસો દેવેઉોપેદ તહેનિ ૌન નિસુનગેનત નિતેઉઉેયતુાઉસ, નાનગાનિગ ડનોમ નેપનેસેનતાતવિસ ોડ ૌનકનિગ યઉાસસ ોનગાનડિાતોનિસ, તો ૌનેન ઉકિ માનય શ્રોઉઉસતોનેયનાડત ડગિહતનિગ ડોન ૌમેન' સ નગિહતસ, તો ઉાદેનસ ોડ ોપપનેસસેદ ગનોુપસ ોડ યોઉેન, તહનાયિતિય, સેશુાઉ પનેડેનેનયે, ાનદ સો ોન ૨નસુનગેનત નિતેઉઉેયતુાઉસ ાતતાયકેદ ોપપનેસસીનિ ાનદ પનોમોતેદ ાયતોનિ તહાત ુોઉદ ાદદનેસસ તહે યુાસેસ ોડ ોપપનેસસીનિ, ઉનિકનિગ તહેોુગહત તો ાયતોનિ, તહેોનય તો પનાયતયિે થહુસ, દુનનિગ તહે ૧૯૬૦તહ યેનતુનય, તહે ૌનકનિગ યઉાસસ દેવેઉોપેદ તિસ ૌન ોપપોસતિોનિાઉ પુવઉયિ સપહેનેસ નિુ ણીનિ હાઉઉસ, પાનતય યેઉઉસ ાનદ મેતનિગ પઉાયેસ, સાઉોનસ, ાનદ નિસતતિુતોનિસ ોડ ૌનકનિગ યઉાસસ યુઉતુને શ્રોતિહ તહે નાસિ ોડ ષોયાઉિ યેમોયનાયય ાનદ ોતહેન ૌનકનિગ યઉાસસ મોવેમેનતસ નિ એુનોપે ાનદ તહે ૩નતિેદ ષતાતેસ, ાન ાઉતેનનાતવિે પનેસસ, નાદયિાઉ યુઉતુનાઉ ોનગાનડિાતોનિસ, ાનદ તહે સપાયેસ ોડ તહે સતનાકિે, સતિ-નિ, ાનદ પોઉતિયિાઉ નિસુનનેયતોનિે મેનગેદ ાસ સતિસ ોડ ાન ોપપોસતિોનિાઉ પુવઉયિ સપહેને ૨નતેઉઉેયતુાઉસ નિ મોદેનન સોયોતિસિ ૌને તહુસ યોનડઉયિતેદ વેનિગાસ ૌતિહ યોનતનાદયિતોનય સોયાઉિ ડુનયતોનિસ થહે યઉાસસયિાઉ યનાતિયિાઉ નિતેઉઉેયતુાઉ -- નેપનેસેનતેદ વય ડગિુનેસ ઉકિ તહે ઢનેનયહ એનઉગિહતેનમેનત દિીઉગોુસ, થહોમાસ શ્નાનિ, માનય શ્રોઉઉસતોનેયનાડત, ાનદ ઉાતેન ડગિુનેસ ઉકિ હેનિ, માનશ, હુગો, યનેયડુસ, વુ નોસિ, ષાનતને, ાનદ માનયુસે -- ૌસ તો સપોાક ુોત ાગાનિસત નિળુસતાયિ ાનદ ોપપનેસસીનિ

।નદ નો ડગિહ્ન ડોન ળુસનયિ, ેટ્ટાણનિય઼, ।નદ નહે ોનહેન વ઼ાણુેસ ોડ નહે
એનણગિહ્નોનમેનન઼ ૠનદેદ, નહે એનણગિહ્નોનમેનન નિસેણડ ેપપેસેનનસ ોનો ોડ
નહે મોસન સુયયેસસસડુણ દસિયુોનસેસ ોડ નહે યનનિયિાણ નિદવિ઼દિ઼ાણ, ।
દસિયુોનસે ।નદ મોવ઼ેમેનન ોહયિહ ।સસગિનસ નિનેણણેયનુાણસ ક઼ેય઼ સોયાિણ
ડુનયનાિનિસ઼ શ્નદ યે઼ન યોનસેનવ઼ાનવિ઼ નિનેણણેયનુાણસ ।નનાયક઼ેદ નહે
એનણગિહ્નોનમેનન ।નદ નિસ પનોદગિય઼ નહે ઢોનેયહ ઢ઼ેવ઼ોણુનાનિ ।નદ પનોદુયેદ
દસિયુોનસેસ નહાન ણગનિમિાનેદ ેવેનય઼ યોનયેવિ઼ાવણ ડોનમ ોડ ોપપેસસાનિ
ડોનમ યણાસસ નો નાયે, ગેનદેન, ।નદ નહ્નયિ દોમનિાનાનિ઼ શ્રગાાનિસન નહે
એ़ाा ।નદ ષાનનને' સ મોદેણ ોડ નહે યોમમનિનેદ નિનેણણેયનુાણ ોહો સિ નગાગેદ
ડોન ડનેદોમ (નગાગે), મયિહેણ ઢ઼ોયુાણન યોમપણાનિદ નહાન ષાનનને
ેપપેસેનનેદ ।ન દિાણ ોડ નહે ુનવિ઼નસાણ નિનેણણેયનુાણ ોહો ડુગાહ્ન
ડોનુ નવિ઼નસાણ વ઼ાણુેસ સુયહ ।સ નનુનહ ।નદ ડનેદોમ, ।નદ ।સસુમેદ નહે નાસક઼
ોડ સપોાક઼નિગા ડોન ઼ુમાનનિય઼ (૧૯૭૭) શ્રગાાનિસન સુયહ ।નો શાણનેદ ।નદ
નિ હસિ વ઼ાૈ શાગગેનાનેદ યોનયેપનાનિ, ઢ઼ોયુાણન મણિનિાનેદ ડોન। યોનયેપનાનિ
ોડ નહે સપેયડિયિ નિનેણણેયનુાણ ોહો નિનેનવ઼ેનેદ ોન નહે સદિે ોડ નહે ોપપેસસેદ
નિ સપેયડિયિ સિસુેસ, ણોન યણામિનિગા નો સપોાક઼ ડોન નહે ોપપેસસેદ, વ઼ુન
નો નિનેનવ઼ેને ।સ ।ન નિનેણણેયનુાણ નિ સપેયડિયિ સિસુેસ ।નદ દેવાનેસ઼
ઢ઼ોયુાણન' સ યોનયેપનાનિ ોડ નહે સપેયડિયિ નિનેણણેયનુાણ હાસ વેન
।યયોમપાનેદિ ોનિહનિ। ણૌ પોસનમોદેનન પોણનિયિસ ોનિહ। નુનન નાૈનદ ણૌ
સોયાિણ મોવ઼ેમેનનસ ।સ નહે દોમાનિ ોડ યોનનેમપોનાનય઼ પોણનિયિસ (ડ઼ાયણુ
।નદ મુોડડે ૧૯૮૫), ેપણાયનિગા નહે સનાને ।નદ નહે ણાનાનાિણ ેાણમ ોડ
પાનનય઼ પોણનિયિસ઼ ઢોન। પોસનમોદેનન પોણનિયિસ, પાૈન સિ દડિડુસે ।નદ
ણેયાણ ।નદ ણોન મેેણય઼ નો વે ડુેનદ નિ માયનોનિસનનુનાિનિસ ણક઼િ નહે
ોનક઼પણાયે, નહે સનાને, ોન પાનનાનિયહ્ય઼ માયનોપોણનિયિસ નહાન ગોસ
।ડોન વગિ નિસનનુનાિનિસ ણક઼િ નહે સનાને ોન યાપનિાણ સિ નો વે ેપણાયેદ
વય઼ મયિનોપોણનિયિસ, ોનિહ સપેયડિયિ નિનેણણેયનુાણસ નિનેનવ઼ેનનિગા નિ
સપહેેસ ણક઼િ નહેુ નવિ઼નસનિય઼, નહે પનાસિોન, નહે હોસપનિાણ, ોન ડોન નહે

ાગિહ્તાસ ોડ સપેયડિયિ ોપપોસસેદ ગાુપસ ઊકિ સેશુાઊ ોા ોત્હનાયિ મનિોાતિોસિ઼ ઘઊેવાઊ ાનદ નાતોિનાઊ પોઊતિયિસ ાનદ તહેોાેસિ ાે ાેળેયતેદ નિ ડાવ઼ોા ોડ મોાે ઊેયાઊ મયિાો પોઊતિયિસ, ાનદ તહે દસિયુોાસે ાનદ ડુનયતોિન ોડ તહે નિતેઊઊેયતુાઊસ સિ સેન ાસ મોાે સપેયડિયિ, પાોવ઼સિોિનાઊ, ાનદ મોદેસત તહાન નિ મોદોન તહેોાય઼ ાનદ પોઊતિયિસ, સુવોાદનિાતે તો ઊેયાઊ સતુાગાગાઊેસ ાાતહો તહાન મોાે ામવતિુોસિ પાોળેયાસ ોડે માનયપિાતોિન ાનદ સોયાિઊ તાાનસડોામાતોિન઼ ર્ન મય઼ વ઼ોિ, સુયહ । વનિાાય઼ દસિતનિયતોિન વેતૌન માયાો ાનદ મયિાો તહેોાય઼ ાનદ પોઊતિયિસ સિ પાોવઊેમાતયિાઊ, ાસ ાે ાવસોઊતસિત યોમમતિમેનતસ તો તિહો મોદોન ોા પોસતમોદોન તહેોાય઼ તુોત યોાત (ાેસત ાનદ પ્ેઊઊેા ૧૯૮૯ ાનદ ૧૯૮૭) ૩સનિગ તહે શામપઊ ોડ તહે વ઼ેનતસ ોડ ૧૯૮૮ તહાત સૌ તહે યોઊઊાપસે ોડ યોમમુનસિમ, ડોા નિસતાનયે, તિ સિ યઊોા તહાત તહે પોપુઊોા ોડેનસવ઼િસ ાગાનિસત ોપપોસસવ઼િ યોમમુનસિત પૌા યોમવનિદ મયિાો ાનદ માયાોપોઊતિયિસ, મોવ઼નિગ ડોોમ ઊેયાઊ ાનદ સપેયડિયિ સતુાગાગાઊેસ ાોતેદ નિ ુતોિન હ્ાઊઊસ, ુનવ઼િાસતિોસિ, યહુાયહેસ, ાનદ સમાઊઊ ગાુપસ તો માસસ દેમોનસતાાતોિનસ ડોાયનિગ દેમોયાાતયિ ાેડોામસ ાનદે વ઼ેન યઊાસસયિાઊ માસસ નિસુાેયતોિન ામિનિગ ાત ાન ાવ઼ોતહ્ોિ ોડ તહે શસિતનિગ ોાદો, ાસ નિ ઢોમાનાિ ર્ન તહેસે સતુાગાગાઊેસ, નિતેઊઊેયતુાઊસ પઊાયેદ । વ઼ાોતિય઼ ોડ ાોઊેસ ાનદ દેપઊોયેદ । દવ઼િાસતિય઼ ોડ દસિયુોાસેસ, ાાનગાનિગ ડોોમ તહે ઊેયાઊ ાનદ સપેયડિયિ તો તહે નાતોિનાઊ ાનદ ગોેાાઊ઼ થહુસ, હૈેાોસ ર્ોિઊદ ામગુ તહાત પોસતમોદોન તહેોાય઼ યોનતાનિસ મિપોાતાનત યાાતિયિસિમ ોડ સોમે ોડ તહે ઊિઊસોિનસ ાનદ દિોઊગોસિ ોડ તહે તાાદતિોિનાઊ મોદોન નિતેઊઊેયતુાઊ, તિ ગોસ તો ડાા નિ ાેળેયતનિગ તહે યઊાસસયિાઊ ાોઊે ોડ તહે યાાતિયિાઊ નિતેઊઊેયતુાઊ઼ મોાોવ઼ો, ર સહ્ાઊઊ સુગાગેસત તહાત સોમે ોડ તહે મોદોન યોનયેપતોિન ોડ તહે યાાતિયિાઊ ાનદ ોપપોસતિોિનાઊ નિતેઊઊેયતુાઊ ાેમાનિસ ુસેડુઊ઼ ર્ોિઊદ, નિ ડાયત, ાેળેયત તહે પાાતયિુઊામુનવ઼િાસાઊ નિતેઊઊેયતુાઊ દયિહ્ેતોમય઼ નિ ડાવ઼ોા ોડ દેવ઼ેઊોપનિગ । નોામાતવ઼િ યોનયેપત

ોડ તહે યનાિતિયાિ પુવઉયિ નિતેઉઉેયતુાિ થહે પુવઉયિ નિતેઉઉેયતુાિ - - ોન તહસિ યોનયેપતોિન -- નિતેનવેનેસ નિ તહે પુવઉયિ સપહેને, ડગિહતસ ાગાનિસત ઉેસિ, ોપપનેસસોિન, ાનદ નિળુસતયિ ાનદ ડગિહતસ ડોન નગિહતસ, ડનેદોમ, ાનદ દેમોયનાયય । ઉા ષાનતને' સ યોમમતિતેદ નિતેઉઉેયતુાિ જુત । દેમોયનાતયિ પુવઉયિ નિતેઉઉેયતુાિ ોન મય યોનયેપતોિન દોસ નોત સપોક ડોન ોતહેનસ, દોસ નોત ાવનોગાતે ોન મોનોપોઉઇ તહે ડુનયતોિન ોડ સપોકનિગ તહે તનુતહ, વુત સમિપઉય પાનતયિપિાતેસ નિ દસિયુસસોિન ાનદ દેવાતે, દેડેનદનિગ સપેયડિયિ દિાસ, વાઉુેસ, ોન નોનમસ ોન પનાિયપિેઉ તહાત માય વે પાનતયિુઉાન ોનુ નવિનસાિ જુત ડિુ નવિનસાિ, ઉકિ હુમાન નગિહતસ, તહેય ાને યોનતેસતુાિ, પનોવસિોિનાિ, નોનમાતવિ ાનદ ગેનેનાિ ાનદ નોત વાઉદિ ડોન ાઉઉ તમિે સનદેદ, નગિહતસ ાને પનોદુયતસ ોડ સોયાિઉ સતનુગાગેઉસ ાનદ ાને તહુસ સોયાિઉ યોનસતનુયતસ ાનદ નોત નિનાતે ોન નાતુનાઉે નતતોિસિ - - ાસ તહે યઉાસસયાિઉ નાતુનાિ નગિહતસ તહેોનસિતસ ોુઉદ હાવે તિ જુત નગિહતસ યાન વે ગેનેનાઉડિદ, ેશતેનદેદ, ાનદ યાન તાકેુ નવિનસાિ ડોનમસ -- ાસોતહ, ડોન નિસતાનયે, । ઝમ યહાનતેન ોડ હુમાન નગિહતસ તહાત હોઉદસ તહાત યેનતાનિ નગિહતસ ાને વાઉદિ ડોન ાઉઉ નિદવિદિુાઉસ -- ાત ઉેાસત નિ તહસિ ોાનઉદ ાત તહસિ પોનિત નિ તમિે છોનસેટુનતઉય, ોને દોસ નોત નેદ ાઉઉ ોડ તહે વાગાગાગે ોડ તહેુ નવિનસાિ નિતેઉઉેયતુાિ તો માનિતાનિ । યોનયેપતોિન ોડ । પુવઉયિ ોન દેમોયનાતયિ નિતેઉઉેયતુાિ નિ તહે પનેસેનત ના સનતેઉઉેયતુાિસ માય ોઉઉ સેક તો ોયયુપય । હગિહેન ગાનુનદ તહાન પાનતયિુઉાનસિતયિ નિતેનેસતસ, । યોમમોન ગાનુનદ સેકનિગ પુવઉયિ નિતેનેસતસ ાનદ ગોોદસ જુત નિતેઉઉેયતુાઉસ સહોુઉદ નોત ાવનોગાતે તહે નગિહત તો સપોક ડોન ાઉઉ ાનદ સહોુઉદ વે ોાને તહાત તહેય ાને સપોકનિગ ડનોમ । દેતોનમનિાતે પોસતિોિન ોતહ તિસ ોોન વાસિેસ ાનદ ઉમિતિાતોિનસ મોનોવેન, નિતેઉઉેયતુાઉસ સહોુઉદ ઉાનન તો ગેતુોત ોડ તહેમિ પાનતયિુઉાન ડનામે ોડ નેડેનેનયે ડોન મોને ગેનેનાઉોનેસ, ાસોઉઉ ાસ તો વે ાવઉે તો તાકે તહે પોસતિોિન ોડ તહેોતહેન, તો મપાતહઇોતહ મોને માનગાનિાિ

ાનદ ેપપનેસસેદ ગાનુપસ, નો ઊમાન ઙોમ નહેમ, ાનદ નો સુપપોાન નહેમિ સનાુગાગાઊેસ થો પોપેનાુઊઊય યાનતિયિઙિોનિસેઊઙ, નો દેવ઼ેઊપ નહે યાપાયતિય઼ ઙોા સેઊઙ- નેઙઊેયનાીનિ ાનદ યાનતિટ્ટિ -- ાસૌાઊઊ ાસ સેઊઙેશપનેસસીનિ -- સિ નહુસ પામાન ોઙ નહે દુનય઼ ોઙ નહે દેમોયમાનયિ નિનેઊઊેયનાુઊ઼ મ્ૌ થેયહનોઊેગોસિ, મ્ૌ શુવઊયિ ષપહેનેસ, ાનદ મ્ૌ રનનેઊઊેયનાુઊસ રન નહે ઙોઊઊીૌનિગા દસિયુસસીનિ, ર ાૈઊઊ ામગુ નહાન ાઊનહુેગાહ નહે પુવઊયિ નિનેઊઊેયનાુઊ સહુેઊદ ાસસુમે નૌ ઙુનયનાીનિસ ાનદ ાયનવિ઼ેતિસિ નોદાય઼, નહે યાનતિયિાઊ યાપાયતિસિ ાનદ વ઼સીનિ ોઙ નહે યઊાસસયિાઊ યાનતિયિાઊ નિનેઊઊેયનાુઊ ામે સનાઊઊ નેઊવ઼ાનાન, નહુસ ર સુગાગેસન વુઊિદનિગાોન મોદેઊસ ોઙ નહે પાસન, માનહેમ નહાન સમિપઊય઼ નહનીૌનિગા નહેમ ોવ઼મ, ાસ નિ સોમે નય઼પેસ ોઙ પોસનમોદેમન નહોમય઼ રૌાનન નો સુગાગેસન નહાન નેનહનિકનિગા નહે નિનેઊઊેયનાુઊ ાનદ નહે પુવઊયિ સપહેને નોદાય઼ નેટુપિસ નેનહનિકનિગા નહે નેઊાનીાનિસહપિ વેનૌન નિનેઊઊેયનાુઊસ ાનદ નેયહનોઊેગાય઼ રન ા યેમનાનિ સેનસે, નહેનૌસ નો મિપોમનાનન યોનનેયનાીનિ વેનૌન નહે યઊાસસયિાઊ નિનેઊઊેયનાુઊ ાનદ નેયહનોઊેગાય઼ થો વે સુમે, નિનેઊઊેયનાુઊસ --ે સપેયાિઊઊય઼ સયોનિનઙિયિ સયહેઊામસ ઊકિ ઙ઼ેનામદો દે વ઼નિયાિ, ઘાઊઊિ, ોમ યાનૌનિ -- દેપઊેય઼ેદ નેયહનોઊેગોસિ ાનદે નનપિ ગાનુપસ ઊકિ નહે મનાનતિસિહ ઢ઼ેયાઊ ષોયોનિય઼ ાૈમે યોનયેમનેદૌનિહ નેયહનોઊેગોસિ ાનદ ાૈમે નિદેદ ોઙોન નિવ઼ેનનોમસ નહેમસેઊવ઼ેસ઼ ષોમે નિનેઊઊેયનાુઊસ ુસેદ પમાનિનનિગા પમેસસેસ ાનદ ાૈમે નહેમસેઊવ઼ેસ પમાનિનેમસ ાનદ માનય઼, નહુેગાહ નોન ાઊઊ, ોઙ નહે માળોમ નિનેઊઊેયનાુઊસ ોઙ નહે રઙનહ યેનનામય઼ પમોવાવઊયુ સેદ ા નય઼પૌમાનિમ, નહુેગાહ ર પેમસોનાઊઊય઼ કનૌાોઙ નો માળોમ સનાુદેસિ ોઙ નહે નેઊાનીાનિસહપિ વેનૌન નહે નય઼પૌમાનિમ ાનદ નિનેઊઊેયનાુઊસ઼ ાૈન ા યઊાસસયિાઊ નિનેઊઊેયનાુઊ દદિ નોન હાવ઼ે નો નિનમાનિસયિાઊઊય઼ દેપઊેય઼ ાનય઼ સપેયાિઙિયિ નેયહનોઊેગાય઼ ાનદ નહેનૌસ નહુસ નો નિનમિાને યોનનેયનાીનિ વેનૌન નિનેઊઊેયનાુઊસ ાનદ નેયહનોઊેગાય઼ ર નૌાાનન નો ામગુ નહાન નિ નહે યોનનેમપોમામય઼ હગિહ-નેયહ સોયોનિસિ નહેને સિ મેમગાનિગા ા સગિનઙિયિાનને શપાનસીનિ ાનદ નેદેઙનિનિતીનિ ોઙ નહે પુવઊયિ

સપહેગે ।નદ તહાત તહેસે દેવ઼ેઊપમેનતસ, ચોનનેચતેદ પનમિાનઊિય઼ ાેતિહ મેદાિ ।નદ ચોમપુતેન તેચહનોઊોગિેસ, નેમિા । નેટોનમુઊાતીોન ।નદ શપાનસીોન ોડ તહે ચોનચેપત ોડ યનાતિયિાઊ ોન ચોમમાતિતેદ િનતેઊઊેચતુાઊ, ।સ ાેઊઊ ।સ । નેદેડિનિતીોન ોડ તહે પુવઊિયિ િનતેઊઊેચતુાઊ ષાનઊિન િન તહે ચેનતુનય઼, હોહન ચીૈયે નવ઼સિાગેદ દેવ઼ેઊપનિગ । નૌસપાપેન તહાતુાેઊદ ચોનવ઼ેય઼ "તહોુગહત નૌસ, " વનાિગાિગા ।ઊઊ તહે ઊાતેસત િદાસ િન સયેનિયે, તેચહનોઊોગાય, ।નદ તહે િનતેઊઊેચતુાઊ ાેનાઊદ તો । ગેનેનાઊ પુવઊિયિ, ાેહિયહ ુાેઊદ ।ઊસો પનોમોતે દેમોચનાચય઼ (સે તહે દસિયુસસીોન ોડ તહસિ પનોઝેચત િન છડતિેોમ ૧૯૮૨: ૧૦૪૭૭) ૨ન ।દદિતીોન, જેનાતોઊત જનેચહત ।નદ શ્રીાઊતેન જેનળામનિ (૧૯૬૯) સાૈ તહે નેવ઼ોઉતીોિાનય઼ પોતેનતાિઊ ોડ નૌ તેચહનોઊોગિેસ ઊકિ ડઊિમ ।નદ નાદાિ ।નદુ નગેદ નાદયિાઊ િનતેઊઊેચતુાઊસ તો સેઈ તહેસે નૌ ડોનયેસ ોડ પનોદુચતીોન, તો "નેડુનચતીોન" તહેમ, ।નદ તો તુનન તહેમ િનતો િનસતુનમેનતસ તો દેમોચનાતિઈ ।નદ નેવ઼ોઉતીોિઈ સોચેતિય઼ ષાનતને તોાેનકેદ ોન નાદાિ ।નદ તેઊવ઼સીોન સેનેસિ ।નદ િનસસિતેદ તહાત "ચોમમાતિતેદ ાેનાતિનસ મુસત ગેત િનતો તહેસે નેઊાય઼ સતાતીોન ।નતસ ોડ તહે મોવ઼સિ ।નદ નાદાિ" (૧૯૭૪: ૧૭૭; ડોન દસિયુસસીોન ોડ હસિ વ઼ેસ તેમપસ મોદેનનેસ નાદાિ સેનેસિ, સે ૧૭૭-૧૮૦) શુનેવ઼ુિસઊય઼, નાદાિ, તેઊવ઼સીોન, ।નદ તહે ોતહેન ઊેચતનોનચિ મેદાિ ોડ ચોમમુનચિાતીોન તેનદેદ તો વે ચઊોસેદ તો ચનાતિયિાઊ ।નદોપપોસતિીોનાઊ વ઼ોચિેસ વોતહ િન સય઼સતેમસ ચોનતનોઊઊેદ વય઼ તહે સતાતે ।નદ િન પનાવ઼ાતે ચોનપોનાતીોનસ઼ શુવઊિયિ ।યચેસસ ।નદ ઊૌ પૌન તેઊવ઼સીોન, ।નદ ચોમમુનતિય઼ ।નદ ગુેનાઊઊા નાદાિ, હૌવ઼ેન, ોપેન તહેસે તેચહનોઊોગિેસ તો િનતેનવ઼ેનતીોન ।નદુ સે વય઼ ચનાતિયિાઊ િનતેઊઊેચતુાઊસ઼ ઢોન સોમે યોનસ નૌ, ૨ હાવ઼ે વેન ુનગાિગા પનોગનેસસવિ઼ેસ તો માકેુ સે ોડ નૌ ચોમમુનચિાતીોનસ વનોાદચાસત મેદાિ (ખેઊઊેન ૧૯૭૯; ૧૯૮૫; ૧૯૯૦; ૧૯૯૨) ।નદ હાવ઼ે િન ડાચત વેન િનવ઼ોઊવ઼ેદ િન । પુવઊિયિ ।યચેસસ તેઊવ઼સીોન પનોગનામ િન શુસતિન, થેશાસ સનિયે ૧૯૭૮ ાેહિયહ હાસ પનોદુચેદ ોવ઼ેન ૬૦૦ પનોગનામસ ।નદ ોન તહે ઘોનગ ષતોનેય઼ શ્રીાનદ ડોન પુવઊિયિ ।ડડાિસ

ટેછ્વ઼સીિ઼ મય઼ ।ુગુમેનત ીાસ ટહાત ૃાદી, ટેછ્વ઼સીિ઼, ।નદ ોટહેૃ છ્યતાોનયિ મોદેસ ોડ યોમમુનયિાટીિ ીૃ યૃાટનિગ નૌ પુવછયિ સપહેૃેસ ોડ દેવાટે, દસિયુસસીિ, ।નદ નિડોૃમાટીિ ।નદ ટહાત નિટેછછ્યતુાછસ ીહી ીાનટેદ ટો ગાગે ટહે પુવછયિ, ટો વૌહેૃ ટહે પોપછ્ીૃ ।ટ, ।નદ ીહો ટહુસ ીાનટેદ ટો નિટેૃવ઼ેને નિ ટહે પુવછયિ ।ડડાનિસ ોડ ટહેનિ સોયેટિય઼ સહોુછદ માકુ સે ોડ ટહેસે નૌ મેદી ટેયહનોછોગેસિ ।નદ નિસટાુટીિનસ, ।નદ દેવ઼ેછોપ નૌ યોમમુનયિાટીિ પોછટિયિસ ।નદ નૌ મેદી પૃોળેયટસ઼ ૨ન ડાયટ, ોને યાન ।ુગુ ટહાત ટહે વ઼યિટોૃય઼ ોડ ઢ઼ાગાન ।નદ ટહે ઢ઼ગિહટ નિ ટહે ૩નટિેદ ષટાટેસ નિ ૧૯૮૦ ીાસ ૃેછાટેદ ટો ટહે ઢ઼ગિહટ' સ ડડેયટવિ઼ મોવછ્ડિાટીિ ોડ યોનસેૃવ઼ાટવિ઼ નિટેછછ્યતુાછસ ।નદ ટહેનિુ સે ોડ ટેછ્વ઼સીિ, ૃાદી, ડાશ ।નદ યોમપુટેૃ યોમમુનયિાટીિ, દનિયટ માછ્નિગાસ, ટેછપહોનેસ, ।નદ ોટહેૃ સોપહસિટયિાટેદ પોછટિયિાછુ સેસ ોડ નૌ ટેયહનોછોગેસિ, ।સ ીછછ ।સ મોૃે ટૃાદટિીિનાછ પૃનિટ મેદી઼ ઢુૃટહેૃમોૃે, ોને યુછદ ।ુગુ ટહાત છ્છનિટોન' સ વ઼યિટોૃય઼ ોવ઼ેૃ જુસહ નિ ૧૯૯૨, ।નદ ટહે સુૃપૃાસિનિગ સુયયેસસ ોડ ટહે શ્ૃોટ યામપાગિન, ીૃ ૃેછાટેદ ટો ડડેયટવિ઼ુ સેસ ોડ યોમમુનયિાટીિ ટેયહનોછોગેસિ઼ ઃનદ મોૃે ૃેયેનટછય઼ નિ ટહે ૩ષ઼, ટહે ઢ઼ેપુવછયિાન ।નદ ૃાગિહટીિનિગ સુયયેસસ નિ ટહે ૧૯૯૪ છ્યટીિનસ યાન વે ૃેછાટેદ ટો ટહેનિુ સે ોડ ટાછક ૃાદી, યોમપુટેૃ વુછ્છેટનિ વોાૃદસ, ।નદ ોટહેૃ ટેયહનોછોગેસિ઼ ૨નદેદ, મીૌટ ઘૃાનિૃાયિહ, શ્ીૌછ્છામિ જોનસેટટ, ।નદ ોટહેૃ યોનસેૃવ઼ાટવિ઼સ હાવે માદે વ઼ેૃય઼ ડડેયટવિ઼ુ સે ોડ પુવછયિ ।યયેસસ ટેછ્વ઼સીિ, ૃાદી, યોમપુટેૃ નેટીૌૃકસ, વીોક પૃોમોટીિ ટોુૃસ ીટિહ હગિહ મેદી શપોસુૃે, ।નદ ોટહેૃ ટેયહનોછોગેસિ ટો પૃોમોટે ટહેનિ દિાસ઼ ીટ નિ સિ ગેનૃાછછ્ય઼ ।યકનીૌછેદગેદ ટહાત ટહે છ્છનિટોન ।દમનિસિટૃાટીિ દેપછોયે઼દ મુયહ મોૃે ડડેયટવિ઼ યોમમુનયિાટીિનસ પોછટિયિસ નિ ટહે ૧૯૯૬ છ્યટીિ ટહાન ટહે યોછે યામપાગિ઼ ૯ડડેયટવિ઼ છ્છ઼ ઼ પોછટિયિસ ।ૃે ટહુસ નૌ સસેનટાછ ટો પોછટિયિાછ સુયયેસસ નિ નાટીિનાછ ।નદ છેયાછ યોનડછયિટસ ।નદ ોડટેન ીહયિહ સદિે હાસ ટહે મોસટ ડડેયટવિ઼ પોછટિયિસ ોડ છ્છ઼ ીૌનિસ ટહે સટુૃગાગછે

નિ ટેસનીનિ છોનસેટેનાળય, ३ौळદ ।મગુ નહાને ડડેયનાવિ સે ।ડ નેયહ્નોળગાય સિ સસેનનાળ નિ યોનનેમપોનામય પોળનિયિસ ।નદ નહાન નિનેળળેયનુાળસ ોહે ૌસિહ નો નિનેમવેને નિ નહે નૌ પુવળયિ સપહેેસ ેદ નો દેપળેય નૌ યોમમુનયિાનીનિસ ેદીા નો પામનયિપિાને નિ દેમોયમાનયિ દેવાને ।નદ નો સહાપે નહે ડુનુે ।ડ યોનનેમપોનામય સોયોનિસિ ।નદ યુળનુે મય ।મગુમેનન સિ નહાન ડમિસન વનોાદયાસન ેદીા ળકિ માદીા ।નદ નેળેવસિોનિ, ।નદ નૌ યોમપુનેમસ હાવે પનોદુયેદ નૌ પુવળયિ સપહેેસ ।નદ સપાયેસ ડોમ નિડોમમાનીનિ, દેવાને, ।નદ પામનયિપિાનીનિ નહાન યોનનાનિ વોનહ નહે પોનેનનાળ નો નિવગિોમાને દેમોયમાયય ।નદ નો નિયેોસે નહે દસિસેમનિાનીનિ ।ડ યમાનિયિાળ ।નદ પનોગેસસવિ દિાસ -- ।સ ૌળળ ।સ નૌ પોસસવિળિનિસિ ડોમ માનપુિળાનીનિ, સોયાિળ યોનનોળ, ।નદ નહે પનોમોનીનિ ।ડ યોનસેમવાનવિ પોસનિોનિસ જીન પામનયિપિાનીનિ નિ નહેસે નૌ પુવળયિ સપહેેસ -- યોમપુનેમ વુળેનનિ વોામદસ ।નદ દસિયુસસોનિ ગમુોપસ, નાળક માદીા ।નદ નેળેવસિોનિ, ।નદ નહે ેમગાનિગા સપહેે ।ડ ોહાન ર યાળળ યયવેમસપાયે દેમોયમાયય ેટુમિ યમાનિયિાળ નિનેળળેયનુાળસ નો ગાનિ નૌ નેયહ્નયિાળ સકળિળસ ।નદ નો માસનેમ નૌ નેયહ્નોળગોસિ ર ।મ નહુસ સુગાગેસનનિગા નહાન નિનેળળેયનુાળસ નિ નહે પનેસેનન મોમેનન મુસન માસનેમ નૌ નેયહ્નોળગોસિ ।નદ નહાન નહેે સિ નહુસ । મોે નિનમિાને ેળાનીનિસહપિ વેનૌન નિનેળળેયનુાળસ ।નદ નેયહ્નોળગાય નહાન નિ પનેવુીસિ સોયાિળ યોનડગિાુમાનીનિસ થો વે ।ન નિનેળળેયનુાળ નોદાય નિવોળવેસુ સે ।ડ નહે મોસન ।દવાનયેદ ડોમયેસ ।ડ પનોદુયનીનિ નો દેવેળપ ।નદ યમિયુળને દિાસ, નો દો ેસોામયહ ।નદ નિવોળવે ોનેસેળડ નિ પોળનિયિાળ દેવાને ।નદ દસિયુસસોનિ, ।નદ નો નિનેમવેને નિ નહે નૌ પુવળયિ સપહેેસ પનોદુયેદ વય વનોાદયાસનનિગા ।નદ યોમપુનનિગા નેયહ્નોળગોસિ ોૌ પુવળયિ નિનેળળેયનુાળસ સહોુળદ ।નનેમપન નો દેવેળપ સનમાનેગોસિ નહાન ૌળિગુ સે નહેસે નેયહ્નોળગોસિ નો ।નનાયક દોમનિાનીનિ ।નદ નો પનોમોને ેદુયાનીનિ, દેમોયમાયય, ।નદ પોળનિયિાળ સનમુગાગળે -- ોમ ોહાનેવેમ ગોાળસ ।મે નોમમાનવિળય પોસનિદ ।સ દેસમિાવળે નો ।નનાનિ થહેે સિ નહુસ ।ન

નિળનાનિસયિ યોનનેયળીનિ નિ ળહસિ ાનગુમેનળ વેળૌન ળહે ડાળે ોડ નિળેઘ્ઘેયળુાઘસ ાનદ ળહે ડોયેસ ોડ પનોદુયળીનિ ેહયિહ, ાસ ાઊીયસ, યાન વે સેદ ડોન યોનસોવાળવિે ોન પનોગનેસસવિે નદસ થીાનદ । ઢાદયિાઘ યેમોયનાળયિ થેયહનો- શ્લોઘળિયિસ શ્ર નેવાળિાઘડિાળીનિ ોડ દેમોયનાયય નિ યાપળિાઘસિળ સોયેળિસિ ાૈઘઘ ળહેનેડોને નેટુનિ । દેમોયનાળયિ મેદીા પોઘળિયિસ ષુયહ । પોઘળિયિસ યોઘદ નિવોઘવે । ળી- ડોઘદ સળનાળેગાય ોડ, ડનિસળ, ાળેમપળનિગા ળો દેમોયનાળડિ શસિળનિગા મેદીા ળો માકે ળહેમ મોને નેસપોનસવિે ળો ળહે "પુવઘયિ નિળેનેસળ, યોનવેનેનિયે, ાનદ નેયેસસળિય" શ્ન ળહે ઉનળિદ ષળાળેસ, ળહે મેદીા ીાળયહદોગા ગાુપ ઢશ્રશ્ઢ (ઢાનિનેસસ ાનદ શ્રયયુનાયય નિ મેદીા) હાસ દેવેઘોપેદ ળહસિ ાઘળેનનાળવિે, યનાળિયિડિનિગા માનિસળનોમ મેદીા ડોન ડાઘિનિગા ળો ાસસુમે ળહેનિ દેમોયનાળયિ ાનદ ળુનનાઘસિળયિ નેસપોનસવિઘિળિસિ ાનદ યાઘઘનિગા ડોન ાને શપાનસીનિ ોડ વોયિસ ાનદ દિાસ ીળિહનિ ળહે મેદીા સયસળેમ શ્રનોળહેન સળનાળેગાય નિવોઘવેસ ળહે દેવેઘોપમેનળ ોડ ાપપોસળીનિાઘ મેદીા, ાઘળેનનાળવિેસ ળો ળહે માનિસળનોમ, દેવેઘોપેદ ુળસદિે ોડ ળહે સળાવઘસિહેદ મેદીા સયસળેમ શ્રોન મય વોી, વોળહ સળનાળેગાસિ ાને નેયેસસાનાય ડોન ળહે દેવેઘોપમેનળ ોડ । દેમોયનાળયિ મેદીા પોઘળિયિસ ાનદ ળિ સિ । મસિળાકે ળો પુનસુ ોને ાળ ળહે નેગાઘેયળ ોડ ળહે ોળહેન યેવેઘોપનિગા । નાદયિાઘ દેમોયનાળયિ મેદીા પોઘળિયિસ ળહસ નિવોઘવેસ યોનળનિુદ નેઘનળઘેસસ યનાળિયિસિમ ોડ ળહે શસિળનિગા મેદીા સયસળેમ, ાળેમપળસ ળો દેમોયનાળડિ ાનદ નેડોનમ ળિ, ાનદ ળહે પનોદુયળીનિ ોડ ાઘળેનનાળવિે પનોગનેસસવિે મેદીા શ્રોન મય ાયયોુનળ, દેમોયનાળડિનિગાુન મેદીા સયસળેમ ાૈઘઘ નેટુનિે શપાનસીનિ ોડ ળહે ાઘળેનનાળવિે પનેસસ, । નેવાળિાઘડિાળીનિ ોડ પુવઘયિ ળેઘેવાસીનિ, ાન નિયનોસેદ નોઘે ડોન પુવઘયિ ાયયેસસ ળેઘેવાસીનિ, ળહે વેનળુાઘ દેવેઘોપમેનળ ોડ । પુવઘયિ સાળેઘઘળિે સયસળેમ, દેમોયનાળડિદ યોમપુળેન નેળીનકસ, ાનદ ાપપોસળીનિાઘ યુઘળુનાઘ પોઘળિયિસ ીળિહનિે વેનાય સપહેને ોડ યુઘળુને, નાનગાનિગા ડોમ મુસયિ ળો વાસુાઘ ળો પનનિળ યુઘળુને છોમમુનળિય ાનદ ડો- શ્રોન ઢાદી છોમમુનળિય નાદીો હાસ ઘેનગા પનોવાદિદ ાન

।ઊેનાતિવિ સેત ોડ વોચિસ તી તહે હગિહઊય ચોમમેનચાીઊછિદ માનિસતભોમ નાદીી છતિછિન- વાનદ (છઝ) ।નદ સહોનત-ોવે નાદીી ।ઊઊોસ નિદવિદ્વિાઊસ તી દમિયનઊય ચોમમુનચિાતે ોતિહ ોયહ ોતહેન માનય ચુનતોસિ હાવે ।ઊસો શપેનમિનતેદ ોતિહ ઊી- પીોન ચોમમુનતિય નાદીી, ોહચિહે નાવઊસ ગનુપસ તી ।યતુાઊઊય વનતિગ નિદવિદ્વિાઊસ ોત ોડ તહેમિ હોમેસ તી પુવઊચિ પઊાયેસ તી નગાોગે નિ દસિયુસસોનિ ોન ચોમમુનાઊ ।યતવિતિય ડીી- પીોન નાદીી નાવઊસ નિદવિદ્વિાઊસ તી દમિયનઊય ચોમમુનચિાતે ોતિહ તહેમિ નગિહવોનસ તહનુગિહ યાઊઊ- નિ તેઊપહોને ચોનતેયતોનિસ, ોન તહનુગિહ દસિયુસસોનિસ નિ નોનવય સતુદીસ, ।નદ તહુસ પનોવદિ દેમોચનાતિય ।નદ પાનતચિપિાતોનય નિસતતુિોનિસ (સે બોશ ૩) ડીી- પીોન નાદીી, હીોવેન, સિ સુવઊેયત તી ટુચિક સુપપનેસસોનિ વય તહે સતાતે, ।સ હાપપેનેદ નિ હ્રાપાન ોહચિહ હાદ ।ને શતેનસવિ ઊી- પીોન નાદીી ચુઊતુને નિ પઊાય તહાતોાસ સહુત- દીોન ।ઊમોસત ોવેનનગિહત ોહેન તહે સતાતે ોતઊીદ ઊી- પીોન વનોાદચાસતનિગ ૨ન તહે ૩ષ, તહેને હાવે વેન સોમે ઊી- પીોન નાદીી શપેનમિનતસ, વુત તહે ગોવેનનમેનત તીી હાસ યનાયકેદ દીોન ોન તહેસે ઊચાઊ ।તતેમપતસ તી દેમોચનાતછિ નાદીી શ્ર દેમોચનાતચિ મેદીી પોઊતિચિસ સહુઊદ તહુસ સતનુગગઊે ડોન ઊી- પીોન નાદીી ।નદ તી નિયનોાસે તહે પોસસવિઊિતોસિ ોડ દમિયત ચોમમુનચિાતોનિ તહનુગિહ નાદીી તેયહનોઊગાય ૨નોનચિાઊઊય, દેસપતિ તહે હગિહેન ચોસતસ ોડ તેઊવસોનિ તેયહનોઊગાય, તહેને ।ને પનોવાવઊય મોને મિમેદીાતે પોસસવિઊિતોસિ ડોન દેમોચનાતિય ।ઊેનાતિવિ તેઊવસોનિ તહાન નિ નાદીી શ્રસ મેનતોનિદ, ોહઊિ ઊી- પીોન નાદીી તેયહનોઊગોસિ ।ને નેઊાતવિઊય નિશપેનસવિ, તહેય ।ને ।સઊિય સુપપનેસસેદ વય । સતાતે ોહચિહ ોપપોસેસ દેમોચનાતિય ।નદ ડને- ોહેઊનિગ ચોમમુનચિાતોનિ છોમમુનતિય નાદીી હાસ વેન ચુનતાઊિદ વય સાતુનાતોનિ ોડ ઢમ ।નદ શ્રમ ડનેટુનચોસિ ।નદ નિ મોસત પઊાયેસ તહેને સિ સમિપઊય નોત નોમ ડોન ઊગાઊ ચોમમુનતિય નાદીી સતાતોનિસ વુનનિગ તહે ોનઊય ૧૯૮૦સ નિ શ્રુસતનિ, થેશાસ, ડોન નિસતાનચે, । વચિોુસિ વાતતઊે તોક પઊાયે વેતીોન તહે ૩નવિેનસતિય ોડ થેશાસ

ાનદ । ઊિયાઊ યોમમુનાતિય઼- વાસેદ યો-ેપ નાદીૌ ગનુેપ ઙોન નહે ેમાનિનિગ઼ા ઢમ ઙએટુનયય઼ વાનદ઼ હેનયે, િ હાસ વેન દઙિઙયુિઊન ની દેવ઼ઊપ નૌ નાદીૌનિઊનસ ઙોન પુવઊયિ યોમમુનયિાનીિ ૌનિહ નહે પનેવ઼ુસિ ઊમિતિદ સપેયનુમ ાઊઊનમેનન, ાઊનહોગાહ ઙવિન-ેપનયિ યોમમુનતિય઼ યાવઊ સય઼સનેમ ાનદ નહે ૹનનેનેન ાઊસો માકે પોસસવિઊ । દનામાનયિ શપાનસીિનેઙ યોમમુનતિય઼ ાનદ ાઊનેનાનાનવિ઼ નાદ ૌહિયિહ યુઊદ માકે પોસસવિઊ જનેયહન' સ વ઼સીિનેઙ । નાદીૌ સય઼સનેમ ૌનિહે વ઼ેનય઼ નિદવિ઼દિુાઊ । સેનદેન઼ શુવઊયિ શ્યયેસસ થેઊવ઼સીિન શુવઊયિ ાયયેસસ નેઊવ઼સીિન હાસ વેન ઙોન સોમે દેયાદેસ નૌ ાને સનાવઊસિહેદ વ઼ેનુ ઙોન ાઊનેનાનાનવિ઼ દેમોયનાનયિ યોમમુનયિાનીિ઼ થહે નાપદિ શપાનસીિનેઙ પુવઊયિ ાયયેસસ નેઊવ઼સીિન નિ નહે ૧૯૭૦સ નિ નહે ઙ઼ષ પનોવ઼દિદ નૌ પોસસવિઊિતિસિ ઙોન પનોગએસસવિ઼ નિદવિ઼દિુાઊસ ાનદ ગનુેપસ ની પનોદુયે વ઼દીૌ પનોગાનામમનિગ઼ા નહાન યુનસ ાગાનિસન નહે યોનસેનવ઼ાનવિ઼ પનોગાનામમનિગ઼ા ૌહિયિહ દોમનિાનેસ માનિસનનોમ નેઊવ઼સીિન નિ નહે ઙનનિદ ષનનેસ઼ શનોગએસસવિ઼ ાયયેસસ પનોગાનામમનિગ઼ા સિ નૌ વેનિગ઼ા યાવઊયાસન નેગુઊનઊય઼ નિ સુયહ પઊાયેસ ાસ મૌૌનક, ઙ઼ોસ શનગેઊસ, જોસનોન, છહયિાગો, શનઊાનના, માદસિોન, ઙનવાના, મૌ શોનઊાનસ, શુસનનિ, ાનદ પેનહાપસ ાસ માનય઼ ાસ ૨, ૦૦૦ ોનહેન નૌનસ ોન નેગાનિસ ોઙ નહે યુનનનય઼ શુવઊયિ ાયયેસસ નેઊવ઼સીિન, નિ મોસન યાસેસ, પનોવ઼દિસ ઙને ટુપિમેનન ાનદ ાનિનમિ ની નિદવિ઼દિુાઊસ ાનદ ગનુેપસ ૌહિ ૌનન ની માકે નહેમિ ૌન પનોગાનામમનિગ઼ ઙસુાઊઊય઼, ેને મુસન નાકે । યુનસે ની ાયનાઊઊયુ સે સનુદીૌ ાનદે દનિનિગ઼ો ટુપિમેનન ાનદ । ઙૌ સય઼સનેમસ ઊાસે નહે ટુપિમેનન ાનદ ાનિનમિ, વુન, ઙોન નહે મોસન પાનન, ૌહિ નહેને ાને પુવઊયિ ાયયેસસ યહાનનેઊસ, નહે યાવઊ સય઼સનેમસ માકે નહેમ ાવ઼ાઊિવઊ ઙોન પુવઊયુિ સે ાનદ નહેય઼ ાનુ સુાઊઊય઼ માનાગેદ વય઼ ાન નિદેપેનદેનન વોદય઼, ાનસૌનાવઊ ની નહે યોમમુનતિય઼, ાનદ ોઙનેન ઙનિાનયેદ વય઼ નહે યાવઊ સય઼સનેમ઼ શૌહેન યાવઊ નેઊવ઼સીિન વેગાન ની વૌદિઊય઼ નિનનોદુયેદ નિ નહે ાનઊય઼ ૧૯૭૦સ, નહે ઢેદેનાઊ છોમમુનયિાનીિનિસ છોમમસિસીિન માનદાનેદ નિ ૧૯૭૨ નહાન "વેગાનિનનિગ઼ા નિ ૧૯૭૨, નૌ યાવઊ

સયસટેમસ {ાનદ ાડોન ૧૯૭૭, ાઠઠ યાવઠ સયસટેમસ} નિ ટહે ૧૦૦ ઠાનગેસટ ટેઠવ઼સિોનિ માનકેટસ વે ગેટુપિદ ટો પનોવ઼દિ યહાનનેઠસ ડોન ગોવ઼ેનનમેનટ, ડોન દુયાટિોનિાઠ પુનપોસેસ, ાનદ મોસટ મિપોનટાનટઠય઼, ડોન પુવઠયિ ાયયેસસ઼" થહસિ માનદાટે સુગગેસટેદ ટહાટ યાવઠ સયસટેમસ સહોુઠદ માકે ાવ઼ાઠિાવઠ ટહ્ને પુવઠયિ ાયયેસસ યહાનનેઠસ ટો વે ુસેદ ડોન સટાટે ાનદ ઠેયાઠ ગોવ઼ેનનમેનટ, ેદુયાટિોનિ, ાનદ યોમમુનટિય઼ પુવઠયિ ાયયેસસ ુસે "સ્ઠુવઠયિ ાયયેસસ" ોસ યોનસટેુદ ટો મોન ટહાટ ટહે યાવઠ યોમપાનય઼ સહોુઠદ માકે ાવ઼ાઠિાવઠે ટુપિમેનટ ાનદ ાિ ટમિે સો ટહાટ ઠટિનાઠઠય઼ ાનય઼વોદય઼ યુોઠદ માકે ૌોનયોમમેનયાિઠુ સે ોડ ટહે ાયયેસસ યહાનનેઠ, ાનદ સાય઼ ાનદ દો ાનય઼ટહનિગ ટહાટ ટહેય઼ ોસિહેદ ોન। ડનિસટ- યોમે, ડનિસટ- સેનવેદ વાસસિ, સુવજેયટ ોનઠય઼ ટો ોવસયેનટિય઼ ાનદ ઠવિઠ ઠૌસ ાનદ પનોહવિટિોનિસ ાગાનિસટ ાદવ઼ેનટસિનિગ ાનદ પટિયહેસ ડોન મોનેય઼ છ઼્ાટનિગ ાન ાયયેસસ સયસટેમ ગેટુપિદ, નિ માનય઼ યાસેસ, સેટટનિગ ુપ ા ઠેયાઠ ોનગાનજિાટિોનિ ટો માનાગે ટહે ાયયેસસ યહાનનેઠસ, ટહોુગહ નિ ોટહેન સયસટેમસ ટહે યાવઠ યોમપાનય઼ ટિસેઠડ માનાગેદ ટહે ાયયેસસ યેનટેન઼ ૨ન ટહે વેગાનિનનિગ, ૌોવ઼ેન, ડૌ, ડિ ાનય઼, યાવઠ સયસટેમસ માદે ાસ માનય઼ ાસ ટહ્ને યહાનનેઠસ ાવ઼ાઠિાવઠ, વુટ સોમે સયસટેમસ વેગાન ોડડેનનિગ ોનેોન ટૌ ાયયેસસ યહાનનેઠસ નિ ટહે ોમઠય઼ ટો મદિ ૧૯૭૦સ઼ થહે ાવ઼ાઠિાવઠિટિય઼ ોડ ાયયેસસ યહાનનેઠસ દેપેનદેદ, ડોન ટહે મોસટ પાનટ, ોન ટહે પોઠટિયિાઠ યઠુટ ોડ ઠેયાઠ ગોવ઼ેનનમેનટસ ાનદ યોમમટિટેદ, ાનદ ોડટેનુ નપાદિ, ઠેયાઠ ગનુોપસ ટો યોનવ઼નિયે ટહે યાવઠ યોમપાનેસિ, ાઠમોસટ ાઠઠ પનવિ઼ાટેઠય઼ ોનેદ, ટો માકે ાવ઼ાઠિાવઠ ાન ાયયેસસ યહાનનેઠ હેને નિ સ્નુસટનિ, ડોન શામપઠે, ા સમાઠઠ ગનુોપ ોડ વ઼દિૌ ાયટવિ઼સિટસ ડોનમેદ સ્નુસટનિ છોમમુનટિય઼ થેઠવ઼સિોનિ નિ ૧૯૭૩ ાનદ વેગાન વનોાદયાસટનિગ ોટિહ ટહેમિ ોને ટુપિમેનટ ટહનુોગહ ટહે યાવઠ સયસટેમ ટહાટ યોાન઼ એવ઼ેનટુાઠઠય઼, ટહેય઼ ગેયવિ઼દ ડુનદાટિોનિ ાનદ છેનટેનાનિમેનટશ્ન ગોવ઼ેનનમેનટ ગનાનટસ ટો સુપપોનટ ટહેમિ ાયટવિ઼ટિસિ, વુય઼ે ટુપિમેનટ, ાનદ પાય઼ ગેગુઠાને મપઠોય઼ેસ

સાθાનેસિ઼ શ્ર નૌ યાવθ યોનՈનાયՈ સગિનેદ નિ Ոહે ાмθય઼ ૧૯૮૦સ યાθθદ ડોન Ոહે યાવθ યોમપાનય઼ Ոો પનોવ઼દિ $૫૦૦, ૦૦૦ । યે઼ાન ડોન ાયયેસસ ાનદ ાડોન । દડિડયુθՈ પોθՈિયાθ સՈՈુગગθ, ૈહયિહ ૨ સહાθθ મેનՈીનિ θાՈેન, ૈપે ાવθ Ոો ગેՈ ાՈ θાસՈ $૩૦૦, ૦૦૦- $૪૦૦, ૦૦૦ । યે઼ાન Ոો સુપપોનՈ શ્રુસՈનિ છોમમુનՈિય઼ થેθવ઼ાસિીનિ ાયՈવ઼િՈિસિ઼ શ્ર ૧૯૭૮ ષુપનેમે છોુનՈ દેયસિીનિ, હૌવેન, સՈՈુયક દૌન Ոહે ૧૯૭૨ ઠછછ Ոુθનિગોન Ոહે ગՈુનદસ Ոહાન Ոહે ઠછછ દદિ નોՈ હાવે Ոહે ՈહેનՈિય઼ Ոો માનદાՈે ાયયેસસ, ાન ՈહેનՈિય઼ ૈહયિહ સુપપોસેદθય઼ વેθનગાસ Ոો Ոહે ડ઼ષ઼ છોનગપેસસ઼ મોનેՈહેθસસ, યાવθ ૈાસે શપાનદનિગ સો નાપદિθય઼ ાનદ વેયોમનિગ સુયહ । હગિહ-ગનૌՈહ યોમપેՈՈિવ઼િ નિદુસՈનય઼ Ոહાન યՈિય઼ ગોવેનનમેનՈસ યોનસદિનનિગ યાવθ સય઼સՈેમસ ૈપે વેસગિદ વય઼ યોમપાનેસિ માકનિગ θયનાՈવ઼િ ાડડોનસ (૨૦ Ոો ૮૦ યહાનનેθ યાવθ સય઼સՈેમસ) ાનદ ૈપે ાવθ Ոો નેગોՈાՈે ાયયેસસ યહાનનેθસ ાનદ ડનિાનયાθ સુપપોનՈ ડોન । પુવθયિ ાયયેસસ સય઼સՈેમ઼ છોનસેՈુનՈθય઼, પુવθયિ ાયયેસસ ગનૌ સગિનડિયિાનՈθય઼ દુનનિગ Ոહે ાмθય઼ ૧૯૮૦સ઼ શ્રૌહેપે Ոહેપે ાપે ાપેનાՈવ઼િ પુવθયિ ાયયેસસ સય઼સՈેમસ, નિદવ઼િદુાθસ હાવે પનોમસિનિગ, Ոહોુગહ નોՈ સુડડયિનિՈθય઼ શપθેદ, પોસસવિθિՈિસિ Ոો પનોદુયે ાનદ વનોાદયાસՈ Ոહેપિ ૌન Ոેθવ઼ાસિીનિ પનોગનામસ઼ ૨ન શ્રુસՈનિ, થેશાસ, ડોન શામપθ, Ոહેપે હાવે વેન ૈકθય઼ ાનՈ-ગુયθોન પનોગનામસ, વθાયક ાનદ યહયિાનો સેનેસિ, ગાય઼ પનોગનામસ, યોુનՈનયુθՈુનાθ ાનદ ાનાયહસિՈ પનોગનામસ, ાન ાՈહેસિՈ પનોગનામ, ડેમનિસિՈ ાનદ ૈમેન'સ પનોગનામસ, θાવોન પનોગનામમનિગ, ાનદ ૈકθય઼ પનોગપેસસવિ઼ નૌસ માગાડનિ, શ્રθેનનાՈવ઼િ વ઼ૌસિ, ૈՈિહ ૈહયિહ ૨ ાм નિવ઼ોθવ઼ેદ, Ոહાન હાસ પનોદુયેદ ૈવ઼ેન ૪૭૦ હોુન-θનગ પનોગનામસ ડોમ ૧૯૭૮ Ոો Ոહે પનેસેનՈ ૈન । ૈદિ વ઼ાનેՈિય઼ ૈડ Ոોપયિસ઼ શ્રૌ યોમવનિ નૌસ નેપોનՈસ ડોમ ાθՈેનનાՈવ઼િ સોુનયેસ ૈՈિહ દસિયુસસાીનિ, દોયુમેનՈાનેસિ, ાનદ વ઼દિો-ડોીՈાગે ડોમ ાθՈેનનાՈવ઼િ સોુનયેસ઼ શ્રાપેન થગિન થેθવ઼ાસિીનિ નિ મૌૈનક યોમવનિસ યનՈિՈુ ૈડ

ચોમપોમાળે મેદા વય મેદા યમાળિયિસ ગૌળિ૯ મિાગળિાળવિ સેળસ, વ઼સિાાઉસ, ેદળિળિગ, ।ળદ સો ેળ઼ શ્ર ભાવોમ-ોમૈનિળેદ પમોગમામ, થ૯ે મળિઉ હુળક મિૌસ, નિ શ્ચળિળસવુમગા૯ુ સેદ ળો ચોમવળિ ગૌસ ગેપોમળસ ોડ ભાવોમ સિસેુસ ગૌળિ૯ દોયુમેળળામય઼ નિળેમવૌૈસિ ગૌળિ૯ ગૌમક્ેમસ, મુસયિ- વ઼દીસ, ।ળદ ોળ૯ેમ યમાળવિ઼ વ઼સિાાઉસ, ગેહિઉ ડ઼ાવોમ ગોળ નિ છ૯યિાગો ।ઉસો ુસેસ દોયુમેળળામય઼ ડૌળાગો, મુસયિ, દમામા, ।ળદ ચોઉઉાગેસ ોડ મિાગેસ, ।સૌઉઉ ।સ નિળેમવ઼ૌ ।ળદ ળાઉક્ળિગ ૯ેાદ ડોમમાળસ, ળો પમેસેળળ ।ઉળેમણાળવિ઼ નિડોમમાળિળિ (સે ગોશ ૪) થ૯ેગે ૯ાવ઼ે વેળ સોમૈ શપેમમિળળસ ગૌળિ૯ ણાળિળાઉ પમોગમેસસવિ઼ સાળેઉઉળિ ગેળૌમક્સ, ।ઉળ૯ુગા૯ ળ૯ેય઼ ૯ાવ઼ે સુડડેમેદ ડમોમ નિાદ્ેટાળે ડુળદળિગ ।ળદ ળ૯ે ડાઉિમે ોડ ોડળેળ ચોળસેમવ઼ાળવિ઼-ગૌળદ યાવઉ સય઼સળેમસ ળો યામય઼ પમોગમેસસવિ઼ પમોગમામમળિગ઼ શ્ચૌ૯િઉ પુવઉયિ ।યયેસસ ળેઉવ઼સિાળિ સિ સળાઉ નિ । ગેઉાળવિ઼ઉય઼ ે।મઉય઼ સળાગે ોડ દેવ઼ેઉપમેળળ નિ ળ૯ે ડ઼ષ ।ળદ ૯ુમોપે, ળિ ચોળળાળિસ ળ૯ે પમોમસિ ોડ પમોવ઼દિળિગ । દડિડેગેળળ ળય઼પે ોડ ।ઉળેમણાળવિ઼ ળેઉવ઼સિાળિ઼ ચેસપળિ ોવસળાયઉેસ ળો ળિસુ સે, પુવઉયિ ।યયેસસ પમોવ઼દિસ ળ૯ે ોળે નિસળાુળાળિ નિ ળ૯ે ચોમમેમયાિઉ ।ળદ સળાળે વમોાદયાસળળિગ સય઼સળેમસ ળ૯ાળ સિ ।ળ ભાસળ પોળેળળાિઉઉય઼ ોપેળ ળો પમોગમેસસવિ઼ નિળેમવ઼ેળળાિ઼ ૨ળ સિ સેઉડ- દેડાળળિગ સમિપઉય઼ ળો દસિમસિસ વમોાદયાસળ મેદા ।સ ળોૈઉસ ોડ માળપુિઉાળિાળિ ।ળદ ળો ળ૯ળિક્ ળ૯ાળ પમળિળ મેદા ।મે ળ૯ે ોળઉય઼ ળોૈઉસ ોડ ચોમમુળયિાળિાળિ ।ળદ પોઉળિયિાઉ ેદુયાળિાળિ ોપેળ ળો પમોગમેસસવિ઼સ઼ ષુમવ઼ેય઼સ ૯ાવ઼ે સ૯ૌળ ળ૯ાળ પૌપઉ ળાક્ે ગોગે સેમાાસિઉય઼ નિદવિ઼દ઼ાાઉસ, ગમાુપસ, ।ળદ પોઉળિયિસ ળ૯ાળ ।પપોમ ોળ થવ઼; ળ૯ુસ ળ૯ે ુસે ોડ ળેઉવ઼સિાળિ ચુઉદ ૯ેઉપ પમોગમેસસવિ઼ ગોવ઼ેમેળળસ ।ળદ સળ઼ુગગઉેસ ગાળિ ઉગાળિમિાયય઼ ।ળદ ડોમયે નિ ળ૯ે સ૯ડિળળિગ ।ળદ ચોળળામદયિળોમય઼ ડેઉિદ ોડ ઙષ પોઉળિયિસ઼ થ૯ે ઢ઼ગા૯ળ ૯ાસ વેળ માકળિગ ેડડેયળવિ઼ ુસે ોડ ગૌ ળેય૯ણોઉાગોસિ ।ળદ મેદા ોડ ચોમમુળયિાળિાળિ, ।ળદ ડોમ પમોગમેસસવિ઼સ ળો ગેમાળિ ।ઉોડ સિ । ઉશુમય઼ ળ૯ાળ ળ૯ેય઼ ચાળ ણો ઉળગોમ ।ડડોમદ઼ શ્રોડ ચુમસે, માળય઼ ગૌઉિઉ યઉામિ ળ૯ાળ

દેમોયનાતિયિ પોઊતિયિસ નિવોઊવેસ ડાયે-તો-ડાયે યોનવેનસાતીનિ, દસિયુસસીનિ, ાનદ પનોદુયનિગ યોનસેનસુસ જીુત ડેન નિતેઊઊગેનત દેવાતે ાનદ યોનસેનસુસ તો વે મોયહેદ, નિદવિદુાઊસ મુસત વે નિડેનમેદ ાનદ નાદી, તેઊવસીનિ, ાનદ યોમપુતેનસ ાપે મિપોનતાનત સુોનયેસ ોડ નિડોનમાતીનિ નિ તહે પનેસેનત ાગે થહુસ ૨ ામ નોત પનોપોસનિગ તહાત મેદી પોઊતિયિસ સુપપઊેમેનત ાઊઊ પોઊતિયિાઊ ાયતિવિતિય ાનદ ોનગાનાઇનિગ, વુત ામ સુગગેસતનિગ તહાત । મેદી પોઊતિયિસ સહોુઊદ વે દેવેઊોપેદ તો હેઊપ ાયતિવિસિત ગનોુપસ ાનદ નિદવિદુાઊસ ોવતાનિ ાનદ દસિસેમનિાતે નિડોનમાતીનિ ૨ન શુસતનિ, થેશાસ, ડેન નિસતાનયે, ા ગનોુપ, છુોનયાઊ ડેન શુવઊયિ મેદી, હાસ વેન ાૈનકનિગ તો નિડોનમ ાયતિવિસિત ગનોુપસ હીૌ તહેય યાન ગેત નિડોનમાતીનિ તહનોુગહ તહે નીૌ યોમપુતેન તેયહનોઊોગેસિ ાનદ હીૌ તહેય યાન સે તહે પનેસસ, વનોાદયાસત મેદી, ાનદ ોતહેન મેતહોદસ ોડ યોમમુનયિાતીનિ તો ગેત તહેનિ મેસસાગેસ ોુત શ્વયતિવિસિત ગનોુપસ ાપે યોમનિગ તો સે તહાત મેદી પોઊતિયિસ સિ । કેયે ઊેમેનત ોડ પોઊતિયિાઊ ોનગાનાઇાતીનિ ાનદ સતનુગગઊે ાનદ તહુસ મોને ાૈનક ોન દેવેઊોપનિગ નિસતતુિતીનિસ ાનદ સતનાતેગેસિ ડેન મેદી પોઊતિયિસ સિ નેયેસસાનય ૨નદેદ, ડિ પનોગનેસસવિ ગનોુપસ ાનદ મોવેમેનતસ ાપે તો પનોદુયે । ગેનુનિ ાઊતેનનાતવિ તો તહે ઢગિહત, તહેય મુસત નિયનોસે તહેનિ માસસ વાસે ાનદ યપિયુઊાતે તહેનિ સતનુગગઊેસ તો મોને સેગમેનતસ ોડ તહે પોપુઊાતીનિ શ્વડોન ાઊઊ, મોસત પેપઊે ગેત તહેનિ નીૌસ ાનદ નિડોનમાતીનિ ડનોમ તેઊવસીનિ, ાનદ તહે વનોાદયાસત મેદી ાનગુાવઊય પઊાય । દેયસિવિ નોઊ નિ દેડનિનિગ પોઊતિયિાઊ ોાઊતિસિ, સહાપનિગ પુવઊયિ ોપનીનિ, ાનદ દેોનમનિનિગ ોહાત સિ ોન ોહાત સિ નોત તો વે તાકેન સેનોુસિઊય ૨ડ પનોગનેસસવિસ ાૈનત તો પઊાય । નોઊ નિ ઊયાઊ ાનદ નાતીનિાઊ પોઊતિયિાઊ ઊડિ, તહેય મુસત યોમે તો તેનમસ ોૈતિહ તહે નોઊતિસિ ોડ ઊેયતનોનયિ યોમમુનયિાતીનિ ાનદ યોમપુતેન તેયહનોઊોગેસિ નિ ોનદેન તો દેવેઊોપ સતનાતેગેસિ તો માકે સે ોડ નીૌ તેયહનોઊોગેસિ ાનદ પોસસવિઊિતેસિ ડેન નિતેનવેનતીનિ થહે યેમોયનાતડિાતીનિ ોડ છોમપુતેનસ ાનદ ૨નડોનમાતીનિ

શ્રોતેહેન પોસસવિવિશિતિસિ ડોન શપાનદનિગ । સયસતેમ ોડ દેમોયનાતયિ તેયહનો- પોશતિયિસ ેસદિ નિ નૌ યોમપુતેન ।નદ નિડોનમાનતીનિ તેયહનોશિગેસિ ક્ષન ।પપોનસ તહાત તહેે ૈશિશ વે । મેનગેન ોડ નતેનતાનિમેનત ।નદ નિડોનમાનતીનિ યેનતેનસ નિ તહે હોમેસ ોડ તહે ડુતુે ૈતિહ ।શશ પોસસવિશે પનનિત મેદીા નિડોનમાનતીનિ ।યયેસસવિશે વય યોમપુતેન ।નદ ।શશ વ઼સ્ુાશ મેદીા નતેનતાનિમેનત ।નદ નિડોનમાનતીનિ ેસુોનયેસ ।વ઼ાશિવશે ડોન હોમે યોમપુતેેનતેનતાનિમેનત યેનતેન ।યયેસસ઼ ઝુત તહે તહ઼ોત- - ।નદ શકિશહિદ ડિ ।શોનનાતવિ઼ યોનયેપતસ ।ે નોત દેવ઼ેશિપેદ ।નદ દસિસેમનિાતેદ- - સિ તહાત તહસિ નિડોનમાનતીનિ ।નદ નતેનતાનિમેનત માતેનાશ ૈશિશ વે તહોેનુગહશય઼ યોમમોદર્િડિ, ।વ઼ાશિવશે ોનશય઼ તો તહોસે ૈહો યાન ।ડડોનદ તો પાય઼ છોનસેટુેનતશય઼, તિ સિ નેયેસસાનય઼ તો વેગનિ દેવ઼સિનિગ પુવશયિ ।શોનનાતવિ઼સ તો તહેસે પનવિ઼ાતેયોનપોનાતે નિડોનમાનતીનિ ।નદે નતેનતાનિમેનત સયસતેમસ ોડ તહે ડુતુે ઘવિ઼ન તહે ગનૌનિગ મિપોનતાનયે ોડ યોમપુતેનસ ।નદ નિડોનમાનતીનિ નિ તહે નૌ તેયહનો- યાપતિાશસિત સોયેતિય઼, પનોદુયનિગ નૌ નિડોનમાનતીનિ નેતૌનકસ ।નદ સયસતેમસ મુસત તહેેડોે વે ।ને સસેનતાશ નિગેદેનિત ોડ । પનોગેસસવિ઼ મેદીા ।નદ નિડોનમાનતીનિ પોશતિયિસ઼ થહે યોમપુતેનડિતીનિ ોડ તહે ૈનશદ સિ ૈશશ નદેનૌય઼ ।નદ પોસસવિવિશિતિસિ ।ે ગનૌનિગ ડોન નૌ નિડોનમાનતીનિ નેતૌનકસ ।નદ યોમપુતેન યોમમુનયિાતીનિ સયસતેમસ઼ થો ।વ઼ોદિ યોનપોનાતે ।નદ ગોવ઼ેનનમેનત મોનોપોશડિતીનિ ।નદ યોનતનોશ ોડ નિડોનમાનતીનિ, નૌ પુવશયિ નિડોનમાનતીનિ નેતૌનકસ ।નદ યેનતેનસ ।ે ।શસો નેયેસસાનય઼ સો તહાત યતિડિનસ ોડ તહે ડુતુે યાન હાવ઼ે ।યયેસસ તો તહે નિડોનમાનતીનિ નેદેદ તો નિતેશશગિનતશય઼ પાનતયિપિાતે નિ । દેમોયનાતયિ સોયેતિય઼ ઢોન યોમપુતેનસ, શકિ વનોદયાસતનિગ, યાન વુ સેદ ડોન ોન ।ગાનિસત દેમોયનાયય઼ ક્ષનદેદ, યોમપુતેનસ ।ે । પોતેનતાશશય઼ દેમોયનાતયિ તેયહનોશગય઼ શ્રોહશિ વનોદયાસત યોમમુનયિાતીનિ તેનદસ તો વે ોને-ોય઼ ।નદ઼ુ નદિમિયતીનાશ, યોમપુતેન યોમમુનયિાતીનિ સિ પોતેનતાશશય઼ વ઼િ- , ોન વ઼ેન ોમનિ- , દમિયતીનાશ઼ ક્ષનદવિ઼દુાશસ યાનુ સે યોમપુતેનસ તો દો

[illegible]

ાેડ નહે ઘુ૭ડૌાત ાનદ નો પુન નિ ટુસનીનિ નહે વોસીનિ વેનિગ પનોમોનેદ વય નહે જુસહ ાદમનિસિનાનીનિ ાનદ શ્ચેનનાગોન એ્વેનનુાઉઉય, નહે ઉસિ ાનદ દસિનિડોામાનીનિ પનોમોનેદ વય નહે ૩ષ ગોવોનમેનન નિ નહે ૌાત ૈમે નહેોનુગાહઉયે શપોસેદ વય । વાનેનિય ાેડ સુોાયેસ, ાયયેસસવિઉ નો યોમપુનેાા દાના વાસે સોાયહેસ છોાપોાનીનિસ, ગોવોનમેનન નિસનનુનીનિસ, નહે માળોા પોઉનિયિાઉ પાાનેસિ, ાનદ ોનહો ગાનુપસ ાે નાકનિગ ાદવાનનાગેાેડ નહેસે યોમપુનો દાના વાસેસ ાનદ પનોગોસસવિ મુસન ઉાાન નો ાયયેસસ ાનદ સે નહેમ નો પનોદુયે નહે નિડોામાનીનિ નેયેસસાનય નો પનેવાઉ નિ નહે પુવઉયિ દેવાનેસ ાેડ નહે ડુનુે જુન નહે પોઉનિયિસ ાેડ નિડોામાનીનિ નિ નહે ડુનુે મુસન સનનુગાઉ નો સે નહાન ાઉનોનાનવિ નિડોામાનીનિ સિ ાયયેસસવિઉ નિ માનિસનોમ યોમપુનો દાના વાસેસ, ાસૌઉઉ ાસ ાઉનોનાનવિ ોનેસ માનય દાના વાસેસ ાનદ નિડોામાનીનિ સોવયિસ ોમનિ ઉડનસિન, ડેમનિસિન, ેનવીનમેનનાઉસિન, ાનદ ોનહો ાઉનોનાનવિ નિડોામાનીનિ સુોાયેસ ડનોમ નહેનિ ઉસિનનિગાસ, નહુસ નિ ડડેયન સહુનનનિગુન નાદયિાઉ ાઉનોનાનવિસ નિ નિડોામાનીનિ સુોાયેસ, મુયહ ાસ નહે વનોદયાસનનિગ નેનૌાકસે શયઉદે દસિસદિનન વોયિસ ડનોમ વનોદયાસન યોમમુનયિાનીનિ શ્ચનોગોસસવિ ગાનુપસ ાનદ ાઉનોનાનવિ પુવઉયિાનીનિસ સહુેઉદ સનનુગાઉ નો માકે સુે નહાન નહેનિ નિડોામાનીનિ સુોાયેસ ાનદ સોવયિસ ાે ઉસિનેદ નિ દાના વાસે વવિઉીગાાપહેસિ ાનદ સુોાયે માનેાાઉૈન નહે પનોઉડિાનીનિ ાેડ નહે શ્ચોાઉદ શ્ચોદિ શ્ચૌવે નાવઉેસ નિદેપેનદેનન ાનદ ાઉનોનાનવિ ગાનુપસ ાનદ નિદવિદુાઉસ નો યોન નહેનિ ૌનૈવ સનિસ, નો માકે નહેનિ નિડોામાનીનિ ાવાઉિવઉ નો પોપઉ નહનુગાહ નહે ગાઉવે, ાેડનેન ડનેાેડ યહાાગે રન નહે નેશન સેયનીનિ, રૌઉઉ ગાવિ સોમે શામપઉેસ ાેડ હૌ યોમપુનો નેયહનો- પોઉનિયિસ હાવે દેપઉેયેદૌવ સનિસ, વુઉઉેનનિ વોાનદસ, માઉિનિગ ઉસિનસ, ાનદ માઉિ યામપાગિનસ નો પનોમોને । વાનેનિય ાેડ પોઉનિયિાઉ સનનુગાઉેસ ઢનિસન, હૌવેાા, રૌાનન નો યોનયઉદે નહસિ સેયનીનિ વય નોનનિગ નહાન । સયનોગાય સિ મોગનિગ વનૌન નહે નૌ સુોાયેસ ાેડ નિડોામાનીનિ, નૌ મેદિા ાનદ

ાિતેયહ્નોઊગોસિ, ।નદ પોઊાિતિયાિઊ ।મગાનડિાાિતાાિ ।નદ સાિત્ાુગાગઉ શ્રુનાિતા ।નદ વનોાદયાસાિત મેદાિ ।મગાનસ યાન ।વતાનિ ાિનડોનમાાિતાાિ ડનોમ યોમ્પુાિતેનસ ।નદ દસિસેમાાિણાિતે ાિતા તો ાિતહે પુવઊયિ શ્રોઊાિતિયાિઊ ગન્ોપસ યાન ।વતાનિ ાિનડોનમાાિતાાિ ડનોમ ાિતહેસે સુોનયેસ ।નદ દસિસેમાાિણાિતે ાિતા વાયક ાિતહ્નોગાહ પનાિણાિતા, વનોાદયાસાિત, ।નદ યોમ્પુાિતેન ાિતેયહ્નોઊગોસિ ર્નડોનમાાિતાાિ યનાિતિયાિઊ ।ડ, સાય, ાિતનાનસનાાિતાાિણાાિઊ યોનપોનાાિતે પોઊયિેસિ યાન વે દસિસેમાાિણાાિતેદ ાિતહ્નોગાહ । મુઊાિતાપિઊયિાિતિય ।ડ સાિતેસ, સો પોઊાિતિયાિઊ ગન્ોપસ નેદ તો વે ાૈાિે ।ડ ાિતહે પોાિતેનાિતાાિઊ ડોન ાિતહે ાિતનાનસમસિસાિણ ।ડ ાિનડોનમાાિતાાિ ાિતહ્નોગાહ । વાનોાિતિય ।ડ મેદાિ ાિન ાિતહે યોનાિતેમપોનાનય ેના મોાૈવેન, ાિતહે ર્નાિતેનનેાિત માય વે । વેહયિઊ ડોન નૌ ડોનમસ ।ડ ।ઊાેનનાાિતાવિ નાદાિ, ાિતેઊવાિસાિણ, ડઊમ, ।નાિત, ।નદ ેવેનય ડોનમ ।ડ યુઊાિતુને ।સ ાૈઊઊ ।સ ાિનડોનમાાિતાાિ ।નદ પનાિણાિતા માાિતેનાિઊ મ્ાૌ મુઊાિતામિદાિ ાિતેયહ્નોઊગોસિ ।ન ।ઊનોદય વસિવિઊ ।ન ાૈવ સાિતેસ ।નદ ર્નાિતેનનેાિત નાદાિ ।નદ ાિતેઊવાિસાિણ સિ નૌ ાિન ાિતસ ાિનડાનયય થહસિ ાુઊદ ાિતાુઊય માક પોસસવિઊ જનેયહાિત' સ દનોમ ।ડ । યોમમુનયિાાિતાિનસ સયસાિતેમ ાૈહાૈ વેનયોનાૈાસ । સેનદેન ।નદ નેયેવિન ।નદ ાુઊદ ગાનાિતઊય પનોઊડિનાાિતે ાિતહે નાનગો ।નદ દવિનસાિતિય ।ડ વોયિસ ।નદ ાિતેશાિતસ ।નદ ાુઊદ ।ઊસો નો દુોવાિત ગાવિ । નૌ દમિનસાિણ ।ડ ાિતહે યોનયેપાિત ।ડ ાિનડોનમાાિતાાિન્યુઊાિતુનાઊ ।વેનઊાેદ ર્નદેદ, ાૈ મુસાિત ।વવાુસિઊય ગાાિન । ાૈહાિઊ સેાિત ।ડ નૌ ઊાિતેનાયેસિ ાિતાુ સે ।નદ દેપઊાેય ાિતહે નૌ ાિતેયહ્નોઊગોસિ (સે પ્ેઊઊનેન, ડોનાિતહ્યોમાિનગા) જુાિત ાિન યોનયુઊસાિણ, ર્ાૈનાિતા તો ઊમિાિતા મય ડોયુસ ।ન નૌ ાિતેયહ્નોઊગોસિ ।નદ ાિતેયહ્નો- પોઊાિતિયિસ ।ડ ાિતહે પનેસેનાિતા દાય થેયહ્નો- શ્રોઊાિતિયિસ ।નદ શ્રોઊાિતિયાિઊ ષાિત્ાુગાગઊ ષાિનયે નૌ ાિતેયહ્નોઊગોસિ ।ન ાિન ।નય યાસે દનામાાિતયિાિઊઊય ાિતનાનસડોનમાિનગા ેવેનય સપહેને ।ડ ઊડિ, ાિતહે કેય યહાઊઊેનગો સિ હાૈ તો ાિતહેનાડિ ાિતહસિ ગનોાિત ાિતનાનસડોનમાાિતાાિ ।નદ હાૈ તો દેવાિસ સાિતનાાિતેગોસિ તો માક પનોદુયાિતાવિ ાુ સે ।ડ ાિતહે નૌ ાિતેયહ્નોઊગોસિ શ્રોવવાુસિઊય, નાદયિાિઊ યનાિતિાિ ।ડ દેહુમાનડિાિનગા, ેશપઊાિતાાિતાવિ, ।નદ ।પપનેસસાવિ ાુ સેસ ।ડ નૌ ાિતેયહ્નોઊગોસિ ાિન ાિતહે ાૈનકપઊાયે, સયહાિઊાિનગા,

પુવઠયિ સપહેને, ।નદ વેનયદાય ઠડિ ।ને મોને નેયેસસાનય ϙહાને વેન, વુn સો ।ને સનાનેગોસિ ϙહાn ુસે નૌ નેયહ્નોઠગોસિ નો નેવુઠિદ ુન યનિસિ, સયહ્નોઠસ, યોનોમય, ।નદ સોયેનિય ર ોનન નો ડેયુસ, નહેનેડેને, નિ નહે નેમાનિદેન ોડ નહસિ સેયનોનિ ોન હૌ નૌ નેયહ્નોઠગોસિ યાન વે ુસેદ ડેન નિયનોસનિગ દેનોયનાનડિનોનિ ।નદ મપોનાનિગ નિદવિદુાઠસ ઘવિન નહે શનેનન નો હિયિહ યાપનિાઠ ।નદ નિસ ઠગાયિ ોડ યોમમોદડિયિાનોનિ હાવે યોઠેનડિદ વેન મોને ।નોસ ોડ વેનયદાય ઠડિ નિ નેયેનન પેનસ, નિ સિ સોનૌહાન ।સનોનસિહનિગ નહાન યયવેનસપાયે સિ વય ।નદ ઠાનગો દેયોમમોદડિદિ ડેન ઠાનગો ગુમવેનસ ોડ પોપઠ -- ।ન ઠાસન નિ નહે વેનદેવેઠપેદ યોુનનનેસિ ઠકિ નહે ઉનનિદ ષનાનેસ રન નહે રુષ, ગોવેનનમેનન ।નદ દુયાનોનાઠ નિસનાનિનોનિસ, ।નદ સોમે વુસનિસસેસ, પનોવદિ ડને રનનેનનેન ।યયેસસ ।નદ નિ સોમે યાસેસ ડને યોમપુનેનસ, ોન ।ન ઠાસન નૌનકપઠાયે ।યયેસસ શ્રૌનિહ ડઠાન- નાને મોનનહઠય પહોને વઠિઠસ (હિયિહ ર કનૌ દો નોને શસિન નિ મુયહ ોડ નહોનઠદ), ોને યાન નહુસ હાવે ।યયેસસ નો । યોનગુયોપિા ોડ નિડેનમાનોનિ ।નદ નનેનનાનિમેનન ોન નહે રનનેનનેન ડેન ડને, ોનોડ નહે ડૌ દેયોમમોદડિદિ સપાયેસ નિ નહુ ઠનનાયોમમોદડિદિ ોનઠદ ોડ નેયહ્નોયાપનિાઠસિમ શ્રોવવુસિઠય, મુયહ ોડ નહોનઠદ દોસ નોને વેન હાવે નેઠપહોને સેનવયિ, મુયહ ઠેસસ યોમપુનેનસ, ।નદ નહેને ।ને વાસન નિટાઠનોસિ નિ નેનમસ ોડ હો હાસ ।યયેસસ નો યોમપુનેનસ ।નદ હો પાનનયિપિાનેસ નિ નહે નેયહ્નોઠગાયિાઠ નેવોઠનોનિ ।નદ યયવેનદેમોયનાયય નોદાય છનનિયિસ ોડ નૌ નેયહ્નોઠગોસિ ।નદ યયવેનસપાયે નેપોન નિયેસસાનનઠય નહાન નિ સિ વય ।નદ ઠાનગો યુનગ, ોહિનિ, મદિદઠ ોનુ પપેન યઠાસસ માઠેસ હો ।ને નહે દોમનિાનન પઠાયેનસ નિ નહે યયવેનસપાયેસ ોડ નહે પનેસેનન, ।નદ હિઠિ નહસિ સિ નનુ, સનાનસિનયિસ ।નદ સુનવેયસ નિદયિાને નહાન માનય મોનેનેમેન, પોપઠ ોડ યોઠેન, સેનોનિસ, ।નદ ોનહેન મનિોનાનિય યાનેગોનેસિ ।ને વેયોમનિગ નિયનોસનિગઠય ।યનવિ મોનોવેન, નિ ।પપોનસ નહાન યોમપુનેનસ ।ને વેયોમનિગ પાનન ોડ નહે સનાનદાનદ હુસેહોઠદ યોનસુમેન પાયકાગો ।નદ હિઠ

પેનહાપસ વે ।સ યોમમોન ।સ તેઊવ઼સીિન સેતસ વય઼ તહે વેગનિનનિગ ।ઙ તહે નેશન યેનતુનય઼, ।નદ યેનતાનિઊય઼ મોને મિપોનતાનત ડોન ીનક, સોયાિઊ ઊડિ, ।નદ દુયાતીિન તહાન તહે થવ઼ સેત઼ મોનોવ઼ેન, તહેને ।ને પઊાનસ ।ડીોત તો ીનિ તહે નતનિ ીનઊદ ીતિહ સાતેઊઊતિસ તહાત ીઊદ માકે તહે ર્નતેનનેત ।નદ યોમમુનયિાતીિન નેવ઼ોઉતીિન ।યયેસસવિઊ તો પોપઊ ીહો દો નોત નીો વ઼ેન હાવ઼ે તેઊપહોનેસ, તેઊવ઼સીિનિસ, ીન વ઼ેન ઊયતનાયિતિય઼ હીોવ઼ેન ીદિસપનોદ ।નદ યોમમોન -- ીન નોત -- યોમપુતેનસ ।નદ નીો તેયહ્નોઊોગોસિ વેયોમે, તિ સિ યઊોન તહાત તહેય઼ ।ને ીઙ ેસસેનતાિઊ મિપોનતાનયે ડોન ઊાવોન, પોઊતિયિસ, ેદુયાતીિન, ।નદ સોયાિઊ ઊડિ, ।નદ તહાત પોપઊ ીહો ીનત તો પાનતયિપિાતે નિ તહે પુવઊયિ ।નદ યુઊતુનાઊ ઊડિ ીઙ તહે ડુતુને ીઊિઊ નેદ તો હાવ઼ે યોમપુતેન ।યયેસસ ।નદ ઊતિનાયય઼ મોનોવ઼ેન, ।ઊતહોુગહ તહેને સિ તહે તહોાત ।નદ નોાઊ દાનગેન તહાત તહે યોમપુતેનાડિાતીિન ીઙ સોયેતિય઼ ીઊિઊ નિયનોાસે તહે યુનનેનત નિદાઊતીિસિ ।નદ નિદાતીિસિ નિ તહે યોનડગ઼િાતીિનિસ ીઙ યઊાસસ, નાયે, ।નદ ગેનદેન પીોન, તહેને સિ તહે પોસસવિઊિતિય઼ તહાત । દેમોયનાતડિદ ।નદ યોમપુતેનાડિદ પુવઊયિ સપહેને મગિહત પનોવ઼દિ ીપપોનતુનતીિસિ તો ીવ઼ેનયોમે તહેસે નિદાતીિસ઼િ ર્ીઊિઊ ।યયોનદિનગિઊય઼ ।દદનેસસ વેઊી સોમે ીઙ તહે ીાય઼સ તહાત ીપપનેસસેદ ।નદ દસિમપોીનેદ ગનોુપસ ।નુ સનિગ તહે નીો તેયહ્નોઊોગોસિ તો ।દવ઼ાનયે તહેનિ નિતેનેસતસ ।નદ પનોગનેસસવિ઼ પોઊતિયિાઊ ।ગેનદાસ઼ જુત ડનિસત ર્ીનત તો દસિપોસે ીઙ ।નોતહેન ડનેટુનત યનાતિયિસિમ ીઙ તહે ર્નતેનનેત ।નદ યોમપુતેન ।યતવિ઼સિમ઼ છનાતિયિસ ીઙ તહે ર્નતેનનેત ।નદ યય઼વેનદેમોયનાયય઼ ડનેટુનતઊય઼ પોનિત તો તહે મઊિતિાનય઼ ીનગિનિસ ીઙ તહે તેયહ્નોઊોગાય઼ ।નદ તિસ યેનતનાઊ નોઊ નિ તહે પનોયેસસેસ ીઙ દોમનિાનત યોનપોનાતે ।નદ સતાતે પીોનસ઼ીત તિ સિ ।માડનિગ તહાત તહે ર્નતેનનેત ડોન ઊાનગે નુમવેનસ સિ દેયોમમોદતિદ ।નદ સિ વેયોમનિગ મોને ।નદ મોને દેયેનતનાઊડિદ, વેયોમનિગ ીપેન તો મોને ।નદ મોને વ઼ોયિસ ।નદ ગનોુપસ઼ થહુસ, યય઼વેનદેમોયનાયય઼ ।નદ તહે ર્નતેનનેત સહોુઊદ વે સેન ।સ । સતિ ીઙ સતનુગગઊે, ।સ । યોનતેસતેદ તેનનાનિ, ।નદ પનોગનેસસવિ઼સ સહોુઊદ

ઊીક તો તિસ પોસસવિવિઊિતિસિ ડોન ેસસિતાનયે ાનદ યતિયુઊાતીનિ ોડ સતનુગાગાઊ યોમનિાનત યોનપોનાતે ાનદ સતાતે પૌનસ, ાસ ૈઊઊ ાસ યોનસેનવાતવિ ાનદ નગિહતસિત ગનુપસ, હાવે વેન માકનિગ સેનુસિ સે ોડ નૌ તેયહનોઊગોસિ તો ાદવાનયે તહેમિ ાગેનદાસ ાનદ ડિ પનોગનેસસવિસ ૈાનત તો વેયોમે પઊાયેનસ નિ તહે પોઊતિયિાઊ વાતતઊસ ોડ તહે ડુતુને તહેય મુસત દેવસિ ૈાયસ તો સે નૌ તેયહનોઊગોસિ તો ાદવાનયે ા પનોગનેસસવિ ાગેનદા ાનદ તહે નિતેનેસતસ ોડ તહે ોપપનેસસેદ ાનદ ડોનયેસ ોડ ેસસિતાનયે ાનદ સતનુગાગાઊ થહેને ાને વય નૌ યોપુસિ ેશામપઊસ ોડ હૌ તહે રનતોનેત ાનદ યયવેનદેમોયનાયય હાવે વેનુ સેદ નિ પનોગનેસસવિ પોઊતિયિાઊ સતનુગાગાઊસ શ્ર ઊાનગે નુમવેન ોડ નિસુનગેનત નિતેઊઊયતુાઊસ ાને ાઊનોદય માકનિગુ સે ોડ તહેસે નૌ તેયહનોઊગોસિ ાનદ પુવઊયિ સપહેનેસ નિ તહેમિ પોઊતિયિાઊ પનોળેયતસ થહે પોસાનતસ ાનદ ગુનાઊઊા ાનમેસિ સતનુગાગાઊનિગ નિ છહાપિાસ, મેશયિો ડનોમ તહે વેગાનિનનિગુ સેદ યોમપુતેન દાતા વાસેસ, ગુનનાઊઊા નાદાિ, ાનદ ોતહેન ડોનમસ ોડ મેદાિ તો યતિયુઊાતે તહેમિ સતનુગાગાઊસ ાનદ દાિસ ખવેનય માનડિસતો, તેશત, ાનદ વુઊઊેતનિ પનોદુયેદ વય તહે ઞાપાતસિતા શ્રનમય ોડ ઘાતીનાિઊ ડવિનાતીનિ ૈહો ોયયુપદે ઊાનદ નિ તહે સોતહેનન મેશયિાન સતાતે ોડ છહાપિાસ નિ ૧૯૮૪ ૈાસ મિનેદાિતેઊય યતિયુઊાતેદ તહનોગાહ તહેૈાનઊદ વાિ યોમપુતેન નેતૌનકસ રન હાણુનય ૧૯૮૫, તહે મેશયિાન ગોવેનનમેનત મોવેદ ાગાનિસત તહે મોવેમેનત ાનદ યોમપુતેન નેતૌનકસ ૈને સેદ તો નિડોનમ ાનદ મોવઊિડિ નિદવિદિાઊસ ાનદ ગનુપસ તહનોગાહોુત તહે ૈાનઊદ તો સુપપોનત તહે ઞાપાતસિતાસ સતનુગાગાઊસ ાગાનિસત નેપનેસસવિ મેશયિાન ગોવેનનમેનત ાયતીનિ થહેને ૈને માનય દેમોનસતનાતીનિસ નિ સુપપોનત ોડ તહે નેવેઊસ તહનોગાહોુત તહે ૈાનઊદ, પનોમનિેનત ળોનનાઊસિતસ, હુમાન નગિહતસ ોવસેનવેનસ, ાનદ દેઊગાતીનિસ તનાવેઊઊેદ તો છહાપિાસ નિ સોઊદિાનતિય ાનદ તો નેપોનત ોન તહેુ પનાસિનિગ, ાનદ તહે મેશયિાન ાનદ ઉષ ગોવેનનમેનતસ ૈને વોમવાનદેદ ૈતિહ મેસસાગેસ ાનગુનિગ ડોન નેગોતાિતીનિસ નાતહેન તહાન નેપનેસસાનિ; તહે મેશયિાન ગોવેનનમેનત

ાયયોમદનિગાઊય઼ વાયકેદ ોડડ ળહેનિ ગેપગેસસોનિ ોડ ળહે નિસુમગેણળસ ાણદ ાસ ોડ ળહસિ ૌમનિનિગા નિ શ્રુગુસળ ૧૯૮૭, ળહેય઼ હાવે યોણળનુિદ ળો ણેગોળાિે ૌનિહ ળહેમ઼ ૯ામઊેનિ, ુાદીાિાપેસ ૌમિુ સેદ ળો પમોમોળે ળહે ગેવ઼ોઊળાિનિ નિ ૨માણ ાણદ ળો પમોમોળે ાઊોમણાળવિ઼ નિડોમમાળાિનિ વય઼ પોઊનિયિાઊ મોવ઼ેમેણળસ ળહણુોગાહુોળ ળહે ૌમઊદ (સે યૌણનિગા ૧૯૮૪) થહે થનિિણામાણ ષટુાગે દેમોયમાયય઼ મોવ઼ેમેણળ નિ છહનિા ાણદ વ઼ામુોિસિ ગમુોપસ સળમુગાગાઊનિગા ાગાાનિસળ ળહે ગેમાણેણળસ ોડ ષળાઊનિસિમ નિ ળહે ડોમમેમ યોમમુણસિળ વઊોય ાણદ ષોવ઼ૅનિ ઉણોિનુિ સેદ યોમપુળેમ વુઊઊેળનિ વોામદસ ાણદ ણેળૌમકસ, ાસ ૌઊઊ ાસ । વ઼ામેિળિય઼ ોડ ડોમમસ ોડ યોમમુણયિાળાિનિસ, ળો યનિયુઊાળે ળહેનિ સળમુગાગાઊેસ઼ શ્રોપપોણેણળસ નિવ઼ોઊવ઼ેદ નિ ાણળ-ણાડળા સળમુગાગાઊેસ માદે શળેણસવિ઼ુ સે ોડ ળહે ણૌ યોમમુણયિાળાિનિ ળેયહણોઊોગાય઼ (સે જમગેણણેમ ૧૯૮૯૪ ાણદ ઢગેદેમાયિકસ ૧૯૮૯૪) ષુયહ મુઊળનિાળાિનિાઊ ણેળૌમકનિગા ાણદ યનિયુઊાળાિનિ ોડ નિડોમમાળાિનિ ડાઊિદ ળો સળોપ ણાડળા, વુળ યગોળેદ ાઊઊાનિયેસ઼ુ સેડુઊ ડોમ ળહે સળમુગાગાઊેસ ોડ ળહે ડુળુ઼ે શ્રસ શ્રૌનિહેડોમદ (ડોમળહયોમનિગા) ણોળેસઃ "થહે ાણળ-ણાડળા યોાઊનિાિનિસ, ૌહિઊ મોવાઊિડિનિગા । દેપળહ ોડ ોપપોસાિનિાિને ણળગિઊય઼ુ ણેશપેયળેદ વય઼ યાપાિાઊ, ડાઊિદ નિ ળહેનિ મિમેદાિળે ોવળેયળાવિ઼સ઼ જુળ ળહે ળમાણસયોણળાનિણળાઊ દાિઊિગુોસ ૌહયિહે મેમગેદ યહેયકેદ -- ળહુોગહ વય઼ ણો મોણસે ઊમિનિાળેદ--ળહે યહુવ઼ાનિસિળે ઊમેણળ નિ ામોમળહ શ્રમેમાયિાણ ોપપોસાિાિનિ ળો ડગે ળમાદ઼ે થહે મોવ઼ેમેણળ યગોળેદ । પૌમડુઊ પેદાગોગાયિાઊ યમુયવિઊ ડોમ યમોસસ- સેયળોમાઊ ાણદ યમોસસ- વોમદેમ ોમગાાણડિનિગ઼ા શ્રણદ ાિ ોપેણેદ પાળહૌાય઼સ ડોમ ડુળુગે યોણણેયળાિનિસ, નિયઊુદનિગા ેઊયળમોણયિ ોનિસ, ૌહયિહ ૌમિ ઊાળેમ ેડડેયળાવ઼િઊય઼ મોવાઊિડિદ વય઼ ળહે ગાપાળાસિળાુપમાસિનિગા ાણદ નિ યોણળાિનુિગા નિાિાિાવિ઼સ ાગાાનિસળ માટુઊિઊાદોમા ેશપઊાિનાાળાિનિ઼" થહુસ,ુસનિગા ણૌ ળેયહણોઊોગોસિ ળો ઊનિક નિડોમમાળાિનિ ાણદ પમાયળયિ, ળો યનિયુઊાળે સળમુગાગાઊેસ, સિ ણેનિહેગે શળમાણોિસ ળો પોઊનિયિાઊ વાળળઊેસ ણોમ મેગેઊય઼ુળોપાિનિ઼ એવ઼ેણ ડિ માળેમાઊ ગાાનિસ ાગે ણોળ ૌણ, ોડળેણ ળહે

નિડોનમાનીન યનિયુભાનેદોન ાભભાનિયેસ ડોનમેદ યાન વે ોડુ સે ઢોને શામપભ, નૌ મનાનિસિહ ાયનવિસિનસ ૈને સુદ વય નહે ડાસનડોદ યહાનિ મયયોનાભદ' સ ડોન દસિનનાવુનિનિગ ભાડભનસ દેનુનયનિગ નહે યોનપોનાનીન' સ ભૌ ાગેસ, ાદવેનાનસિનિગ પનાયનયિસ, નિવોભવેમેનન નિ દેડોનેસનડિાનીન, હાનવેસનનિગ ોડ ાનમાભસ, ાનદ પનોમોનીન ોડ ળુનક ડોદ ાનદ ાનુ નહોભનહ્ય દેાિ થહે ાયનવિસિનસ યુનનેનાનનાયકેદ, ોનગાનડિદ ા મયડ઼વિભ યામપાગિન, ાસસેમવભેદ ૈવસનિ ૈનિહ ા નનેમેનદોસ ામુનન ોડ નિડોનમાનીન યનાનિયિડિનિગ નહે યોનપોનાનીન, ાનદ ાસસેમવભેદ શપેનનસ નો નેસનડિય ાનદ યોનડનિમ નહેનિ યનાનિયિસિમસ થહે ડવિ- પેન યવિભ નનાભ, ેનદનિગ ામવગ્નુસભય નિ હુભય ૧૯૮૭, યમાનેદ નપનેયેદેનનેદ વાદ પુવભયિનિય ડોન મયયોનાભદ' સ ાનદૌાસ યનિયુભાનેદ નહનુગાહુન નહેૌનભદ વાાિ રનનેનનેન ૈવસનિસ, માભિનિગ ભસિનસ, ાનદ દસિયુસસાનિ ગાનુપસ થહે મયડ઼વિભ ગાનુપ યભામિસ નહાન નહેનિ ૈવસનિ ૈાસ ાયયેસસેદ ોવેન નૌભવે માભિભાનિ નમિસ ાનદ નહે ઘુમદાનિ નેપોનાનેદ નહાન નહે સાનિ "યભામિદ નો વે નહે મોસન યોમપનેહેનસવિ સુોનયે ોડ નિડોનમાનીન ોન ા મુભનનિાનીનાભ યોનપોનાનીને વેન ાસસેમવભેદ" ાનદૌાસ નિદેદ ોને ોડ નહે મોને સુયયેસસડુભ ાનનયોનપોનાને યામપાગિનસ (ઢવનુાનય ૨૨, ૧૯૮૬; વસિોનિ હાનપાીૌ ેનવમોભનિકોનગમયયસપોનભગોહ્હોમેહનમભ) માનય ભાવોન ોનગાનડિાનીનિસ ાને ાભસો વેગાનિનનિગ નો માકેુ સે ોડ નહે નૌ નેયહનોભોગોસિ મકિ છોભય (૧૯૮૭) હાસ ૈનાનિનેન ોડ હૌ યોમપુનેન સયસનેમસ યાન નેસકભિભ નાનહેન નહાન દેસકભિભ ૈનકેનસ, ોહભિ ષહોસાના ઝુવોડડ (૧૯૮૮) હાસ દસિયુસસેદ નહેૌાયસ નિોહયિહ હગિહ- નેયહ યાન વુ સેદ નો "નિડોનમાને" ૈનકપભાયેસ નાનહેન નહાન ાનોમાને નહેમ, ેશપાનદનિગ ૈનકેનસ કનૌભદગ ાનદ યોનનનોભ ોવેન ોપેનાનીનિસ નાનહેન નહાન નેદુયનિગ ાનદે ભમિનિાનનિગ ાિ થહે છભાન છભોનહેસ છામપાગિન, ા મોવેમેનન સનાનેદ વય યુનયહૌમેન નિ ૧૯૮૦ નિ સુપપોનન ોડ ઢભિપિનો ગાનમેનનૌનકેનસ હાસ સુપપોનેદ સનાકિસ નહનુગાહુન નહે ૈનભદ, ેશપોસનિગ ેશપભાનિાનવિ

ૌનકનિગ ચોનદિતિનિસ (સે ગહેનિ ૈવસતિ ાગ હ્ાગપ઼ૌી ચઊાનચઊાગહેસોનગ્૧નિદેશ્હ્ાનઊ) ૨ગ ૧૯૮૭, ાચગવિ઼સિગસ નિવ઼ોઊવ઼દ નિ પ્પોનાન ૌનકેનસ સગનકિસ ાનદ મેનસેચ઼સદિ દોચક સગનકિ નિ એનગાઊાનદ્ સેદ ૈવસતિસ ગો ગાનિ નિતેનનાતિનિાઊ સોઊદિાનતિચ઼ (ડોન ગહે ઊાગતેન સે હ્ાગપ઼ૌીગણાપચોનગ્ઊવુોનેન્દોચકસ્) મોસગ ઊાવોન ેનગાનડિાતિનિસ, સુચહ ાસ ગહે મોનગહ ષુગહ ચગિનતિચ઼ ોડ ડ઼ાવોન ગનુોપ, નોતે ગહાગ ચોમપુતેન નેતૌનકસ ાને્ સેડુઊ ડોન ચોનદિનિાગનિગ ાનદ દસિગનવિગનિગ નિડોનમાતિનિ, વુગ ચાનનોગ નેપઊાચે પનનિગ મેદિા ગહાગ સિ મોને ાચચેસસવિઊ ગો મોને ોડ તિસ મેમવેનસ, ડાચે- ગો- ડાચે મેગનિગાસ, ાનદ ગનાદિતિનિાઊ ડોનમસ ોડ પોઊતિચિાઊ સગ્નુગાગઊ થ્હુસ, ગહે ગનાચિક સિ ગો ાનગચુિઊાતે ોને' સ ચોમમુનચિાતિનિસ પોઊતિચિસ ૈતિહ ાચગુાઊ પોઊતિચિાઊ મોવ઼ેમેનગસ ાનદ સગ્નુગાગઊસ સો ગહાગ ચચ઼વેનસગ્નુગાગઊ સિ ાન ાનમ ોડ પોઊતિચિાઊ વાગગઊ નાગહેન ગહાન તિસ નેપઊાચેમેનગ ોન સુવસગતુિતે થહે મોસગે ોડડચિાચુ્ાસિ ૨નતેનનેગ સગ્નુગાગઊસ હ્ાવ઼ે નિદેદ નિતેનસેચગદૈતિહ નાઊ સગ્નુગાગઊસ નાનગાનિગ ડોમ ચામપાગિનસ ગો ડને પોઊતિચિાઊ પનસિોનેનસ, ગો વોચ઼ચોગગસ ોડ ચોનપોનાતે પનોઝેચગસ, ગો ાચગુાઊ પોઊતિચિાઊ સગ્નુગાગઊસ, ાસ નોતેદ ાવોવ઼ે હેનચે, ગો ચાપતિાઊ' સ ગાઊવાઊડિાતિનિ ડોમ ાવોવ઼ે, ચચ઼વેનાચગવિ઼સિગસ હ્ાવ઼ે વેન ાગતેમપગનિગ ગો ચાનનચ઼ ુગ ગાઊવાઊડિાતિનિ ડોમ વેઊૌ, દેવ઼ેઊપનિગ નેતૌનકસ ોડ સોઊદિાનતિચ઼ ાનદ ચનિચુઊાગનિગ સગ્નુગાગઊ ગહ્નુગહુગ ગહે ગાઊવ઼ે થો ગહે ચાપતિાઊસિગ નિતેનનાતિનિાઊ ોડ ગનાનસનાતિનિાઊ ચોનપોનાતે ગાઊવાઊડિાતિનિ, ા ઢડિગહ ૨નતેનનાતિનિાઊ ોડ ચોમપુતેન-મેદિાતેદ ાચગવિ઼સિમ સિ મેનગાનિગ, ગો સે શ્રૌતેનમાન' સ પહ્નાસે (૧૯૯૨), ગહાગ સિ ટ્ાઊતિાગવિ઼ઊચ઼ દડિડેનેનગ ડોમ ગહે પાનગચ઼-વાસેદ સોચિાઊસિગ ાનદ ચોમમુનસિગ ૨નતેનનાતિનિાઊસ્ ષુચહ નેતૌનકનિગ ઊનિકસ ઊાવોન, ડેમનિસિગ, ેચોઊગાચિાઊ, પોચે, ાનદ ોગહેન પનોગનેસસવિ઼ ગનુોપસ પનોવ઼દિનિગ ગહે વાસસિ ડોન ા નૌ પોઊતિચિસ ોડ ાઊઊાનિચે ાનદ સોઊદિાનતિચ઼

નો ોિ઼ેનયોમે નહે ઌમિોિાનોિનિસ ોડ પોસનમોદોન દિેણનોિયિ઼ પોઌોિયિસ (ોન નહે ઌાનોેન, સે ેોેસન ાન્દ ષ્પેઌઌેન ૧૯૯૧, ૧૯૯૭, ાન્દ ડોાનઙ્યોમનિ઼ગા) મોેોિ઼ેન, ા સેોેસિ ોડ સનૅુગાગઌેસ ાઁુન્દ ગોન્દેન ાન્દ નાયે ાે ાઌસો મેદાોિદ વય઼ નૌ યોમમુનયિાનોિનિસ નેયહ્ણોઌોિગેસિ઼ શ્રડોેન નહે ૧૯૯૧ છઌોેન્યે થહોમાસ હોાનિગાસ નિ નહે ઉણોિદ ષનાોેસ ોન હસિ ડોિનિેસસ નો વે ષુપોેમે છ્ઙોાન હ્રુસનોિયિ, થહોમાસ' સ ાસસુાઌન ોન યઌમિસ ોડ સેશુાઌ હાાસસમેણન વય઼ શ્રણોિા હઌઌ ાન્દ ોનહોસ, ાન્દ નહે ડાિઞેે ોડ નહે ાઌમોસન ાઌઌ માઌ ઉષ ષેણાોે નો દસિટુાઌડિય઼ નહે ોવ઼ુસિઌ્યુ ન્ટુાઌડિેદિ થહોમાસ, પનોમપોેદોિમેન નોુ સે યોમપુોેન ાન્દ ોનહેન નેયહ્ણોઌોિગેસિ નો ાનનાયક માઌ પનવિ઼ઌિગો નિ નહે પોઌોિયિાઌ સયઽસોેમ નિ નહે ઉણોિદ ષનાોેસ ાન્દ નો નાઌઌય઼ ોિમેન નો સુપપોનન ોિમેન યાણદદોિોેસ઼ થહે ેસુઌન નિ નહે ૧૯૯૨ ઌયનોિનિ ોિાસ નહે ઌયનોિનિ ોડ મોેોિમેન યાણદદોિોેસ નહાન નિ ાનય઼ પનેવ઼ુસિે ઌયનોિનિ ાન્દ ા ગોેનાઌ ેળેયનોિનિ ોડ યોનસેનવ઼ાનિવિ઼ નુઌ઼ માણય઼ ડેમનિસિનસ હાવ઼ે નૌ સનાવઌસિહેદ ોિવસનોિસ, માઌિનિગા ઌસિનસ, ાન્દ ોનહેન ડોનમસ ોડ યય઼વેનયોમમુનયિાનોિનિ નો યિનયુઌાોે નહેનિ સનૅુગાગઌેસ઼ ડ઼ક્ીોસિ, શ્રડાયિાન- શ્રમોયિાન નિસુાગોેનન નિોેઌઌયનુાઌસ હાવ઼ે માદે ુસે ોડ વનોાદયાસન ાન્દ યોમપુોેન નેયહ્ણોઌોિગેસિ નો ાદવ઼ાન્યે નહેનિ સનૅુગાગઌેસ઼ હ્રોહ્ણ ઢસિકે (૧૯૯૪) હાસ દેસયનાવિદ સોમે શ્રડાયિાન- શ્રમોયિાન નાદોિ પનોળેયનસ નિ નહે "નેયહોસનૅુગાગઌેસ" ોડ નહે પનેસેણન ાગો ાન્દ નહે યેણનનાઌ નોઌ ોડ નહે મેદાો નિ ેયેણન સનૅુગાગઌેસ ાઁુન્દ નાયે ાન્દ ગોન્દે઼ન શ્રડાયિાન- શ્રમોયિાન "કણોઌદગોોિનનોિનિસ" ાેુ સનિગા નાદોિ, યોમપુોેન ોેનોિનકસ, ાન્દ ોનહેન મેદાો નો યિનયુઌાોે નહેનિ દોિાસ ાન્દ યુણોેન- કણોઌદગો ોન ા વ઼ાોેનોિય઼ ોડ સિસુસ, યોણોેસનોિનિગા નહે માનિસનોેમ ાન્દ ોડડોાનિગા ાઌોનણાનોિવિ઼ વૌસિ ાન્દ પોઌોિયિસ઼ ડ઼ક્ીોસિ, ાયનોિવ઼સિનસ નિ યોમમુનોિસિ ોડ યોઌોન -- ઌકિ શ્રોાકઌાન્દ, હાનઌેમ, ાન્દ ડ઼ોસ શ્રણગોઌેસ -- ાે સેનનનિગાુ પ યોમમુણોિય઼ યોમપુોેન ાન્દ મેદાો યેણોેનાસ નો નોાયહ નહે સકઌઌસ ોેયેસસાનય઼ નો સુનવિ઼વિ઼ નહે ોનસઌુગાહ્ણ ોડ નહે મેદાોડાનોિનિ ોડ

યુઠ્ઠુપે ।નદ યોમપુળેનિડિાળીનિ ોડ સોયેળિય઼ ળો પોપઠ નિ ળહેપિ યોમમુનળિતિસિ઼ શ્રોવવ઼ીુસિઠય઼, નગિહ્નીૌનિગા ।નદ ેાયળીનિાનય઼ ગનુાપસ યાન ।નદ હાવ઼ુે સેદ ળહે ર્નળેનેળ ળો પનોમોળે ળહેપિ પોઠળિયિાઠ ાગેનદાસ઼ ર્ન । સહોનળ ળમિ, ોેે યાને ।સિઠિય઼ ।યયેસસ ।ને શોળયિ ૈળિયહ' સ વનૌ ોડ ુ ઠળનાનગિહ્ન ૈવિસળિસ માનિળાનિદ વય઼ ળહે પ્યુ પ્યઠ્ઠશ પ્યઠાન, મય઼નાદિ નૌ- મ્માડ ગનુાપસ નિયઠ્ઠદનિગા શ્રનયાન મ્માળીનિસ ।નદ વ઼ાનુાસિ શ્ચાળનાળિ મઠિળિા ગનુાપસ઼ ર્નળેનેળ દસિયુસસીનિ ઠસિળસ ।ઠસો પનોમોળે ળહેસે વ઼ૌસિ ।નદ ળહે ુઠળનાનગિહ્ન સિે શળપેમેઠય઼ ।યળવિ઼ ોન માનય઼ યોમપુળેન ડેનુમસ, ।સ ૈઠઠ ।સ ળહેપિ નાદીૌ પનોગાનામસ ।નદ સળાળીનિસ, પુવઠયિ ।યયેસસ ળેઠવ઼સીૌનિ પનોગાનામસ, ડાશ યામપાગિનસ, વ઼દીૌ ।નદ વ઼ેન નોયક્ર મુસયિ પનોદુયળીનિ઼ થહેસે ગનુાપસ ।પે હાનદઠય઼ હાનમઠેસસ, હાવ઼નિગા પનોમોળેદ ળેનનોનાસિમ ોડ વ઼ાનુાસિ સોનળસ નાનગાનિગા ડનોમ યહ્નનયહ વુનનનિગાસ ળો ળહે વોમવનિગાસ ોડ પુવઠયિ વુઠિદનિગાસ઼ શ્રદોપળનિગા ટ્રાસી- ઙેનનિસિળ દસિયુાનસે ।નદ ળાયળયિસ ડેન ુઠળનાનગિહ્ન યુસેસ, ળહેસે ગનુાપસ હાવ઼ે વેન સુયયેસસડુઠ નિ પેયનુાળિનિગા ૈનક્રનિગા યઠાસસ મેમવેનસ દેવ઼ાસળાળેદ વય઼ ળહે દેવ઼ેઠપમેનળસ ોડ ગઠેવાઠ યાપળિાઠસિમ ૈહયિહ હાવ઼ે પેસુઠળેદ નિ ૈદિસપનોદુ નેમપઠોય઼મેનળ ડેન ળનાદળિીનિાઠ ડેનમસ ોડ નિદુસળનાિઠ, ાગનાયુઠ્ઠુનાઠ, ।નદુ નસક્રઠિઠદ ઠાવોન઼ થહે ર્નળેનેળ સિ ળહ્ુસ । યોનળેસળેદ ળેનનાનિ, ુ સેદ વય઼ ઙેડળ, ઢ઼ગિહ્ન, ।નદ છેનળેન ળો પનોમોળે ળહેપિ ૈોન ાગેનદાસ ।નદ નિળેપેસળસ઼ થહે પોઠળિયિાઠ વાળળઠેસ ોડ ળહે ડુઠુપે માય઼ ૈઠઠ વે ડોગહ્ન નિ ળહે સળપેળસ, ડાયળોપેસિ, પાનઠામિેનળસ, ।નદ ોળહેન સળિસ ોડ પાસળ સળનુગાગાઠ, વુળ ।ઠઠ પોઠળિયિાઠ સળનુગાગાઠ સિ ।ઠોદય઼ મેદાીળેદ વય઼ મેદાિ, યોમપુળેન, ।નદ નિડોનમાળીનિ ળેયહ્નોઠેગેસિ ।નદ ૈઠિઠ નિયપોસનિગાઠય઼ વે સો નિ ળહે ડુઠુપે઼ થહોસે નિળેપેસળેદ નિ ળહે પોઠળિયિસ ।નદ યુઠ્ઠુપે ોડ ળહે ડુઠુપે સહુોઠદ ળહેપેડોપે વે યઠોન ોન ળહે મિપોનળાનળ નોઠ ોડ ળહે નૌ પુવઠયિ સપહેપેસ ।નદ નિળેનવ઼ેને ।યયોનદનિગાઠય઼

Read the original Article by Douglas Kellner and then blatant copying in hindi version in his own name by Pankaj Parashar published in Pahal-86

After that read blatant intellectual theft/ copying of Maithili Poem by Pankaj Parashar Published in Aarambh-23 (March 2000) and then Shri Arun Kamal's original Hindi Poem "Naye Ilake Me" Ist published by Vani Prakashan in 1996.

Thanks Readers for coming out with so much information.

Intellectuals, the New Public Spheres, and Techno-Politics

By

Douglas Kellner

The category of the intellectual, like everything else these days, is highly contested and up for grabs. Zygmunt Bauman contrasts intellectuals as legislators who wished to legislate universal values, usually in the service of state institutions, with intellectuals as interpreters, who merely interpret texts, public events, and other artifacts, deploying their specialized knowledge to explain or interpret things for publics (1987; 1992). He thus claims that there is a shift from modern intellectuals as legislators of universal values who legitimated the new modern social order to postmodern intellectuals as interpreters of social meanings, and thus theorizes a depoliticalization of the role of intellectuals in social life.

I, however, want to make another distinction between functional intellectuals who serve to reproduce and legitimate the values of existing societies contrasted to critical-oppositional intellectuals who oppose the existing order. Sometimes oppositional intellectuals voice their criticisms in the name of existing values which they claim are being violated (i.e. truth, rights, rule by law, justice, etc.) and sometimes in the name of values or ideas which are said to be higher potentialities of the existing order (i.e. participatory democracy, socialism, genuine equality for women and blacks, ecological restoration, etc.). Functional intellectuals were earlier the classical ideologues, whereas today they tend to be functionaries of parties or interest groups, or mere technicians who devise more efficient means to obtain certain ends, or who apply their skills to increase technical knowledge in various specialized domains (medicine, physics, history, etc.) without questioning the ends, goals, or values that they are serving, or the social utility or disutility of their activities.

Functional intellectuals are thus servants of existing societies who are specialists in legitimation and technical knowledge, while oppositional intellectuals are critics who struggle to create a better society. Critical intellectuals were traditionally those who utilized their skills of speaking and writing to denounce injustices and abuses of power, and to fight for truth, justice, progress, and other universal values. In the words of Jean-Paul Sartre (1974: 285), "the duty of the intellectual is to denounce injustice wherever it occurs." For Sartre, the domain of the critical intellectual is to write and speak within the public sphere, denouncing oppression and fighting for human freedom and emancipation. On this model, a critical intellectual's task is to bear witness, to analyze, to expose, and to criticize a wide range of social evils. The sphere and arena of the critical/oppositional intellectual is the word, and his or her function is to describe and denounce injustice wherever it may occur.

The modern critical intellectual's field of action was what Habermas (1989) called the public sphere of democratic debate, political dialogue, and the writing and discussion of newspapers, journals, pamphlets, and books. Of course, not all intellectuals were critical or by any means progressive. With the rise of modern societies, there was a division between physical and mental labor, and intellectuals became those who specialized in mental labor, producing and distributing ideas and culture, with some opposing and some legitimating the established forms of society.

Thus, intellectuals were split into those critical and oppositional individuals who opposed injustice and oppression, as contrasted to functional intellectuals who produced technical knowledge that served the existing society and those producers of ideology who legitimated the forms of class, race, and gender domination and inequality in modern societies. In the following reflections, I want to discuss some challenges from postmodern theory to the classical conceptions of the critical-oppositional intellectual and some of the ways that new technologies and new public spheres offer new possibilities for democratic discussion and intervention, which call for a redefinition of the critical intellectual. Consequently, I will discuss some changes in the concept of the public sphere and how new technologies and new spheres of public debate and conflict suggest some new possibilities for redefining intellectuals in the present era.

The Public Sphere and the Intellectual

Democracy involves a separation of powers and popular participation in governmental affairs. During the era of the Enlightenment and 18th century democratic revolutions, public spheres emerged where individuals could discuss and debate issues of common concern (see Habermas 1989). The public was also a site where criticism of the state and existing society could circulate. The institutions and spaces of the 18th century democratic public sphere included newspapers, journals,

and a press independent from state ownership and control, coffee houses where individuals read newspapers and engaged in political discussion, literary salons where ideas and criticism were produced, and public assemblies which were the sites of public oratory and debate.

Bourgeois societies split, of course, across class lines and different class factions produced different political parties, organizations, and ideologies with each party attracting specialists in words and writing known as intellectuals. Oppressed groups also developed their own insurgent intellectuals, ranging from representatives of working class organizations, to women like Mary Wollstonecraft fighting for women's rights, to leaders of oppressed groups of color, ethnicity, sexual preference, and so on. Insurgent intellectuals attacked oppression and promoted action that would address the causes of oppression, linking thought to action, theory to practice. Thus, during the 19th century, the working class developed its own oppositional public spheres in union halls, party cells and meeting places, saloons, and institutions of working class culture. With the rise of Social Democracy and other working class movements in Europe and the United States, an alternative press, radical cultural organizations, and the spaces of the strike, sit-in, and political insurrection emerged as sites of an oppositional public sphere.

Intellectuals in modern societies were thus conflicted beings with contradictory social functions. The classical critical intellectual -- represented by figures like the French Enlightenment ideologues, Thomas Paine, Mary Wollstonecraft, and later figures like Heine, Marx, Hugo, Dreyfus, Du Bois, Sartre, and Marcuse -- was to speak out against injustice and oppression and to fight for justice, equality, and the other values of the Enlightenment. Indeed, the Enlightenment itself represents one of the most successful discourses of the critical individual, a discourse and movement which assigns intellectuals key social functions. And yet conservative intellectuals attacked the Enlightenment and its prodigy the French Revolution and produced discourses that legitimated every conceivable form of oppression from class to race, gender, and ethnic domination.

Against the EN and Sartre's model of the committed intellectual who is engaged for freedom (engagé), Michel Foucault complained that Sartre represented an ideal of the universal intellectual who fought for universal values such as truth and freedom, and assumed the task of speaking for humanity (1977). Against such an exalted and in his view exaggerated conception, Foucault militated for a conception of the specific intellectual who intervened on the side of the oppressed in specific issues, not claiming to speak for the oppressed, but to intervene as an intellectual in specific issues and debates.

Foucault's conception of the specific intellectual has been accompanied within a new postmodern politics with a turn toward new social movements as the domain of contemporary politics (Laclau and Mouffe 1985), replacing the state and the national realm of party politics. For a postmodern politics, power is diffuse and local and not merely to be found in macroinstitutions like the workplace, the state, or patriarchy. Macropolitics that goes after big institutions like the state or capital is to be replaced by micropolitics, with specific intellectuals intervening in spheres like the university, the prison, the hospital, or for the rights of specific oppressed groups like sexual or ethnic minorities. Global and national politics and theories are rejected in favor of more local micro politics, and the discourse and function of the intellectuals is seen as more specific, provisional, and modest than in modern theory and politics, subordinate to local struggles rather than more ambitious projects of emancipation and social transformation.

In my view, such a binary distinction between macro and micro theory and politics is problematical, as are absolutist commitments to either modern or postmodern theory tout court (Best and Kellner 1991 and 1997). Using the example of the events of 1989 that saw the collapse of communism, for instance, it is clear that the popular offensives against oppressive communist power combined micro and macropolitics, moving from local and specific struggles rooted in union halls, universities, churches, and small groups to mass demonstrations forcing democratic reforms and even classical mass insurrection aiming at an overthrow of the existing order, as in Romania. In these struggles, intellectuals played a variety of roles and deployed a diversity of discourses, ranging from the local and specific to the national and general.

Thus, whereas I would argue that postmodern theory contains important criticism of some of the illusions and ideologies of the traditional modern intellectual, it goes too far in rejecting the classical role of the critical intellectual. Moreover, I shall suggest that some of the modern conception of the critical and oppositional intellectual remains useful. I would, in fact, reject the particular/universal intellectual dichotomy in favor of developing a normative concept of the critical public intellectual. The public intellectual -- on this conception -- intervenes in the public sphere, fights against lies, oppression, and injustice and fights for rights, freedom, and democracy à la Sartre's committed intellectual. But a democratic public intellectual on my conception does not speak for others, does not abrogate or monopolize the function of speaking the truth, but simply participates in discussion and debate, defending specific ideas, values, or norms or principle that may be particular or universal. But if universal, like human rights, they are contextual, provisional, normative and general and not valid for all time. Indeed, rights are products of social struggles and are thus social constructs and not innate or natural

entities -- as the classical natural rights theorists would have it. But rights can be generalized, extended, and can take universal forms -- as with, for instance, a UN charter of human rights that holds that certain rights are valid for all individuals -- at least in this world at this point in time.

Consequently, one does not need all of the baggage of the universal intellectual to maintain a conception of a public or democratic intellectual in the present era. Intellectuals may well seek to occupy a higher ground than particularistic interests, a common ground seeking public interests and goods. But intellectuals should not abrogate the right to speak for all and should be aware that they are speaking from a determinate position with its own biases and limitations. Moreover, intellectuals should learn to get out of their particular frame of reference for more general ones, as well as to be able to take the position of the other, to empathize with more marginal and oppressed groups, to learn from them, and to support their struggles. To perpetually criticize oneself, to develop the capacity for self-reflection and critique -- as well as self-expression -- is thus part of the duty of the democratic intellectual.

New Technologies, New Public Spheres, and New Intellectuals

In the following discussion, I will argue that although the public intellectual should assume new functions and activities today, the critical capacities and vision of the classical critical intellectual are still relevant, thus I suggest building on models of the past, rather than simply throwing them over, as in some types of postmodern theory. I want to suggest that rethinking the intellectual and the public sphere today requires rethinking the relationship between intellectuals and technology.

In a certain sense, there was no important connection between the classical intellectual and technology. To be sure, intellectuals -- especially scientific scholars like Leonardo de Vinci, Galileo, or Darwin -- deployed technologies and entire groups like the British Royal Society were concerned with technologies and were indeed often inventors themselves. Some intellectuals used printing presses and were themselves printers and many, though not all, of the major intellectuals of the 20th century probably used a typewriter, though I personally know of no major studies of the relationship between the typewriter and intellectuals. Yet a classical intellectual did not have to intrinsically deploy any specific technology and there was thus no intimate connection between intellectuals and technology.

I now want to argue that in the contemporary high-tech societies there is emerging a significant expansion and redefinition of the public sphere and that these developments, connected primarily with media and computer technologies, require a reformulation and expansion of the concept of critical or committed intellectual,

as well as a redefinition of the public intellectual. Earlier in the century, John Dewey envisaged developing a newspaper that would convey "thought news," bringing all the latest ideas in science, technology, and the intellectual world to a general public, which would also promote democracy (see the discussion of this project in Czitrom 1982: 104ff). In addition, Bertolt Brecht and Walter Benjamin (1969) saw the revolutionary potential of new technologies like film and radio and urged radical intellectuals to seize these new forces of production, to "refunction" them, and to turn them into instruments to democratize and revolutionize society. Sartre too worked on radio and television series and insisted that "committed writers must get into these relay station arts of the movies and radio" (1974: 177; for discussion of his Les temps modernes radio series, see 177-180).

Previously, radio, television, and the other electronic media of communication tended to be closed to critical and oppositional voices both in systems controlled by the state and in private corporations. Public access and low power television, and community and guerilla radio, however, open these technologies to intervention and use by critical intellectuals. For some years now, I have been urging progressives to make use of new communications broadcast media (Kellner 1979; 1985; 1990; 1992) and have in fact been involved in a public access television program in Austin, Texas since 1978 which has produced over 600 programs and won the George Stoney Award for public affairs television. My argument was that radio, television, and other electronic modes of communication were creating new public spheres of debate, discussion, and information and that intellectuals who wanted to engage the public, to be where the people were at, and who thus wanted to intervene in the public affairs of their society should make use of these new media technologies and institutions, and develop new communication politics and new media projects.

In fact, one can argue that the victory of Reagan and the Right in the United States in 1980 was related to the Right's effective mobilization of conservative intellectuals and their use of television, radio, fax and computer communication, direct mailings, telephones, and other sophisticated political uses of new technologies, as well as more traditional print media. Furthermore, one could argue that Clinton's victory over Bush in 1992, and the surprising success of the Perot campaign, were related to effective uses of communication technologies. And more recently in the U.S., the Republican and rightwing success in the 1994 elections can be related to their use of talk radio, computer bulletin boards, and other technologies. Indeed, Newt Grinrich, William Bennett, and other conservatives have made very effective use of public access television, radio, computer networks, book promotion tours with high media exposure, and other technologies to promote their ideas. Yet it is generally acknowledged that the Clinton administration deployed much more effective communications politics in the 1996 election than the Dole

campaign. Effective CU politics are thus now essential to political success in national and local conflicts and often which side has the most effective politics of CU wins the struggle in question.

Consequently, I would argue that effective use of technology is essential in contemporary politics and that intellectuals who wish to intervene in the new public spheres need to deploy new communications media to participate in democratic debate and to shape the future of contemporary societies and culture. My argument is that first broadcast media like radio and television, and now computers have produced new public spheres and spaces for information, debate, and participation that contain both the potential to invigorate democracy and to increase the dissemination of critical and progressive ideas -- as well as new possibilities for manipulation, social control, and the promotion of conservative positions. But participation in these new public spheres -- computer bulletin boards and discussion groups, talk radio and television, and the emerging sphere of what I call cyberspace democracy require critical intellectuals to gain new technical skills and to master new technologies.

I am thus suggesting that intellectuals in the present moment must master new technologies and that there is thus a more intimate relationship between intellectuals and technology than in previous social configurations. To be an intellectual today involves use of the most advanced forces of production to develop and circulate ideas, to do research and involve oneself in political debate and discussion, and to intervene in the new public spheres produced by broadcasting and computing technologies. New public intellectuals should attempt to develop strategies that will use these technologies to attack domination and to promote education, democracy, and political struggle -- or whatever goals are normatively posited as desirable to attain. There is thus an intrinsic connection in this argument between the fate of intellectuals and the forces of production which, as always, can be used for conservative or progressive ends.

Toward a Radical Democratic Techno-Politics

A revitalization of democracy in capitalist societies will therefore require a democratic media politics. Such a politics could involve a two-fold strategy of, first, attempting to democratize existing media to make them more responsive to the "public interest, convenience, and necessity." In the United States, the media watchdog group FAIR (Fairness and Accuracy in Media) has developed this alternative, criticizing mainstream media for failing to assume their democratic and journalistic responsibilities and calling for an expansion of voices and ideas within the media system. Another strategy involves the development of oppositional media, alternatives to the mainstream, developed outside of the established media

system. On my view, both strategies are necessary for the development of a democratic media politics and it is a mistake to pursue one at the neglect of the other.

Developing a radical democratic media politics thus involves continued relentless criticism of the existing media system, attempts to democratize and reform it, and the production of alternative progressive media. On my account, democratizing our media system will require expansion of the alternative press, a revitalization of public television, an increased role for public access television, the eventual development of a public satellite system, democratized computer networks, and oppositional cultural politics within every sphere of culture, ranging from music to visual to print culture.

Community and Low-Power Radio

Community radio has long provided an alternative set of voices to the highly commercialized mainstream radio. Citizen-band (CB) and short-wave radio allows individuals to directly communicate with each other. Many countries have also experimented with low-power community radio, which enables groups to actually bring individuals out of their homes to public places to engage in discussion or communal activity. Low-power radio enables individuals to directly communicate with their neighbors through call-in telephone connections, or through discussions in nearby studios, and thus provide democratic and participatory institutions (see Box 3).

Low-power radio, however, is subject to quick suppression by the state, as happened in Japan which had an extensive low-power radio culture in play that was shut-down almost overnight when the state outlawed low-power broadcasting. In the U.S., there have been some low-power radio experiments, but the government too has cracked down on these local attempts to democratize radio. A democratic media politics should thus struggle for low-power radio and to increase the possibilities of direct communication through radio technology.

Ironically, despite the higher costs of television technology, there are probably more immediate possibilities for democratic alternative television than in radio. As mentioned, while low-power radio technologies are relatively inexpensive, they are easily suppressed by a state which opposes democratic and free-wheeling communication. Community radio has been curtailed by saturation of FM and AM frequencies and in most places there is simply not room for legal community radio stations. During the early 1990s in Austin, Texas, for instance, a vicious battle took place between the University of Texas and a local community-based co-op radio group for the remaining FM frequency band. Hence, it has been difficult to develop

new radio outlets for public communication with the previous limited spectrum allotment, although fiber-optic community cable system and the Internet also make possible a dramatic expansion of community and alternative road which could make possible Brecht's vision of a radio system with every individual a sender.

Public Access Television

Public access television has been for some decades now an established venue for alternative democratic communication. The rapid expansion of public access television in the 1970s in the U.S. provided new possibilities for progressive individuals and groups to produce video programming that cuts against the conservative programming which dominates mainstream television in the United States. Progressive access programming is now being cablecast regularly in such places as New York, Los Angeles, Boston, Chicago, Atlanta, Madison, Urbana, New Orleans, Austin, and perhaps as many as 2,000 other towns or regions of the country. Public access television, in most cases, provides free equipment and airtime to individuals and groups who want to make their own programming. Usually, one must take a course to actually use studio and editing equipment and a few systems lease the equipment and airtime, but, for the most part, where there are public access channels, the cable systems make them available for public use and they are usually managed by an independent body, answerable to the community, and often financed by the cable system.

When cable television began to be widely introduced in the early 1970s, the Federal Communications Commission mandated in 1972 that "beginning in 1972, new cable systems {and after 1977, all cable systems} in the 100 largest television markets be required to provide channels for government, for educational purposes, and most importantly, for public access." This mandate suggested that cable systems should make available three public access channels to be used for state and local government, education, and community public access use. "Public access" was construed to mean that the cable company should make available equipment and air time so that literally anybody could make noncommercial use of the access channel, and say and do anything that they wished on a first-come, first-served basis, subject only to obscenity and libel laws and prohibitions against advertising and pitches for money. Creating an access system required, in many cases, setting up a local organization to manage the access channels, though in other systems the cable company itself managed the access center.

In the beginning, however, few, if any, cable systems made as many as three channels available, but some systems began offering one or two access channels in the early to mid 1970s. The availability of access channels depended, for the most part, on the political clout of local governments and committed, and often unpaid,

local groups to convince the cable companies, almost all privately owned, to make available an access channel. Here in Austin, for example, a small group of video activists formed Austin Community Television in 1973 and began broadcasting with their own equipment through the cable system that year. Eventually, they received foundation and CentertainmentA government grants to support their activities, buy equipment, and pay regular employees salaries. A new cable contract signed in the early 1980s called for the cable company to provide $500,000 a year for access and after a difficult political struggle, which I shall mention later, were able to get at least $300,000-$400,000 a year to support Austin Community Television activities.

A 1979 Supreme Court decision, however, struck down the 1972 FCC ruling on the grounds that the FCC did not have the authority to mandate access, an authority which supposedly belongs to the U.S. Congress. Nonetheless, cable was expanding so rapidly and becoming such a high-growth competitive industry that city governments considering cable systems were besieged by companies making lucrative offers (20 to 80 channel cable systems) and were able to negotiate access channels and financial support for a public access system. Consequently, public access grew significantly during the early 1980s.

Where there are operative public access systems, individuals have promising, though not sufficiently explored, possibilities to produce and broadcast their own television programs. In Austin, Texas, for example, there have been weekly anti-nuclear programs, black and chicano series, gay programs, countercultural and anarchist programs, an atheist program, feminist and women's programs, labor programming, and a weekly progressive news magazine, Alternative Views, with which I am involved, that has produced over 470 hour-long programs from 1978 to the present on a wide variety of topics. We combine news reports from alternative sources with discussion, documentaries, and video-footage from alternative sources. Paper Tiger Television in New York combines critique of corporate media by media critics with imaginative sets, visuals, editing, and so on. A labor-oriented program, The Mill Hunk News, in Pittsburgh used to combine news reports of labor issues with documentary interviews with workers, music-videos, and other creative visuals, while Labor Beat in Chicago also uses documentary footage, music, drama, and collages of images, as well as interview and talking head formats, to present alternative information (see Box 4).

There have been some experiments with national progressive satellite networks, although they have suffered from inadequate funding and the failure of often conservative-owned cable systems to carry progressive programming. While public access television is still in a relatively early stage of development in the U.S. and Europe, it contains the promise of providing a different type of alternative television.

Despite obstacles to its use, public access provides the one institution in the commercial and state broadcasting systems that is at least potentially open to progressive intervention. It is self-defeating simply to dismiss broadcast media as tools of manipulation and to think that print media are the only tools of communication and political education open to progressives. Surveys have shown that people take more seriously individuals, groups, and politics that appear on TV; thus the use of television could help progressive movements and struggles gain legitimacy and force in the shifting and contradictory field of U.S. politics. The Right has been making effective use of new technologies and media of communication, and for progressives to remain aloof is a luxury that they can no longer afford.

Of course, many will claim that democratic politics involves face-to-face conversation, discussion, and producing consensus. But for intelligent debate and consensus to be reached, individuals must be informed and radio, television, and computers are important sources of information in the present age. Thus I am not proposing that media politics supplement all political activity and organizing, but am suggesting that a media politics should be developed to help activist groups and individuals obtain and disseminate information. In Austin, Texas, for instance, a group, Council for Public Media, has been working to inform activist groups how they can get information through the new computer technologies and how they can use the press, broadcast media, and other methods of communication to get their messages out. Activist groups are coming to see that media politics is a key element of political organization and struggle and thus more work on developing institutions and strategies for media politics is necessary.

Indeed, if progressive groups and movements are to produce a genuine alternative to the Right, they must increase their mass base and circulate their struggles to more segments of the population. After all, most people get their news and information from television, and the broadcast media arguably play a decisive role in defining political realities, shaping public opinion, and determining what is or what is not to be taken seriously. If progressives want to play a role in local and national political life, they must come to terms with the realities of electronic communication and computer technologies in order to develop strategies to make use of new technologies and possibilities for intervention.

The Democratization of Computers and Information

Other possibilities for expanding a system of democratic techno-politics reside in new computer and information technologies. It appears that there will be a merger of entertainment and information centers in the homes of the future with all possible print media information accessible by computer and all visual media entertainment and information resources available for home

computer/entertainment center access. But the threat--and likelihood if alternative concepts are not developed and disseminated--is that this information and entertainment material will be thoroughly commodified, available only to those who can afford to pay. Consequently, it is necessary to begin devising public alternatives to these private/corporate information and entertainment systems of the future.

Given the growing importance of computers and information in the new techno-capitalist society, producing new information networks and systems must therefore be an essential ingredient of a progressive media and information politics. The computerization of the world is well underway and possibilities are growing for new information networks and computer communication systems. To avoid corporate and government monopolization and control of information, new public information networks and centers are also necessary so that citizens of the future can have access to the information needed to intelligently participate in a democratic society. For computers, like broadcasting, can be used for or against democracy.

Indeed, computers are a potentially democratic technology. While broadcast communication tends to be one-way and unidirectional, computer communication is potentially bi-, or even omni-, directional. Individuals can use computers to do word-processing to communicate with other individuals, or can directly communicate with others via modems which use the telephone to link individuals with each other. Modems can tap into community bulletin boards, web sites, or computer conference programs, that make possible a new type of public communication and progressives should intervene in these information modes as well as participating in public debate and discussion. For instance, many computer bulletin boards and web sites have a political debate conference where individuals can type in their opinions and other individuals can read them and if they wish respond. This constitutes a new form of public dialogue and interaction.

Computer data bases and web sites provide essential sources of information and new technologies that tremendously facilitates information-searching and research. Mainstream data bases include Lexis/Nexis and Dialogue which contain a tremendous array of newspapers, magazines, journals, transcripts of TV programs, news conferences, congressional hearings, and newsletters, reproduced in full. Alternative data bases include Peacenet which has over 600 conferences on topics of ecology, war and peace, feminism, and hundreds of other topics. Here progressives put in alternative information and some of the conferences have lively debates. Between the mainstream and alternative computer data bases, individuals and groups can access a tremendous amount of information in a relatively short time.

I was able to research my book on the media and the Gulf war, for instance, because I was able to access information on various topics from a variety of sources

simply by punching in code words which enabled me to discern the conflicting media versions of the Gulf war and to put in question the version being promoted by the Bush administration and Pentagon. Eventually, the lies and disinformation promoted by the U.S. government in the war were thoroughly exposed by a variety of sources, accessible to computer data base searches. Corporations, government institutions, the major political parties, and other groups are taking advantage of these computer data bases and progressive must learn to access and use them to produce the information necessary to prevail in the public debates of the future.

But the politics of information in the future must struggle to see that alternative information is accessible in mainstream computer data bases, as well as alternative ones. Many data bases and information services omit leftist, feminist, environmentalist, and other alternative information sources from their listings, thus in effect shutting out radical alternatives in information sources, much as the broadcasting networks exclude dissident voices from broadcast communication. Progressive groups and alternative publications should struggle to make sure that their information sources and services are listed in data base bibliographies and source material.

Yet the proliferation of the World Wide Web enables independent and alternative groups and individuals to creat their own web sites, to make their information available to people through the globe, often free of charge. In the next section, I will give some examples of how computer techno-politics have deployed web sites, bulletin-boards, mailing lists, and email campaigns to promote a variety of political struggles. First, however, I want to conclude this section by noting that a synergy is emerging between the new sources of information, new media and technologies, and political organization and struggle. Print and broadcast media organs can obtain information from computers and disseminate it to the public. Political groups can obtain information from these sources and disseminate it back through print, broadcast, and computer technologies. Information critical of, say, transnational corporate policies can be disseminated through a multiplicity of sites, so political groups need to be aware of the potential for the transmission of information through a variety of media in the contemporary era.

Moreover, the Internet may be a vehicle for new forms of alternative radio, television, film, art, and every form of culture as well as information and print material. New multimedia technologies are already visible on web sites and Internet radio and television is now in its infancy. This would truly make possible Brecht's dream of a communications system where everyone was a sender and receiver and would greatly proliferate the range and diversity of voices and texts and would also no doubt give a new dimension of the concept of information/cultural overload.

Indeed, we must obviously gain a whole set of new literacies to use and deploy the new technologies (see Kellner, forthcoming). But in conclusion, I want to limit my focus on new technologies and techno-politics of the present day.

Techno-Politics and Political Struggle

Since new technologies are in any case dramatically transforming every sphere of life, the key challenge is how to theorize this great transformation and how to devise strategies to make productive use of the new technologies. Obviously, radical critique of dehumanizing, exploitative, and oppressive uses of new technologies in the workplace, schooling, public sphere, and everyday life are more necessary than ever, but so are strategies that use new technologies to rebuild our cities, schools, economy, and society. I want to focus, therefore, in the remainder of this section on how new technologies can be used for increasing democratization and empowering individuals.

Given the extent to which capital and its logic of commodification have colonized ever more areas of everyday life in recent years, it is somewhat astonishing that cyberspace is by and large decommodified for large numbers of people -- at least in the overdeveloped countries like the United States. In the U.S., government and educational institutions, and some businesses, provide free Internet access and in some cases free computers, or at least workplace access. With flat-rate monthly phone bills (which I know do not exist in much of the world), one can thus have access to a cornucopia of information and entertainment on the Internet for free, one of the few decommodified spaces in the ultracommodified world of technocapitalism.

Obviously, much of the world does not even have telephone service, much less computers, and there are vast inequalities in terms of who has access to computers and who participates in the technological revolution and cyberdemocracy today. Critics of new technologies and cyberspace repeat incessantly that it is by and large young, white, middle or upper class males who are the dominant players in the cyberspaces of the present, and while this is true, statistics and surveys indicate that many more women, people of color, seniors, and other minority categories are becoming increasingly active. Moreover, it appears that computers are becoming part of the standard household consumer package and will perhaps be as common as television sets by the beginning of the next century, and certainly more important for work, social life, and education than the TV set. Moreover, there are plans afoot to wire the entire world with satellites that would make the Internet and communication revolution accessible to people who do not now even have telephones, televisions, or even electricity.

However widespread and common -- or not -- computers and new technologies become, it is clear that they are of essential importance for labor, politics, education, and social life, and that people who want to participate in the public and cultural life of the future will need to have computer access and literacy. Moreover, although there is the threat and real danger that the computerization of society will increase the current inequalities and inequities in the configurations of class, race, and gender power, there is the possibility that a democratized and computerized public sphere might provide opportunities to overcome these inequities. I will accordingly address below some of the ways that oppressed and disempowered groups are using the new technologies to advance their interests and progressive political agendas. But first I want to dispose of another frequent criticism of the Internet and computer activism.

Critics of the Internet and cyberdemocracy frequently point to the military origins of the technology and its central role in the processes of dominant corporate and state powers. Yet it is amazing that the Internet for large numbers is decommodified and is becoming more and more decentralized, becoming open to more and more voices and groups. Thus, cyberdemocracy and the Internet should be seen as a site of struggle, as a contested terrain, and progressives should look to its possibilities for resistance and circulation of struggle. Dominant corporate and state powers, as well as conservative and rightist groups, have been making serious use of new technologies to advance their agendas and if progressives want to become players in the political battles of the future they must devise ways to use new technologies to advance a progressive agenda and the interests of the oppressed and forces of resistance and struggle.

There are by now copious examples of how the Internet and cyberdemocracy have been used in progressive political struggles. A large number of insurgent intellectuals are already making use of these new technologies and public spheres in their political projects. The peasants and guerilla armies struggling in Chiapas, Mexico from the beginning used computer data bases, guerrilla radio, and other forms of media to circulate their struggles and ideas. Every manifesto, text, and bulletin produced by the Zapatista Army of National Liberation who occupied land in the southern Mexican state of Chiapas in 1994 was immediately circulated through the world via computer networks. In January 1995, the Mexican government moved against the movement and computer networks were used to inform and mobilize individuals and groups throughout the world to support the Zapatistas struggles against repressive Mexican government action. There were many demonstrations in support of the rebels throughout the world, prominent journalists, human rights observers, and delegations travelled to Chiapas in solidarity and to report on the uprising, and the Mexican and U.S. governments were bombarded with messages

arguing for negotiations rather than repression; the Mexican government accordingly backed off their repression of the insurgents and as of this writing in August 1997, they have continued to negotiate with them.

Earlier, audiotapes were used to promote the revolution in Iran and to promote alternative information by political movements throughout the world (see Downing 1984). The Tianenaman Square democracy movement in China and various groups struggling against the remanents of Stalinism in the former communist bloc and Soviet Union used computer bulletin boards and networks, as well as a variety of forms of communications, to circulate their struggles. Opponents involved in anti-nafta struggles made extensive use of the new communication technology (see Brenner 1994 and Fredericks 1994). Such multinational networking and circulation of information failed to stop nafta, but created alliances useful for the struggles of the future. As Witheford (forthcoming) notes: "The anti-nafta coalitions, while mobilizing a depth of opposition entirely unexpected by capital, failed in their immediate objectives. But the transcontinental dialogues which emerged checked --though by no means eliminated--the chauvinist element in North American opposition to free trade. The movement created a powerful pedagogical crucible for cross-sectoral and cross-border organizing. And it opened pathways for future connections, including electronic ones, which were later effectively mobilized by the Zapatista uprising and in continuing initiatives against maquilladora exploitation."

Thus, using new technologies to link information and practice, to circulate struggles, is neither extraneous to political battles nor merely utopian. Even if material gains are not won, often the information circulated or alliances formed can be of use. For example, two British activists were sued by the fastfood chain McDonald's for distributing leaflets denouncing the corporation's low wages, advertising practices, involvement in deforestization, harvesting of animals, and promotion of junk food and an unhealthy diet. The activists counterattacked, organized a McLibel campaign, assembled a website with a tremendous amount of information criticizing the corporation, and assembled experts to testify and confirm their criticisms. The five-year civil trial, ending ambiguously in July 1997, created unprecedented bad publicity for McDonald's and was circulated throughout the world via Internet websites, mailing lists, and discussion groups. The McLibel group claims that their website was accessed over twelve million times and the Guardian reported that the site "claimed to be the most comprehensive source of information on a multinational corporation ever assembled" and was indeed one of the more successful anticorporate campaigns (February 22, 1996; visit http://www. envirolink.org/mcspotlight/home.html).

Many labor organizations are also beginning to make use of the new technologies. Mike Cooley (1987) has written of how computer systems can reskill rather than deskill workers, while Shosana Zuboff (1988) has discussed the ways in which high-tech can be used to "informate" workplaces rather than automate them, expanding workers knowledge and control over operations rather than reducing and eliminating it. The Clean Clothes Campaign, a movement started by Dutch women in 1990 in support of Filipino garment workers has supported strikes throughout the world, exposing exploitative working conditions (see their website at http://www.cleanclothes.org/1/index.html). In 1997, activists involved in Korean workers strikes and Merseyside dock strike in England used websites to gain international solidarity (for the latter see http://www.gn.apc.org/lbournet/docks/).

Most labor organizations, such as the North South Dignity of Labor group, note that computer networks are useful for coordinating and distributing information, but cannot replace print media that is more accessible to more of its members, face-to-face meetings, and traditional forms of political struggle. Thus, the trick is to articulate one's communications politics with actual political movements and struggles so that cyberstruggle is an arm of political battle rather than its replacement or substitute. The most efficacious Internet struggles have indeed intersected with real struggles ranging from campaigns to free political prisoners, to boycotts of corporate projects, to actual political struggles, as noted above.

Hence, to capital's globalization from above, cyberactivists have been attempting to carry out globalization from below, developing networks of solidarity and circulating struggle throughout the globe. To the capitalist international of transnational corporate globalization, a Fifth International of computer-mediated activism is emerging, to use Waterman's phrase (1992), that is qualitatively different from the party-based socialist and communist Internationals. Such networking links labor, feminist, ecological, peace, and other progressive groups providing the basis for a new politics of alliance and solidarity to overcome the limitations of postmodern identity politics (on the latter, see Best and Kellner 1991, 1997, and forthcoming).

Moreover, a series of struggles around gender and race are also mediated by new communications technologies. After the 1991 Clarence Thomas Hearings in the United States on his fitness to be Supreme Court Justice, Thomas's assault on claims of sexual harassment by Anita Hill and others, and the failure of the almost all male US Senate to disqualify the obviously unqualified Thomas, prompted women to use computer and other technologies to attack male privilege in the political system in the United States and to rally women to support women candidates. The result in

the 1992 election was the election of more women candidates than in any previous election and a general rejection of conservative rule.

Many feminists have now established websites, mailing lists, and other forms of cybercommunication to circulate their struggles. Likewise, African-American insurgent intellectuals have made use of broadcast and computer technologies to advance their struggles. John Fiske (1994) has described some African-American radio projects in the "techostruggles" of the present age and the central role of the media in recent struggles around race and gender. African-American "knowledge warriors" are using radio, computer networks, and other media to circulate their ideas and counter-knowledge on a variety of issues, contesting the mainstream and offering alternative views and politics. Likewise, activists in communities of color -- like Oakland, Harlem, and Los Angeles -- are setting up community computer and media centers to teach the skills necessary to survive the onslaught of the mediazation of culture and computerization of society to people in their communities.

Obviously, rightwing and reactionary groups can and have used the Internet to promote their political agendas. In a short time, one can easily access an exotic witch's brew of ultraright websites maintained by the Ku Klux Klan, myriad neo-Nazi groups including Aryan Nations and various Patriot militia groups. Internet discussion lists also promote these views and the ultraright is extremely active on many computer forums, as well as their radio programs and stations, public access television programs, fax campaigns, video and even rock music production. These groups are hardly harmless, having promoted terrorism of various sorts ranging from church burnings to the bombings of public buildings. Adopting quasi-Leninist discourse and tactics for ultraright causes, these groups have been successful in recruiting working class members devastated by the developments of global capitalism which have resulted in widespread unemployment for traditional forms of industrial, agricultural, and unskilled labor.

The Internet is thus a contested terrain, used by Left, Right, and Center to promote their own agendas and interests. The political battles of the future may well be fought in the streets, factories, parliaments, and other sites of past struggle, but all political struggle is already mediated by media, computer, and information technologies and will increasingly be so in the future. Those interested in the politics and culture of the future should therefore be clear on the important role of the new public spheres and intervene accordingly.

पंकज पराशर

बुद्धिजीवी, लोक वृत्त और टेक्नो पॉलिटिक्स



बौद्धिक जगत में इन दिनों बुद्धिजीवियों का वर्गीकरण भी विवाद का विषय बनता जा रहा है। जिगमेंट बोमन बुद्धिजीवियों को समाज की एक ऐसी इकाई के रूप में देखते हैं जो सामाजिक संस्थाओं की सेवा करने के लिए वैश्विक मूल्यों का विधेयन करते हैं। इस वर्ग के बुद्धिजीवियों के बारे में ऐसा माना जाता है कि ये बुद्धिजीवी अपनी योग्यता के आधार पर आम जनमानस के लिए मानवाकृतियों, लोक में घटित घटनाओं आदि की बेहतर व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। अमेरिकी बौद्धिक जगत में इन दिनों बुद्धिजीवियों की भूमिका को लेकर जो गरमा-गरम बहस छिड़ी हुई है उनमें से एक धड़े का मानना है कि फिलवक्त जो सामाजिक और वैश्विक हालात हैं उसमें बुद्धिजीवियों की स्थिति में आधुनिक बुद्धिजीवियों से लेकर उत्तर आधुनिक बुद्धिजीवियों तक में बदलाव आया है। दिलचस्प यह है कि पश्चिम के बुद्धिजीवियों में जैसे ही यह बदलाव आया उसका त्वरित असर हिंदी के उन उत्तर-आधुनिक बुद्धिजीवियों पर भी पड़ा, जो कुछ साल पहले तक उत्तर-आधुनिकता के भारतीय प्रवक्ता होने का दावा करते नहीं अघाते थे। जहाँ एक ओर आधुनिक बुद्धिजीवी वैश्विक मूल्यों के कार्यकारी इकाई के तौर पर नई आधुनिक समाज-व्यवस्था का विधेयन करते हैं वहीं दूसरी ओर इस प्रकार सामाजिक जीवन में बुद्धिजीवियों की भूमिका के राजनीतिक विकेन्द्रीकरण के सिद्धांत का भी प्रतिपादन करते हैं।

नोम चोम्स्की के बाद की पीढ़ी में वामपंथी रुझान के कवियों/विचारकों और बुद्धिजीवियों की संख्या में निरंतर बढ़ोत्तरी जारी है। बुश प्रशासन अपनी तमाम नीतियों को लेकर पनप रहे असंतोष और मुखर होते प्रतिरोधी स्वर को लेकर भी हैरान-परेशान है। गौरतलब है कि 2003 में इराक हमले की पीठिका बनते समय भी वहां के बुद्धिजीवियों ने बुश प्रशासन की आलोचना की थी और आज आम जनता वहाँ से अमेरिकी सैनिकों की अविलंब वापसी की मांग कर रही है। मगर राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू. बुश के सिपहसालारों ने इन विरोधों की न तब परवाह की और न अब ऐसा लगता है कि उन पर कोई खास असर पड़ा है। अमेरिका स्थित कोलंबिया यूनिवर्सिटी में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर डगलस कैलनर ने कुछ वर्ष पूर्व, 2005 के आखिर में छपी अपनी किताब 'मीडिया स्पेक्टैकल्स एंड द क्राइसिस ऑफ डेमोक्रेसी' में इन मुद्दे पर जोरदार बहस की है कि इन दिनों मीडिया में जिन मुद्दों को जनहित के नाम पर उठाया जा रहा है वह असल में जनहित के वास्तविक मुद्दों से लोगों का ध्यान हटाने की एक शातिर चाल है। 9/11 के बाद मीडिया ने जिस तरह से अपना चेहरा और चाल दोनों को बदला है – कैलनर खास तौर पर इससे चिंतित होते हैं और बुद्धिजीवियों के बीच खास-

खास बिन्दुओं पर चिंतन का आह्वान करते हैं। इसी तरह 'द वार फॉर द व्हाइट हाउस' किताब में वे अमेरिकी विदेश, रक्षा और आर्थिक नीतियों की गंभीरता से नये-नये तथ्यों की रोशनी में न सिर्फ आलोचना करते हैं बल्कि खासी मज़म्मत भी करते हैं।

अभी हाल ही में छपी वाशिंगटन डी.सी. के बाशिंदे मिखाइल मैकडोनाल्ड की 'द अमेरिकन इंटरेस्ट' नामक छपी किताब में खास तौर पर अमरीकी हितों और वैश्विक परिदृश्य की पड़ताल की गई है। उन्होंने एक और बेहद दिलचस्प किताब 'द स्ट्रेंजर इन क्राउफोर्ड' में जार्ज बुश और कालजयी फ्रेंच उपन्यासकार अल्बेयर कामू के बीच तुलना करते हुए एक किताब ही लिख मारी है। बहरहाल, असली मुद्दा यह है कि मीडिया की बदली प्राथमिकता और चाल की बेहतर समीक्षा प्रस्तुत करते हुए डगलस कैलनर ने 'टेक्नो पॉलिटिक्स' जैसी शब्दावली के सहारे बुद्धिजीवियों की भूमिका और नई-नई आने वाली चुनौतियों को रेखांकित किया है। बुद्धिजीवियों को दो वर्गों में वर्गीकृत करते हुए कैलनर कार्यकारी बुद्धिजीवी (फंक्शनल इंटेलेक्चुअल) के बारे में कहते हैं, ये स्थापित सामाजिक मूल्यों का उत्पादन और विधेयन करते हैं। जबकि इसके ठीक विपरीत विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी (क्रिटिकल-अपोजीशनल इंटेलेक्चुअल) स्थापित सामाजिक व्यवस्था का विरोध करते हैं। कभी-कभी विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी समाज में मौजूद मूल्यों के खिलाफ ही अपनी आवाज बुलंद करते हैं और ऐसा मानकर चलते हैं कि इन मूल्यों का समाज में दबदबा बढ़ रहा है। मसलन कानून, न्याय, सत्य और अधिकार आदि। ऐसे बुद्धिजीवी कई बार और भी गंभीर मुद्दों का विरोध करते हैं - जैसे लोकतंत्र, समाजवाद, अश्वेत लोग और स्त्रियों की समानता आदि।

कार्यकारी बुद्धिजीवी पहले रूढ़ और काफी हद तक आदर्शवादी थे, जबकि आज उन वर्गों और तकनीकविदों के हितों के संरक्षक बने हुए हैं जो परिणामों तक पहुँचने के लिए समर्थ साधनों का इस्तेमाल करते हैं। ये बुद्धिजीवी अपनी क्षमताओं को विभिन्न क्षेत्रों, जैसे दवा, भौतिक विज्ञान और अतीत में मौजूद तकनीकी ज्ञान को बढ़ाने के लिए करते हैं। बिना नतीजे की ओर उँगली उठाये और किसी चीज की परवाह किये बगैर वे जिन मूल्यों की स्थापना और वापसी के लिए प्रयत्नशील रहते हैं - उसकी उपयोगिता और अनुपयोगिता पर आज विमर्श करना बहुत आवश्यक है।

कार्यकारी बुद्धिजीवी समाज को बेहतर बनाने (अपने तरीके से) के लिए तकनीकी जानकारियों में दक्षता हासिल करते हैं, वहीं विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी आलोचक सामाजिक बेहतरी के लिए संघर्षरत हैं। देश-विदेश में ऐसे बुद्धिजीवियों की एक लंबी फेहरिस्त है जिन्होंने आंदोलनों में न सिर्फ शिरकत की, बल्कि ता-उम्र के लिए उससे जुड़ ही गए। तेलुगू में वरवर राव, अंग्रेजी में अरुंधति राय, बांग्ला में महाश्वेता देवी आदि लेखकों-बुद्धिजीवियों को भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी परंपरागत तौर पर अपने ज्ञान और लेखन का प्रयोग अन्याय, शक्ति के दुरुपयोग, सत्य के लिए संघर्ष और अन्य वैश्विक मूल्यों के खिलाफ आवाज उठाने के लिए करते हैं। ज्याँ पॉल सार्त्र के शब्दों में कहें तो, ''विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी का कार्यक्षेत्र आम जनता तक सीमित है।'' सार्त्र के इस कथन के आधार पर एक विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी का काम समाज की विभिन्न कुरीतियों का विश्लेषण करना तथा उनको और अधिक मुखरता प्रदान करना है। यह बुद्धिजीवी के शाब्दिक हथियार हैं जिनके जरिये उन्हें समाज में कहीं भी हो रहे अन्याय का विरोध करना है। हेबरमास (1989) के कथन की रोशनी में अगर देखें तो ''आधुनिक समय में विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी का कार्यक्षेत्र आम जनता से जुड़े मुद्दे, राजनीतिक वाद-विवाद और विभिन्न किताबों, पत्र-पत्रिकाओं में छपी चीजों पर लिखना और विमर्श करना है।'' हालांकि सभी विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी वैचारिक रूप से प्रगतिशील नहीं हैं, बावजूद इसके समाज के आधुनिक होने से बुद्धिजीवियों की भौतिक और मानसिक दशाओं में तब्दीलियाँ आई हैं। इन दिनों बुद्धिजीवी वे लोग हैं जो नये विचारों और नये

संस्कारों को पैदा करने में माहिर होते हैं। इनमें से भी कुछ बुद्धिजीवी वर्तमान समाज का समर्थन करते हैं तो कुछ उसका विरोध करते हैं। शायद इन वजहों से भी बुद्धिजीवी, कार्यकारी और विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी के रूप में बँट गए। कार्यकारी बुद्धिजीवी जहाँ एक तरफ समाज की सेवा तकनीकी जानकारियों से करते हैं वहीं नये आदर्श पैदा करके वर्ग, रंग और लिंग को वैधता प्रदान करते हैं। कहना न होगा कि अपने देश में भी सांप्रदायिक शक्तियों के सत्तासीन होते ही ऐसे-ऐसे तुर्रम खाँ, 'बुद्धिजीवी' का बिल्ला लगाये हुए कभी 'वाजपेयी क्लब' बना रहे थे, तो कभी उनकी कविताओं को नये-नये 'रागों' में गाकर सत्ता की आराधना में तन्मयता दिखा रहे थे – अभूतपूर्व समाजवादियों के समर्थन पर टिकी भाजपा राज के समय।

विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी अन्यायी और शोषकों के खिलाफ आवाज बुलंद करते हैं। जबकि विरोधी खेमे के परंपरागत बुद्धिजीवी उत्तर आधुनिक सिद्धांतों द्वारा पैदा की गई चुनौतियों के साथ-साथ नई तकनीकों द्वारा तलाशी गई लोकतांत्रिक बहसों की संभावनाओं पर चर्चा करना मुफीद समझते हैं। यह सारी बातें विरोधी खेमे के बुद्धिजीवी और उनकी भूमिका को ठीक से पुनर्परिभाषित करने की माँग करता है।

लोकक्षेत्र (पब्लिक स्फीयर) और बुद्धिजीवी

अगर मूल परिभाषा पर नजर दौड़ाएं तो लोकतंत्र मूलतः सत्ता के विकेन्द्रीकरण के साथ-साथ सरकारी मामलों में जनता की भागीदारी का नाम है। पुनर्जागरण और 18 वीं शताब्दी की राजनीतिक क्रांति के काल में एक ऐसा लोकक्षेत्र उभरकर सामने आया जहाँ आम आदमी अपने से जुड़े मुद्दों पर बहसें कर सकता था। दिलचस्प यह है कि उस काल में सरकार की आलोचना खास तौर पर आम जनता तक पहुँचाई जाती थी। खुद को अभिव्यक्त करने का साधन बना अखबार और पत्र-पत्रिकाएं। उस वक्त तत्कालीन प्रेस की आजादी आम जन को काफी कुछ सही रूप से चीजों को जानने-समझने का रास्ता फराहम कराती थी। वैचारिक आदान-प्रदान के लिए लोग कॉफी हाउस, पान की दुकान, नाई की दुकान आदि जगहों पर बैठा करते थे और वहीं विभिन्न मुद्दों पर चर्चाएं छिड़ जाती थीं। दुखद यह है कि बूर्ज्वा समाज के टूटने के बाद तमाम लोगों ने अपनी-अपनी पार्टियाँ बना लीं, संस्थाएं बना लीं और विचारधाराएं विकसित कर लीं। बकौल डगलस कैलनर, "आम जनता को रिझाने के लिए विभिन्न पार्टी और संस्था के लोग लिखने लगे और खुद को खुद के ही द्वारा बुद्धिजीवी का दर्जा दे दिया। देखते-देखते शोषित वर्गों ने भी अपने बुद्धिजीवी पैदा कर लिए। हालांकि ये बुद्धिजीवी विद्रोही विचारधारा के थे और शोषकों के मुकाबले शोषितों के बुद्धिजीवियों में खास बात यह थी, वे समाज के सारे तबके का प्रतिनिधित्व करते थे।" ध्यान रहे कि मेरी वोलेस्टोनक्राफ्ट जैसी महिलाओं ने महिला अधिकारों के लिए आवाज बुलंद की थी। शोषित वर्ग के विद्रोही विचारधारा वाले इन बुद्धिजीवियों ने दमन और उनके कारणों के खिलाफ तो आवाज बुलंद की ही साथ ही इसके हल के लिए इनके समाधानों को सिद्धांत से उठाकर वास्तविकता के धरातल पर प्रयोग करने की बात कही। इसलिए 19 वीं शताब्दी में कर्मचारी वर्ग के लोगों ने शोषकों के खिलाफ अपना एक अलग ही लोकक्षेत्र विकसित किया। यूनियन हॉलों, दफ्तरों, सार्वजनिक स्थानों में इनकी सभाएं, चर्चाएं होने लगीं। इसी दौर में बकौल जुरगेन हेबरमास, "अमेरिका और यूरोप में पनप रहे लोकतंत्र और श्रमिक आंदोलनों ने एक वैकल्पिक प्रेस को जन्म दिया। इसके साथ ही हड़ताल और बैठकों जैसी चीज ने शोषक-विरोधी लोकक्षेत्र को एक नया मंच प्रदान किया।"

आधुनिक समाज के बुद्धिजीवियों में विरोधाभासी रूप से सामाजिक कार्यों को लेकर हमेशा एक मतभेद बना रहा। पारंपरिक रूप से विरोधी खेमे के बुद्धिजीवियों जैसे टॉमस पेन, मेरी वोलेस्टोनक्राफ्ट और बाद में मार्क्स, ह्यूगो, सार्त्र और मार्क्वेज जैसे लोगों ने पुनर्जागरण के दरम्यान अन्याय और शोषण के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की। इसके बावजूद संकीर्ण विचारों के बुद्धिजीवियों ने पुनर्जागरण और

फ्रांसीसी क्रांति की कामयाबियों पर हमला करते हुए कुछ इस तरह का इजहार-ए-खयाल किया जिसके तहत वर्ग, लिंग और रंग के नाम पर दमन और उत्पीड़न को जायज ठहराया गया।

इन बुद्धिजीवियों के विरोध में मिशेल फूको ने शिकायत की थी, ''सार्त्र ने एक आदर्शवादी नमूना प्रस्तुत किया है, जो बुद्धिजीवियों को वैश्विक मूल्यों, मसलन, सत्य, अहिंसा, आजादी और मानवता आदि के लिए लड़ने की सलाह देता है।'' फूको ने इसके विरोध में विशेष बुद्धिजीवी का प्रस्ताव किया जो बिलकुल तटस्थ होकर शोषितों-उत्पीड़ितों के सवालों से जुड़े खास मुद्दों के लिए अपनी आवाज बुलंद करे। फूको का यह विचार उत्तर-आधुनिक राजनीति में प्रासंगिक हो गया और राजनीति को पार्टी की राजनीति से हटाकर सामाजिक आंदोलनों की तरफ मोड़ दिया गया। उत्तर-आधुनिक राजनीति के लिए शक्ति का विकेन्द्रीकरण जरूरी है।

डगलस कैलनर कहते हैं, ''मैं यह मानता हूँ कि आलोचक बुद्धिजीवी या कहें विरोधी खेमे के बुद्धिजीवियों के कुछ विचार उपयोगी हैं। आम बुद्धिजीवी वैश्विक मूल्यों के हनन के खिलाफ आवाज उठाते हैं, जबकि आम लोकतांत्रिक बुद्धिजीवी दूसरों के लिए आवाज उठाने के बदले व्यक्तिगत या वैश्विक मुद्दों से जुड़े खास मुद्दों पर ही अपनी राय जाहिर करते हैं।'' नतीजा यह होता है कि वर्तमान परिवेश में लोकतांत्रिक बुद्धिजीवी कहलाने के लिए वैश्विक बुद्धिजीवी के पूरे गुण होने की आवश्यकता नहीं है। कहना न होगा कि बुद्धिजीवियों को व्यक्तिगत इच्छाओं/अनिच्छाओं से ऊपर उठकर सोचना चाहिए। बिना किसी पक्षपात के अपनी बात कहनी चाहिए - तमाम पूर्वग्रहों को छोड़कर। इसके साथ-साथ अपनी सीमाएं जानते हुए खुद को दूसरे की जगह रखकर सोचना चाहिए।

नई तकनीक, लोकक्षेत्र और नये बुद्धिजीवी

कुछ मामलों में बुद्धिजीवियों और तकनीक में कोई खास संबंध नहीं होता। आज के उच्च तकनीक से संपन्न समाज में कंप्यूटर और त्वरित मीडिया युग में प्रतिबद्ध आम बुद्धिजीवियों को परिभाषित करने की जरूरत है। बीसवीं सदी की शुरुआत में जॉन डिवे ने 'थॉट न्यूज' नामक एक ऐसे अख़बार की परिकल्पना की थी जिसमें विज्ञान की नवीनतम खोजों और विचारों को जगह दी जाए। इसके अलावा बर्टोल्ट ब्रेख़्त और वाल्टर बेंजामिन ने सिनेमा और रेडियो के क्रांतिकारी परिणामों को देखा था और दूसरे बुद्धिजीवियों से यह अपील की, कि वे इन साधनों का इस्तेमाल समाज को और अधिक लोकतांत्रिक बनाने और उसे बदलने में करें। ज्यॉ पॉल सार्त्र ने भी रेडियो धारावाहिकों का अध्ययन किया और इस बात पर बल दिया कि प्रतिबद्ध लेखकों को भी रेडियो और सिनेमा का इस्तेमाल करना चाहिए। इससे भागना ठीक नहीं है।

पहले रेडियो, टेलीविजन और दूसरी इलैक्ट्रानिक मीडिया पर तमाम तरह की बंदिशें आयद थीं। रेडियो और टेलीविजन का विवाद, बहसें, जानकारियां आदि एक नये लोक वृत्त का निर्माण करते दिखाई दे रहे हैं। डगलस कैलनर जोर देकर कहते हैं कि, ''बुद्धिजीवियों को चाहिए कि वे इन माध्यमों का उपयोग करके जन मामलों में सीधे जनता की भागीदारियों को सुनिश्चित करें और एक नयी संचार राजनीति और मीडिया-परियोजनाओं का निर्माण करें।''

यह तथ्य अब धीरे-धीरे असलियत को काफी हद तक स्पष्ट करता जा रहा है कि आज की राजनीति में यदि कोई बुद्धिजीवी लोकवृत्त (पब्लिक स्फीयर) में अपनी पैठ बनाना चाहता है, समाज को नई दिशा देना चाहता है - तो नई तकनीकों का उन्हें अधिक से अधिक इस्तेमाल करना चाहिए। पहले रेडियो और टेलीविजन ने एक लोकक्षेत्र का या कहें लोकवृत्त का निर्माण किया था लेकिन अब कंप्यूटर और इंटरनेट ने अपने अलग लोकवृत्त बनाये हैं। जानकारियां, बहसें, लोकतांत्रिक सहभागिता और विचारों को पहुँचाने के

लिए नई संभावनाओं को भी पैदा किया है। ...और यह कहना शायद गैर-जरूरी है कि इस्तेमाल में लाने से पूर्व इन तकनीकों का बारीकी से अध्ययन जरूरी है।

आज के समय में बुद्धिजीवी होने का मतलब है नई तकनीकों का उपयोग करके विचारों के क्षेत्र में नई और ऊर्जस्वी विचारों की खोज, उसका संपूर्ण वितरण और इससे तैयार हुए लोकवृत्त में अपनी पूरी भागीदारी। डगलस कैलनर इस मुद्दे पर अपनी राय साफ-साफ जाहिर करते हैं, कुछ इस तरह, ''आज के नये बुद्धिजीवियों को चाहिए कि वह अपनी नीतियां इस तरह से बनाएं कि शिक्षा, लोकतांत्रिक विकास के साथ ही अपनी नीतियों को बेहतर ढंग से प्रसारित करने के लिए नई तकनीक का बेहतर इस्तेमाल करें। भविष्य में जो वक्त आएगा उसमें बुद्धिजीवियों और नई तकनीक के बीच नाभिनालबद्ध रिश्ता बनाना अनिवार्य हो जाएगा।'' इसके बगैर नई तकनीक से भागने वाले लोग अपनी मेधा का सही इस्तेमाल कर ही नहीं पाएँगे और तब वे कैसा लोकवृत्त बनाएँगे और किस तरह के बुद्धिजीवी रह जाएंगे, यह मुद्दा बहसतलब है।

नव पूँजीवादी समाज में लोकतंत्र की मजबूती के लिए यह और भी आवश्यक है कि लोकतांत्रिक मीडिया राजनीति (डेमोक्रेटिक मीडिया पॉलिटिक्स) नई रणनीति के तहत की जाए। मीडिया की लोकतांत्रिक राजनीति में दो तरह की नीतियां होती हैं - पहली कार्यरत मीडिया को लोकतांत्रिक बनाना और दूसरी आम जनता की सुविधाओं, इच्छाओं और जरूरतों के प्रति मीडिया को जिम्मेवार बनाना।

मुख्य धारा की मीडिया के विकल्प के तौर पर एक विपक्षी मीडिया को तैयार करना भी आने वाली 'टैक्नो पॉलिटिक्स' का मुकाबला करने के लिए आवश्यक है। लोकतांत्रिक मीडिया राजनीति के लिए मुख्य धारा की पूँजीवादी मीडिया समर्थित नीतियों की तीखी आलोचना, उसमें सुधार और वैकल्पिक मीडिया का विकास, इसकी जरूरी शर्तें हैं। मीडिया को लोकतांत्रिक बनाने का प्रयास तभी संभव है जब एक वैकल्पिक प्रेस का निर्माण हो। आम जनता की पहुँच में टेलीविजन हो और एक सकारात्मक विपक्षी राजनीति के साथ-साथ ऐसी वैचारिक दृढ़ता से सम्पन्न नीतियां हों जो मुख्यधारा की मीडिया को प्रभावित करें। उसकी नीतियों की परत-दर-परत पड़ताल करके उपयुक्त भाषा-शैली और अंदाज में बेनकाब करने का बेहतर एजेंडा हो।

पिछले कुछ दशकों में टेलीविजन संचार माध्यम के एक बेहतर विकल्प के रूप में देखा जाने लगा है। 1970 में अमेरिका में हुए टेलीविजन के विकास में प्रगतिशील बुद्धिजीवियों के लिए नई संभावनाएं पैदा की थीं। उसने इस तरह के कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जो तत्कालीन संकीर्ण समाज की कठोर आलोचनाएं करता था - उन दिनों मुख्यधारा की मीडिया में इसकी भरमार थी। 1970 में जब टेलीविजनों की संख्या में इजाफा होने लगा तब वहाँ 'फेडरल कम्युनिकेशन कमीशन' का एक आदेश आया जिसके अंतर्गत 1972 के बाद के नए 'केबल सिस्टम' को कम-अज़-कम एक चैनल सरकार को शिक्षा और आम आदमी को नई जानकारियां मुहैया कराने के लिए देने होंगे। शुरुआती दौर में कुछ कंपनियों ने एक चैनल मुहैया कराई तो कुछेक ने दो या तीन।

कई लोग ऐसा मानते हैं कि लोकतांत्रिक राजनीति में आम सहमति बनाने के लिए आमने-सामने बैठकर बातचीत करना जरूरी है लेकिन एक चतुराई पूर्ण सहमति के लिए जनता का जागरूक और जानकार दोनों होना बेहद आवश्यक है। कहना न होगा कि वर्तमान संदर्भ में यह रेडियो और टेलीविजन के द्वारा ही मुमकिन है। यह जरूरी नहीं है कि मीडिया वर्तमान राजनीति की पूरक बने लेकिन मीडिया राजनीति को बढ़ावा अवश्य दिया जाना चाहिए ताकि इसके माध्यम से जागरूक और जानकार लोग सूचनाओं को

अधिक-से-अधिक लोगों तक प्रसारित कर सकें। अमेरिका के टेक्सास राज्य में 'काउंसिल फॉर पब्लिक मीडिया' अपने कार्यकर्ताओं और आमजनों को यह बताता है कि नई तकनीक और कम्प्यूटर वगैरह का इस्तेमाल अपने विचारों को ज्यादा-से-ज्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए कैसे करें? मीडिया राजनीति में ज़्यादा लोगों की भागीदारी, राजनैतिक संरचना की इसकी आवश्यकताओं को दर्शाती है। इसलिए आज नव पूँजीवाद और भूमंडलीकृत शोषण के हथियारों को मात देने के लिए मीडिया राजनीति को और अधिक विकसित करने की जरूरत है - साथ ही इसके लिए और अधिक मेहनत करने की जरूरत भी है।

अगर कोई विकासशील समूह या आंदोलन से जुड़े आंदोलनकर्मी वर्तमान राजनीतिक माहौल में 'अधिकारों' का कोई विकल्प तलाश करना चाहते हैं तो हर हाल में उन्हें अपनी बात अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुँचानी होगी और खुद से ज़्यादा-से-ज़्यादा लोगों को जोड़ना होगा। आखिर ज्यादातर लोग समाचार और अन्य अनेक सूचनाएं टेलीविजन से ही प्राप्त करते हैं। प्रसार माध्यम ही आम जनता के विचारों को बनाने में एक अहम भूमिका निभाता है और यह तय करता है कि किस चीज को गंभीरता से लें और किसको गंभीरता से नहीं लें। अगर वैकल्पिक विकास के यूटोपिया से लैस लोग राष्ट्रीय राजनीति में अपनी पैठ बनाना चाहते हैं तो उन्हें नई तकनीकों को ध्यान में रखकर ही अपनी नीतियों का निर्माण करना पड़ेगा।

लोकतांत्रिक समाज के निर्माण और विकास में 'टैक्नो पॉलिटिक्स' को बढ़ावा देने के लिए कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी नई-नई संभावनाएं पैदा करता जा रहा है। ऐसा लगता है कि आने वाले समय में घर-घर में मनोरंजन और जानकारियों का भंडार होगा - मगर वे भारतीय नागरिक हर चीज की तरह इससे भी अंतत: वंचित रह जाएंगे जो आज भी दो वक़्त की रोटी के लिए संघर्षरत हैं और कल भी संघर्ष से शायद नहीं उबर पाएंगे। यह सारा ताम-झाम अंतत: इन मध्यवर्गीय नागरिकों को फायदा पहुँचाएगा जिन्हें मूलभूत आवश्यकताओं के लिए कुछ करने की जरूरत नहीं है। दूसरी चिंता इसके साथ यह जुड़ी हुई है कि अगर वैकल्पिक विचारों वाले मीडिया का विकास नहीं हुआ तो इसका उपयोग वही कर पाएंगे जो आर्थिक रूप से बेहद मजबूत स्थितियों में होंगे। नतीजा यह होगा कि गरीब मुल्कों के लोग किसी भी तरह इसका लाभ नहीं उठा पाएंगे। नाइजीरिया, कांगो गणराज्य और दक्षिण अफ्रीकी मूल के लोगों की इस तक पहुंच हो ही नहीं सकेगी। भारत के 'हिंदी पट्टी' के लोग तो आज भी छोटी-से-छोटी जानकारियां नहीं पा सकते हैं। फलस्वरूप, इन निजी मनोरंजन माध्यमों का विकल्प ढूँढ़ना जरूरी होता जा रहा है।

आज के इस टैक्नो पूँजीवादी समाज में कंप्यूटर और प्रौद्योगिकी की बढ़ती महत्ता विकासशील मीडिया की जरूरत के रूप में उभरा है। पूरी दुनिया कंप्यूटरीकृत होने जा रही है और आने वाले वक्त में जिस देश के नागरिक की इस दुनिया तक पहुँच और दखल नहीं होगी वे हर तरीके से दुनिया में रहकर भी किसी और दुनिया के वासी में तब्दील होते चले जाएंगे। गरीब मुल्कों की सरकारें जिस तरीके से बहुराष्ट्रीय पूँजी के आकाओं और पूंजीवादी मीडिया के सेठों को अपने यहाँ बुलाकर मनचाहे तरीके से काम करने के लिए सारी सुविधाएं उपलब्ध करवा रही हैं उसके कारण भी जनता अपनी मूलभूत जरूरत की चिंताओं में ही गर्क है। उन्हें यह सोचने और जानने का मौका ही उपलब्ध नहीं करवाया जा रहा है कि हमारा आनेवाला वक्त कैसा होगा और हमारी सरकारें किस तरह की दुनिया बनाने वालों के साथ हैं, सहयोगी हैं? इसलिए निजी कंपनियों और सरकारों के एकाधिकार से बचने के लिए यह जरूरी हो जाता है कि नये-नये जानकारी केन्द्रों की स्थापना की जाए ताकि लोकतांत्रिक समाज में अपनी सहभागिता को सुनिश्चित किया जा सके।

कंप्यूटर अपनी क्षमताओं के कारण अंतत: एक लोकतांत्रिक तकनीक है, जहां प्रसारण के माध्यम मात्र 'वन वे ट्रैफिक' हैं वहीं कंप्यूटर और इंटरनेट द्विपक्षीय माध्यम है। कंप्यूटर, इंटरनेट, चैटिंग आदि का उपयोग आम जनता एक दूसरे से बातचीत करने के लिए कर सकती है। मोडेम और टेलीफोन लाइनों की

सहायता से तमाम लोग – जो इससे जुड़े हैं, जुड़ सकते हैं – वे लोग तमाम मुद्दों पर विमर्श कर सकते हैं। इस तरह यह एक नये संसार और प्रतिक्रियाओं को जन्म देता है। वर्तमान समय में जन सरोकारों से जुड़े लोगों के लिए यह और भी जरूरी हो जाता है कि वे ऐसे कार्यक्रमों से जुड़कर, इस दुनिया में प्रवेश करके गरीब मुल्कों की व्याख्या प्रस्तुत करें, जिससे उन दमित और शोषित तबकों तक भी इसका लाभ पहुंच सके – जो आज तक तो वंचित हैं ही और सरकार की जैसी नीतियाँ हैं, राजनीतिज्ञों की जो कार्य शैली और प्रतिबद्धताएं हैं उससे आगे भी दुनिया में हो रही हलचलों से वे वंचित रहेंगे। 'टेक्नो पॉलिटिक्स' में शामिल विरोधी खेमे के बुद्धिजीवियों पर ही अंततः यह जिम्मेदारी आयद होती है कि वे एक वास्तविक लोकवृत्त के निर्माण के लिए जन–जन तक सूचनाएं अपने–अपने तरीके से पहुँचाएं।

सहायक ग्रंथ

1. फ्रेडरिक जेमसन : ए क्रिटिकल रीडर, सं. डगलस कैलनर एंड सीन होमर, 2004
2. मीडिया स्पेक्टेकल्स एंड द क्राइसिस ऑफ डेमोक्रेसी : डगलस कैलनर, 2005
3. मीडिया कल्चर : कल्चरल स्टडीज, आइडेंटिटी एंड पॉलिटिक्स बिटवीन द मॉडर्न एंड द पोस्ट मॉडर्न : डगलस कैलनर (1995)
4. द रोल ऑफ पब्लिक इंटेलेक्चुअल : एलन लाइटमैन।
5. द स्ट्रक्चरल ट्रांसफॉरमेशन ऑफ द पब्लिक स्फीयर : एन इनइक्विटी इंटू ए कैटेगरी ऑफ बूर्ज्वाजी सोसाइटी, जुरगेन हेबरमास, 1991, अनुवाद : थॉमस बर्जर, एम.आई.टी. प्रेस।
6. मासेज, क्लासेज, एंड द पब्लिक स्फीयर : माइक हिल, वारेन मोन्टाग, वर्सो, 2001
7. पावर एंड पॉलिटिक्स इन ग्लोबलाइजेशन : द इंडिस्पेंसबल स्टेट : होवार्ड एच. लैन्टर, 2004
8. रूल ऑफ एक्सपर्ट्स : इजिप्ट, टैक्नो पॉलिटिक्स, मॉडर्निटी : टिमोथी मिथेल, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 2002

पंकज पराशर प्रायः, महत्वपूर्ण किताबों को लेकर 'पहल' में लिख रहे हैं। नोम चोम्स्की के बाद पूंजीवादी दुनिया में वामपंथी रूझान बढ़ने के दृश्य पर वे विस्तृत काम कर रहे हैं। नोम चोम्स्की की ताज़ा किताब 'फेल्ड स्टेट्स' पर अगले अंक में संपादकीय टिप्पणी पाठक पढ़ सकेंगे।

सांझ होइत गाममे

भारतक नक्शापर
जकर कोनो टा जिक्र
कतहु देखार नहि होइत अछि
से एकटा कोनो गाम
आ ओहि गामक एकटा साँझमे हम
ठाढ़ छी चुपचाप
बहुत दिनपर घुरल
कोनो बटोही जकाँ

जे तकैत अछि अपन घर
घरक आगूमे रोपल सिंगरहार
आ सिंगरहारकेँ नहि देखि

घुरि अबैए बेर-बेर
हिया हारिके
भ' जाइए ठाढ़
चुपचाप

चुपचाप ठाढ़ ओ बटोही
तकैत रहैए
ठकनबैत रहैए
सोचैत रहैए
किनसाइत ...
किनसाइत ...
किनसाइत ...

चिन्हबाक प्रक्रियामे
बेर-बेर असफल होइत ओ
बेर-बेर तकैए किछु परिचित निशान
बेर-बेर तकैए किछु पहिचान
अपन स्मृतिक दरिद्रतापर कानि
बैसि जाइत अछि थसथसाक'
चुपचाप कोनो ठाम

ओ तकैत अछि
अपन हृदयमे बसल गाम
गाममे अपन घर
घरक आगूमे रोपल सिंगरहार
ओ तकैत अछि बेर-बेर

मोन पड़ैत छैक
बेर-बेर पड़ैत छैक मोन
'ने ओ नगरी, ने ओ ठाम ...
फकड़ा सुनबैत ओ बुढ़िया

बुढ़ियाक तमाकुल माँगब
मोन पड़ैत छैक
एक-एक क' सबटा

मोन नहि पड़ैत छैक घर ?

घर नहि मोन पड़ैत अछि
वा घरे नहि मोन पाड़ैत अछि
घर ओ नहि चिन्हि पबैए
वा घरे ओकरा नहि चिन्हैए
घरसँ ओ गेल छल
कि घरे ओत'सँ गेल छल
ई एकटा भयंकर समस्या अछि उपस्थित

एहि मुन्हारि साँझमे
जे निरन्तर गाढ़ भेल जा रहल-ए
तेज आँचपर खौलैत दूध जकाँ
ओ ठाढ़ अछि
निरन्तर अस्पष्ट होइत जा रहल
साँझक गाछ तर
ओ ठाढ़ अछि
ठकमकाएल
साँझ क' घुरल सुग्गा जकाँ
घर केँ तकैत

साँझक गाछमे
गाछक झाँखुड़ सबहक दोगमे
निरन्तर अस्पष्ट होइत गाम

आ गाममे ठाढ़ ओ
निरन्तर अस्पष्ट भेल जा रहल-ए
निरन्तर
बाढ़िमे आस्ते-आस्ते डुबैत
आ अंततः चक्कडुम होइत
घर जकाँ
ओ अस्पष्ट भेल जा रहल-ए
साँझ खन गाममे
गाममे साँझे खन
ओ विलीन भेल जा रहल-ए
आस्ते-आस्ते...
आस्ते-आस्ते...
आस्ते आस्ते...



नये इलाके में

इन नये बसते इलाकों में
जहाँ रोज बन रहे हैं नये नये मकान
मैं अक्सर रास्ता भूल जाता हूँ

धोखा दे जाते हैं पुराने निशान
खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़
खोजता हूँ ढहा हुआ घर
और ज़मीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बायें
मुड़ना था मुझे
फिर दो मकान बाद बिना रंग वाले लोहे के फाटक का
घर था इकमंजिला

और मैं हर बार एक घर पीछे
चल देता हूँ
या दो घर आगे ठकमकाता

यहाँ रोज कुछ बन रहा है
रोज कुछ घट रहा है
यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं
एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
जैसे वसन्त का गया पतझड़ को लौटा हूँ

जैसे बैशाख का गया भादों को लौटा हूँ

अब यही है उपाय कि हर दरवाजा खटखटाओ
और पूछो—
क्या यही है वो घर ?

समय बहुत कम है तुम्हारे पास
आ चला पानी ढहा आ रहा अकास
शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देख कर

रमेश

बहस-पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि मैथिली साहित्यक कारी अध्याय थिक

विदेह-सदेह २ □२००८□१०□ सँ पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि आ साइबर अपराधक पापक घैलक महा-विस्फोट भेल अछि। ई पैघ श्रेय पत्रिकाक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुरकेँ जाइत छन्हि। हुनकर अपराध पकड़बाक चेतना केर जतेक प्रशंसा कएल जाय, कम होयत। "विदेह"क मैथिली प्रबन्ध-समालोचना- अंक, अर पोल-खोल ओल कएक युग धरि विलम्बित भऽ कऽ निविद्य रहत, से "समय केँ अकानैत" कहब कठिन अछि।

साहित्यमे चौर्यकलाक उदाहरण पहिनहुँ अबैत रहल अछि गोटपगरा। मुदा एक बेरक चोरि पकड़ा गेलाक बाद प्रायः चोरकि आरोपी साहित्यकार मौन-व्रत धारण करैत रहलाह अछि आ मामिला ठंढ़ाइत रहल अछि।

मुदा ताहि परम्पराक विपरीत अर बेरक चोर 'सन्हि चोर' निकलल अछि आ बिगत एक दशकसँ निरन्तर चोरि करैत जा रहल अछि- सेन्ह काटिकऽ। आ तेहेन महाचोरकेँ मैथिलीक साहित्यकार आ संस्था सभ तरहत्थीपर उठा-उठा कऽ पुरस्क□त केलक अछि आ समीक्षाक चासनीमे चोरायल कविता सबकेँ बोरि देल गेल अछि।

विदेह-सदेह□२ प्रमाण-पुरस्सर अभियोगे टा नहि लगौलक, अपितु एहेन महत्वाकांक्षी असामाजिक तत्वक विशुद्ध साहित्यिक दम्भ आरोपित कऽ अपन "बोल्डनेस" सेहो प्रदर्शित केलक अछि। एक दशकमे तीन बेर पकड़ायल चोर प्रायः "डेयर डेविल" होइत अछि आ अपन अनुचित। सीमाहीन महत्वाकांक्षाक पूर्ति लेल अपन वरीय संवर्गीय व्यक्तिकेँ सीढ़ीक रूपमे उपयोग करैत अछि आ स्वार्थ-सिद्धिक उपरान्त अपन पयर सँ ओहि सीढ़ीकेँ नीचाँ खसा दैत अछि। फेर ओकरा अपन ट्विटर-फेसबुक-नेट वा पत्रिकामे गारिक निकृ□ष्टतम स्तरपर उतरऽ मे कनियो देरी नहि होइत

छै। ओ नाम बरख-बरख धरि गाबि पढ़ैत अछि आ अपन प्रशंसामे लेखनपूर्वक छात्र-छात्राक पोस्टकार्ड लिखबामे अपस्याँत भऽ जाइत अछि। ओ हिन्दीक कोनो बड़का साहित्यकारक बेटीक संग अपन नाम जोड़ि विवाहक वा प्रेम-प्रसंगक खिस्सा रस लऽ लऽ कऽ प्रचारित करैत अछि। एहेन प्रवृ□त्तिक कतेक आओर तकिऽमबाजमे देखल गेल अछि जे हिन्दीक पैघ-पैघ नामक माल जपि कऽ मठोमाठ होअय चाहैत अछि। वस्तुतः ई चिन्ताजनक तथ्य थिक जे मैथिलीक नव-तूरकेँ हिन्दीक पैघ-पैघ नामक वैशाखीक एतेक जरूरति किएक होइत छनि?

“विदेहक” “स्वच्छन्दवादीक विचारधारा” पढ़ि कऽ नोरसँ गाढ़ भऽ जाइत अछि। पहिल□वद आ आरम्भ□रद मे जे पोल खुजल छल, ओ तथाकथित साहित्यकारक, तकरा बादे मैथिली साहित्यसँ बारि देल जेबाक चाहैत छल। मुदा विडम्बना देखू जे ओकरा सम्मति सम्मानित कऽ देलक। “मैथिल ब्राह्मण समाज”, रहिका (मधुबनी) सन अँग्रेजी संस्थाकेँ चकचोन्ही लागि गेल, जखनकि संस्थामे विख्यात साहित्यकार उदयचन्द्र झा “विनोद” आ पढ़ाकू प्रोफेसरगण छथि। ई संशयविहीन अछि जे पुरस्कृ□त करबामे विनोदजीक महत्त्वपूर्ण भूमिका रहल हैत। “विदेह” द्वारा रहस्योद्घाटन केलाक बादहु एखन धरि ओकरा सम्मति अथवा मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिकाकेँ अपन पुरस्कार आपस करबाक वा आने कोनो कारवाइ करबाक बेगरता नहि बुझा रहल छै आ सभ चुप्पी लधने अछि। एहेन “जड़-संस्था” सभ मैथिली साहित्यक उपकार करैत अछि वा अपकार? ई केना मानल जाय जे पहिल□वद वा आरम्भ□रद आ दुनू संस्थाक कोनो अधिकारी वा साहित्यकारकेँ पढ़ल नहि छलनि?

ई आश्चर्यजनक सत्य थिक जे मैथिलीक कतेक पैघ साहित्यकार पंकज पराशरक कृ□त्रिम काव्य आ आयातित शब्दावलीमे फँसि गेलाह अछि। “विलम्बित कइक युग मे निबद्ध” क भूमिकामे अनेको विदेशी साहित्यकारगणक तीस-चालिस टा नाम ओहिना नहि गनाओल गेल अछि,

શ્રપન કવ઼િતા કેઁ વ઼િશ્વ઼સ્નીય પ્રમાણિત કરવાક લેલ શ્રઁગ્રેજી ચોમે એના કs સકૈત શ્રછિ। સમ્ભાવ઼ના વ઼ૈત શ્રછિ જે ઙ઼ાલેસ કેલન૧ જકાઁ શ્રોહૂ સભ કવ઼િક ૧ચનાક ભાવ઼ભૂમિક વ઼ા શવ્દાવ઼લીક ચોરિક પ્રમાણ એહી કાવ્ય઼-પોથીમે ભેટ જાય઼। શ્રતઃ મૃ હિરૂઙ઼ક કોન ડેકાન? મૈથિલીમે તઁ લેક વ઼િશ્વ઼-સાહિત્ય઼ કમ પઢૈત શ્રછિ। તકર નાજાયજ શ્રાયદા કોનો વ્લૈકમેલર કરિક નહિ ઉઠાશ્રોત? શ્રાપ્પનિ ટેક્નો-પોલિટિક્સ કી થિક- ટેકનિકલ પોલિટિક્સ થિક, સૈહ કનિ? એકરા વદૌલત હીઁસા દs કs પાકિસ્તાનીક ચાત્રા કચલ જા સકૈત શ્રછિ। “ટેક્નો-પોલિટિક્સક” વદૌલત કવ઼િત્તા-ચાત્રી પુરસ્કાર, વૈદેહી-માહેશ્વ઼રી સહિ “મહેશ” પુરસ્કાર, એોક ચર્ચા જે વ઼િદિતજીક શ્રકાદમીચોક પુરસ્કાર લેલ જા સકૈત શ્રછિ। પ્રદીપ વહિરીક સુપુત્રક ભાતિજિ-કકા સમ્વન્ધક મર્યાદાક શ્રતિક્રમણ કચલ જા સકૈત શ્રછિ। પ્રો શ્રણુ કમલક “નચે સ્લોકે મેં” સેંચમારી કs કs “સમચ઼ કેં શ્રકાનલ” જા સકૈત શ્રછિ। શ્રાર તઁ શ્રાર, શ્રરૂ ટેકનિકલ પ□લિટિક્સક વદૌલત જીવ઼કાન્તજી સન મહારથી સાહિત્ય઼કારસઁ “વ઼િલમ્વિત કએક ચુગ” પોથીક સમીક્ષા લિખ્વિ વા કs “મિથિલા દર્શન” □પ□ સન પત્રિકામે છપવા કs સ્થાપિત શ્રા શ્રમર ભેલ જા સકૈત ચછિ। મૈથિલી સાહિત્ય઼ક સભાસઁ પૈઘ સ્રૂલ શ્રૌજાર થિક “ટેક્નો પોલિટિક્સ”!

૬ માનલ જા સકૈત શ્રછિ જે મિથિલા દર્શનક સમ્પાદકકેં શ્રારમ્ભ□૨૩ શ્રા પહલ□૮૬ કોલકાતામે નહિ ભેટલ હોચન્હિ। મુદા જીવ઼કાન્તજી નહિ પઢને હેતાહ સે માનવામે શ્રસૌકર્ચ઼ ભs રહલ શ્રછિ। જીવ઼કાન્ત જી તઁ પ્રચાગ શુક્લક “ચન્દ્રભાગા મે સૂર્ચોદચ઼” શ્રા એહી શીર્ષકક નારાચણજીક કવ઼િતા (ચન્દ્રભાગામે સૂર્ચોદચ઼) સેહો પઢને હેતાહ જે છપલ શ્રછિ મૈથિલીમે। તખ્ખન પંકજ પરાશરક સમુદ્રસઁ શ્રસંખ્ય પ્રશ્ન પૂછs વ઼લા કવ઼િતાક ભાવાર્થ કરિક નહિ લિગલન્હિ જે સમીક્ષામે કલમ તોડ઼ પ્રશંસા કરs પડ઼લન્હિ વ઼ા કરા ગેલન્હિ? એકરા “પ્રાચોજિત સમીક્ષા” કરિક નહિ માનલ જાય? કી પ્રચાગ શુક્લ વા નારાચણજીક સમુદ્ર વ઼િષચક કવ઼િતાસઁ વ઼ેશી મૌલિકતા પંકજ પરાશરક કવ઼િતામે ભેટલન્હિ જીવ઼કાન્તજીકેં? શ્રો૨ સભ કવ઼િતાક કનિયીઁ

“છાયા”ક શંકો નહિ ભેઉનિ સમીક્ષકકેઁ? “સજ્યતાક સજાટા મન્માન્તક પુકાન”ક નોટસિ ઉવડ વ઼ઙ સમીક્ષકકેઁ સાહિત્યિકિ યોનિ શ્રસજ્ય શ્રા મન્માન્તક પીડ઼ાદાયક નહિ ઉગઉનિ? શ્રાવ ળીવ઼કાન્તળી સન સમીક્ષકક “પોળીશન શ્રુ□ઉસ” જાડ ળેતનિ સે શ્રન્દાળ તઁ મથિઉિ દન્શનક સમ્પાદકકેઁ નહિયે નહનિ, ઉદય યન્દ્ન હા “વ઼ીનોદ” કેઁ સેહો નહિ નહનિ। ઙ શ્રજાળિ઼ગ્રાન તઁ પંકળે પનાશન ટાકેઁ નહઉ હેતનિ? વેયાને “પનાશન” મુનકિ શ્રાત્મા સ્વ઼ન્ગને કનૈત હેતનિ શ્રા પંકસઁ ળનમઉ ળતેક કમઉ શ્રછિ સવ શ્રવ઼શ્વ઼િસનીય યથાન્થક સામના કનૈત હેતાહ। પનાશન ગોત્ની જાડ કડ તીન વેન યોનિ કિનાઙ “પનાશન” મહાકાવ્યક નયયિતા સ્વ઼ કનિમ્મળીકેઁ સેહો કનવૈત હેતનિ। શ્રાપ્પનિ ળીવ઼કાન્તળી સાહિત્યિકિ યોનકિ નોટસિ કએ ને ઉઉનિ, ળપ્પનકિ હુનકા વ઼યિાનેઁ “મૈથિઉિક સમીક્ષક પ્નાયઃ મૂન્પ્પતા પીવકિડ વ઼ષિવ઼મન કનૈત શ્રછિ”(વ઼દિહ-સદેહ□ર□ર૦૦૮□૧૦□ વ઼ીનીત ઉત્પઉ-સાક્ષાત્કાન શ્રા ળીવ઼કાન્તળી સ્વ઼યં પંકળ પનાશનક યોનવ઼િઉ કવ઼િતા-પોથીક સમીક્ષક છથિ, શ્રપિતુ યૌન્યકઉ પ્નવ઼ીમ્મ કવકિ ઘોન પ્નશંસક છથિ। તપ્પન શ્રઙ સમીક્ષા-શ્રાઉપ્પને શ્રન્તન્નહિતિ શ્રસીમ-પ્નશંસા સાકાંક્ષ-પાઠકકેઁ “વ઼ષિ-વ઼મન” કોના ને ઉગૌક? હુનકા સન “પઢ઼ાકૂ” સમીક્ષક-પાઠકકેઁ “શ્રુ□ઉસ પોળીશન”ને શ્રનનાહિન “એક્સપન્ટ શ્રા હૈવયુિએટેડ” સાહિત્ય-યોનસઁ પ્નશંસા શ્રા પુનસ્કાન દુનૂ પાવિ ળાય તઁ મૈથિઉિ-કાવ્યક ઙ ઉત્કન્ષ થકિ વ઼ા દુન્જાગ્ય? શ્રંતતઃ વ઼દિહ-સદેહ ટા કએિક નિન્દા કેઉક એહિ ઘટનાક? શ્રાન કોનો પત્નકિા કએિક નહિ કેઉક? ડ□ નમાનન્દ હા “નમામ્મ” ઙન્ટનનેટપન નિન્દા કનૈત છથિ તઁ ઘન-વાહન પત્નકિાને કએિક નહિ ળકન શ્રો સમ્પાદક છથિ? યેતના સમિતિ, પટના સમ્માનિત કનૈત શ્રછિ એહને-એહને સાહિત્યકાનકેઁ તપ્પન શ્રપને પત્નકિાને કોના નિન્દા કનત, ળપ્પનકિ પુનસ્કાન શ્રાપસો નહિ ઉૈત શ્રછિ, ળાનકાની ભેઉાક વ઼ા સાકાંક્ષ સાહિત્યકાનક શ્રનુનોધ પ્નાપ્ત ભેઉાક વાદો? નયકિતાળી નેટપન નિન્દા કનતાહ શ્રા “વ઼દિહ”ને છપત તઁ “મથિઉિ દન્શન”ને કએિક નહિ નિન્દા વ઼ા સૂયના છપઉ? કાનામ્મ સ્પષ્ટ શ્રછિ- ળીવ઼કાન્તક સમીક્ષા પંકળ પનાશનક કાવ્ય-પોથીપન છપત, તપ્પન શ્રોહિ પોથીક યોનિ

ક્યેઠ ક્વિતાિક નિન્દિા કોના છપત? યાનુ ભાગ સાહિત્યિકિ શ્રાદર્શ, મર્યાદા શ્રા નૈતિકિતાક યળ્ળી ઉડ઼ રહ્ઠ શ્રછિ- પિતામહ શ્રા શ્રાયાર્યગામ્ક સમક્ષ શ્રા (શ્રનળાને મે સહી) હુનકો ઠેકનિક દ્વારા। મૈથિઠ વ્રાહ્મ્મણ સમાળ, રહિકા; યેતણા સમિતિ, પટના શ્રા સાહિત્ય શ્રકાદેમી, નઈ દિલ્ઠીમે શ્રન્તતઃ કોન શ્રન્તર શ્રછિ વા રહઠ? એહેન નામી પુરસ્કારક સંયાઠન શ્રા ચયનકર્તા મહારથી સભકેં નવ ઠેકકેં પઢ઼વાક વેગરતા કિઇક નહિ વુહાયત છનિ? વિના પઢ઼ને પુરસ્કારક નિર્ણય વા સમીક્ષાક નિર્ણય કતેક ઉચિત, ળખન કિ ઈ યોરિ તિસર વેરક યોરિ થિકિ શ્રા સે છપિ- કઽ ભામ્ડાફોડ઼ ભેઠ શ્રછિ। એકરા વ્યાપ્ય શ્રા વ્યીય સાહિત્યિકારગણ દ્વારા કાવ્ય-યોરિ, શ્રાઠખ-યોરિકેં પ્રશ્રય દેઠ ળાયવ કિઇક નહિ માનઠ ળાય, ળખનકિ શ્રાત્મજ, મૈથિઠ-ળન, પહઠ શ્રા વ્રિદેહ-સદેહ પહિનહિ છાપિ ચુકઠ છઠ? કી સાહિત્યિકિ યોરિકેં પ્રશ્રય દેવ, દઠઠ વર્ગકેં પ્રશ્રય દેવ નહિ થિકિ? એહેન સમ્ભાવનાયુક્ત નવ કવિકેં પ્રશ્રય દેવ મૈથિઠી સાહિત્ય ઠેઠ ઘાતક શ્રછિ વા કઠ્યાણકારી, ળકરા મૌઠિકતાપર તીન વેર પ્રશ્ન યેન્હ ઠાગઠ હોઈક? કી પોથીક શ્રાકર્ષક ગતા દેખિ વા વિદેશી કવિગણક નામાવઠી (ભૂમિકામે) પઢ઼િ કઽ સમીક્ષા ઠિખિઠ ળાઇત શ્રછિ વા પુરસ્કારક નિર્ણય ઠેઠ ળાઇત શ્રછિ? ળઁ સે ભેઠ હો તઁ સવ કિછુ "ઠિક્કે છૈ ભાઇ"?

શ્રરૂ સવસઁ તઁ ળીવકાન્તળીક વાત સત્ય વુહાયત શ્રછિ ળે સમીક્ષકગણ દારૂ પીવિ કિઽ વા પૈસા પીવિ કિઽ વા મૂત્ખા પીવિ કિઽ સમીક્ષા ઠિખૈત છથિ। ઙાઠસ કેઠનરક "ટેક્નોપોઠિટિક્સ" તઁ છપિ ગેઠ "પહઠ"મે યોરા કઽ। શ્રાવ ળીવકાન્તળી, ળ્ઞાન રંળનળી શ્રથવા હિન્દિી ળગતક શ્રાન સાહિત્યકાર-સમ્પાદકસઁ પૂછથુ ળે નોમ યોમ્સ્કીવઠા રચના કિત્ય ગેઠ, કી ભેઠ, કોન નામેં છપઠ? પંકળ પરાશરક નામેં કિ પદીપ વિહારીળીક સુપુત્રક નામેં (શ્રનુવાદ રૂપમે)। ઈ રસિત્ય એખન નહિ ભેઠ તઁ ભવિષ્યમે પુનઃ એકટા સાહિત્યિકિ યોરિ પોઠ ખૂળત? શ્રંતતઃ એકટા માઁછકેં કિએટા પોખરિકેં પ્રદૂષિત કિરએ દેઠ ળાય શ્રા સે કિએ વેર? ઉદય-કાન્ત વનિ કિઽ ગારિ પઢ઼વાક શ્રાદતિ તઁ પુરાણ છનિ ઙ□ મહાયોર કેં। કકરો "સનીસ□પ" કિહિ સકૈત છથિ (મૈથિઠ-ળન) શ્રા કોનો

પ૧વિ઼ાન્મે ઘોસયિ઼ા કS વ઼ષિ વ઼મન કS સકૈ઼ત છથિ। અૉક્ટોપસક સભ ગુ઼ામસઁ પ૧પિ઼્૧ામ ૭□ પ□૭ વાવાકેઁ યો૧કિ ભવ઼ષિ઼્યવ઼ામી ક૧વ઼ાક વડ઼કા ગુ઼ામ છ૯નિ તેઁ હનિકા નામો શુટવ□૭ ટીમ દ્વ઼ાના પોસ૭ ળા૨ત અછિ, ળાહિસઁ "વ઼સિ્વ઼- કપ"કેઁ દૌ૧ાન અ૨ "અમોઘ અસ્ત્૧ક" ૩પયો઼ગ અપના હસિાવેઁ કય઼૭ ળા સકય઼।

સહ૧સા-કથાગોષ્ઠીમે પઠિત હનિક૧ પહિ઼ લ કથાક શી૧્ષક છ૭- હમ પાગ૭ નહિ છી। ૬ ૩દ્ઘોષામા ક૧વ઼ાક કી વેગ૧ત ન૧હૈક- સે આ૨ ૭કકેઁ વુ઼હા ન૧હ૭ છૈક। અવ઼નિાશ આ પંકળ પ૧ાશ૧ક મામાળી તહયિ઼ા હનિક૧ કથાકેઁ "ટપિ્પામીક"ક્૧મમે મૈથિલિ-કથાક "ટ૧્નગિ પ્વ઼ા૨ન્ટ" માનને છ૭ાહ। આ૨ ઓ "ટ૧્નગિ પ્વ઼ા૨ન્ટ" ડીકે એક હસિાવેઁ "ટ૧્નગિ પ્વ઼ા૨ન્ટ" પ્૧માામાિત ભેલ, કા૧ામ કથાક ઓહિ શી૧્ષકમે સઁ "નહિ" હટિ ગેલ અછિ, હનિક૧ તેવાના યો૧સિઁ। હનિક૧ પહિ઼ લ યો૧િ (અનુ઼ામ કમ૭ક કવ઼ાિતા- ન૯ ૨૭ાકે મેં) ક નનિ્દા પ્૧સ્તાવ઼મે "મામાળી" આ ૭□ મહેન્દ્૧કેઁ છોડ઼િ, સહ૧સાક શેષ સભ સાહત્યિ઼કા૧ હસ્તાક્ષ૧ કS "આ૧મન"કેઁ પઠૌને છ૭ાહ। આ૨ ઓ હસ્તાક્ષ૧ નહિ કેનહિ઼ાિ૧ સભ કન્છી કાટિ કS વ઼ામ-દહનિ તાક-ઙાઁક ક૧વ઼ાક ૭૭ વાય્ય઼ છથિ। દ્વૈવ-યન્તિ્૧ આ દોહ્ના માનદામ્૭ક પ૧ામિામ સૈહ હો૨ત અછિ। અવ઼નિાશ તપ્પન નઁ દેપ્પા૧ ભS ળા૨ત છથિ ળપ્પન ઓ વ઼દિહ-સદેહ□૨ મે ૭પ્પૈત છથિ ળે "એકના સા૧્વ઼ળનકિ નહિ ક૧વૈ"। ણુકા કS સૂયના દેવ઼ાક કોન વેગ૧તા? પંકળ પ૧ાશ૧સઁ સમ્વન્ય પ્પા૧વ હેવ઼ાક ૭૧ વ઼ા કોનો "ટેક્નોપો૭ટિક્સિ"(?) કે૧ યનિ્તા?

વ઼દિહ-સદેહ□૨ ક પાઠકક સંદેશ નઁ કણ્ટા સાહત્યિ઼કા૧કેઁ દેપ્પા૧ કS દૈત અછિ। ળતય઼ ન૧ાળીવ઼ કુમા૧ વ઼ર્મા, શ્૧ીય૧મ, સુની૭ મ૭૭કિ, શ્યામાનન્દ યૌધ૧ી, ગંગેશ ગુંળન, પીકેયૌધ૧ી, સુભાષ યન્દ્૧ યાદવ઼, શમ્ભુ કુમા૧ સહિ, વ઼ળિય઼દેવ઼ ઝા, ભા૭યન્દ ઝા, અળતિ મશિ્૧, કેણ્ણઝા, પ્૧ોનયકિતા, વુદ્ધિનાથ મશિ્૧, શવિ કુમા૧ ઝા, પ્૧કાશ યન્દ્૧ ઝા, કામનિી, મનોળ પાઠક આદિ અપન મુપ્પ૧ ભાષામે પ્૧પ્પ૧તાપૂ૧્વ઼ક નનિ્દનીય઼ ઘટનાક નનિ્દા કે૭નિ અછિ, તતહિ

अविनाश, डॉ. रमानन्द झा "रमण", विभारानीक झाँपल-तोपल शब्द आश्चर्य-भावक उद्रेक करैत अछि। मुदा संतोषक बात ई अछि जे पाठकक "प्रबल भाव-भंगिमा" साहित्यकारोक "मैझायल आवाज"क कोनो चर्चा नहि करैत अछि। विभारानी ने कमाल कऽ देलनि। एहि ठाम मैथिली भाषा-साहित्यक एक सय समस्या गनेवाक उचित स्थान नहि छल। ई ओनाठ काल खोनाठ आ महादेवक विवाह कालक लगानी भऽ गेल। कोनो चोर बेर-बेर अपन कु- कृत्यक परिचय दऽ रहल अछि आ हुनका समय नष्ट करब बुझा रहल छनि आ चोरकेँ देखार केलासँ दुःख भऽ रहल छनि? ओ अपन प्रतिक्रियामे करोक आत्म श्लाघा आ हीन-भावना व्यक्त केलनि अछि से अपने पत्र अपने ठंढा भऽ कऽ पढ़ि कऽ बूझि सकैत छथि। हिन्दीयोमे एहिना भऽ रहल अछि, तँ मैथिलीमे मात्र कऽ देल जाय? आब हिन्दीसँ पूछि-पूछि कऽ मैथिलीमे कोनो काज होयत? विभारानी ज्योत्सना चन्द्रमकेँ ज्योत्सना मलिन केना करैत छथि? हुनकर उपेक्षा कोना मानल जाय? ओ सभ साहित्यिक कार्यक्रममे नोतल जाइत छथि, सम्मान आ पुरस्कार पबैत छथि, पाठक द्वारा पठित आ चर्चित होइत छथि। समीक्षाक शिकाइत की उच्चवर्गीय (?) साहित्यकारकेँ मैथिलीमे नहि छनि? समीक्षाक दुःस्थिति सभ जातिक मैथिली साहित्यकार लेल एके रंग विषम अछि। ओइ मे जातिगत विभेद एना भेलए जे ब्राह्मण-समीक्षक, आरक्षणक दृष्टिकोणेँ निम्न जाति (?)क साहित्यकारक किछु बेसीए समीक्षा (सेहो सकारात्मक रूपेँ) केलनि अछि। समीक्षा आ आलोचनाक विषम स्थितिक कारणेँ जँ नैराश्यक शिकार भऽ जाय लेखक, तँ लेखकीय प्रतिबद्धताक की अर्थ रहि जायत? विभाजीकेँ बुझल नहि छनि जे हुनका लोकनिक बाद मैथिली महिला लेखनमे कामिनी, नूतन चन्द्र झा, वन्दना झा, माला झा आदि अपन तेवरक संग पदार्पण कऽ चुकल छथि। हुनका ने कामिनीक कविता संग्रह पढ़ल छनि आ ने "इजोड़ियाक अउँठी मोड़"। हुनका अपन गुरुदेवक बात मानि हिन्दीमे जाइसँ के कहिया रोकलकनि? ओ गेलो छथि हिन्दीमे। मातृभाषाक प्रेरणा अद्वितीय होइत छै। मैथिलीक जड़ संस्था अथवा समीक्षक सभपर प्रहार करबामे हमरा

𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒂𑒣𑒞𑓂𑒞𑒱 𑒢𑒯𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒢𑓂𑒨𑒟𑒰𑒪𑒰𑒦 𑒞𑒿 𑒋𑒞𑒨 𑒢𑒑𑒝𑓂𑒨 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒰𑒢 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒖𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒫𑒬𑓂𑒨 𑒦𑒹𑒙𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 “𑒖𑒛𑓃”𑒪𑒼𑒏 𑒕𑒻 𑒞𑒿 “𑒔𑒹𑒞𑒢” 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒕𑒻𑒏। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰𑒮𑒿 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒦𑒰𑒭𑒰-𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒂 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰-𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒻𑒒 𑒂𑒬𑒰 𑒕𑒻, 𑒯𑒲𑒢𑒦𑒰𑒫 𑒫𑒰 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒬𑓂𑒪𑒰𑒒𑒰𑒮𑒿 𑒆𑒣𑒩 𑒅𑒚𑒱 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒥𑒹𑒑𑒩𑒞𑒰 𑒕𑒻𑒏। 𑒮𑒏𑓂𑒭𑒧 𑒕𑒟𑒱 𑒍। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒬𑓂𑒩𑒹𑒨 𑒪𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒼𑒛𑓃𑒮𑒿 𑒥𑒿𑒔𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲। 𑒁𑒢𑓂𑒨𑒟𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒁𑒏𑒰𑒠𑒹𑒧𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒢𑒱𑒡𑒱, 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲𑒨𑒰𑒣𑒢 𑒏𑒹𑒩 𑒬𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒖𑒴𑒩𑒲𑒑𑒝 𑒂 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒮𑒏𑓂𑒭𑒧 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒏𑒲 𑒏𑒲 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒨𑒞? 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒩𑒰𑒢𑒲𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒪𑒢𑒏 𑒠𑒬𑒰 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒱𑒞 𑒂 𑒫𑓂𑒨𑒟𑒱𑒞 𑒏𑒋𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱। 𑒍 𑒠𑒧𑒑𑒩 𑒪𑒹𑒐𑒱𑒏𑒰 𑒕𑒟𑒱, 𑒮𑒬𑒏𑓂𑒞 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒏𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱, 𑒂𑒃 𑒢𑒹 𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒏𑒑𑒝 𑒏𑒪𑒧 𑒅𑒚𑒹𑒥𑒰𑒣𑒩 𑒥𑒰𑒡𑓂𑒨 𑒯𑒹𑒥𑒹 𑒏𑒩𑒞𑒰𑒯। 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒏𑒏 𑒏𑒩𑓂𑒞𑒫𑓂𑒨𑒯𑒲𑒢𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒏𑒞𑒾 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒢𑒱𑒩𑒰𑒬 𑒯𑒼?

𑒣𑓀𑒏𑒖 𑒣𑒩𑒰𑒬𑒩𑒏 𑒬𑓂𑒩□𑓀𑒐𑒪𑒰𑒥𑒠𑓂𑒡 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒔𑒼𑒩𑒱𑒣𑒩 𑒮𑒰𑒩𑓂𑒟𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒠𑒹𑒥 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒢𑒳𑒔𑒱𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒞𑒯𑒳𑒮𑒿। 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒱𑒏 𑒧𑒴𑒪𑓂𑒨𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒍𑒏𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒥𑒠𑓂𑒡𑒞𑒰 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏𑒼 𑒔𑒰𑒯𑒲 𑒂 𑒞𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 “𑒥𑒼𑒪𑓂𑒛𑒢𑒹𑒮𑒼” 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲। “𑒔𑒰𑒯𑒲”𑒥𑒪𑒰 𑒣𑒏𑓂𑒭 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒥𑒹𑒬𑒲 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒢-𑒋𑒯𑒢 𑒑𑒧𑓂𑒦𑒲𑒩 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒣𑒩 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒂 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 “𑒔𑒳𑒣𑓂𑒣𑒲” 𑒋𑒯𑒢 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒼𑒞𑓂𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞 𑒏𑒋𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒖𑒥𑒠𑒰𑒯 𑒖𑒛𑓃𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒜𑓃𑒹𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱, 𑒦𑒰𑒭𑒰-𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒠𑒢𑒰𑒧 𑒞𑒿 𑒏𑒩𑒞𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒰𑒨𑒞𑒱 𑒣𑓀𑒏𑒖 𑒣𑒩𑒰𑒬𑒩𑒏 𑒔𑒼𑒩𑒱-𑒏𑒰𑒫𑓂𑒨𑒏 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒞, 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒩𑒰𑒢𑒲𑒏 𑒧𑒴𑒪-𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒏𑒹 𑒪𑒱𑒐𑒞? 𑒏𑒏𑒩𑒰 𑒖𑒴𑒩𑒲 𑒥𑒳𑒗𑒻𑒏? 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒩𑒰𑒢𑒲 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒞𑒿 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒨𑒼𑒖𑒱𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒍𑒞𑒲? 𑒮𑒏𑓂𑒭𑒧 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒯𑒰𑒩𑒼𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑓂𑒞𑒩 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻। 𑒞𑒻𑒿 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒔𑒼𑒩𑒱𑒏 𑒦𑒩𑓂𑒞𑓂𑒮𑒢𑒰 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲।

નાળકમલ ચૌધરી આ આન ઉપ્પકક નચનાક ચોન પિંકળ પનાશન પ્નસંગ

પંકળ પનાશન ૩૧્ષ્ઠ અનુપમ કમલ ૩૧્ષ્ઠ ઙગલસ કેઙનન ૩૧્ષ્ઠ ૩દયકાન્ત ૩૧્ષ્ઠ ૨૫ષ્ઠ २२०२२७१६३१०५ □ १६४१००८३ □ २२०२२७१७४२४३ ૩૧્ષ્ઠ

શ્રાનાસહાનાસરનાોલઉચનુાલથહેડા

પાઠકક સૂચનાક વાદ ક પતા ચલલ અછિ (આ ઓકન સત્યાપન કએલ ગેલ) જે એહિ ઉપ્પકક ક એહિ તનહક પહિલ ક□ત્ય નહિ અછિ। ક ઉપ્પક પહિને સેહો ચોગલાસ પ્રેલલોન ક થેચહનોપોલિતિચિસ ક પંક્તિશિઃ અનુવાદ મૂલ ઉપ્પકક નૂપમે નામસઁ ળ્આનંળનક હિન્દી પત્નિકા "પહલ"મે ચોપ્પાસઁ છપવઓલક। તકન પતા ચલલાક વાદ "પહલ"મે એહિ ઉપ્પકક નચનાક પ્નકાશન વન્દ ભડ ગેલ। એહિ સિમ્વન્યમે વસ્તિ□ત આલેપ્પ વદિહક અગલા અંકક સમ્પાદકીયમે દેલ જાએત।

ર઼એહિ સિભા ઘટનાક વાદ પંકળ પનાશનકેં વદિહસઁ વૈન કએલ જા નહલ અછિ। વદિહ આન્કાશ્વસઁ "વભિમ્વતિ કશ્ક ચુગમે નવિદ્ય" પોથીકેં હટાઓલ જા નહલ

अछि आ एकटा [illegible] द्वारा एहि पोथीक (डगलस केलनर वल घटनाक्रमक वाद) जाँच किछु चुनल लेखक-पाठक द्वारा कएल जएबा योग्य रहत। प्रकाशककेँ सेहो उचित पुलिसिया कार्यवाही (यदि आवश्यक हुअए तँ) लेल एहि समस्त घटनाक्रमक सूचना दऽ देल गेल अछि।

उपाठक डगलस केलनरसँ ई-मेल [illegible] पर "पहल" पत्रिका वा तकर सम्पादक श्री [illegible] पर सम्पर्क कए विस्तृत जानकारी लऽ सकैत छथि। डगलस केलनरक आर्टिकिल गूगल सर्चपर [illegible] टाइप कए ताकि सकै छी आ पढ़ि सकै छी। पहल पत्रिकाक वेबसाइट [illegible] पर सेहो पहल पत्रिकाक पुरान अंक सभ आस्ते-आस्ते देबाक प्रारम्भ भेल अछि।

विस्तृत जानकारीक लेल सुधी पाठकगण अहाँक धन्यवाद। भविष्यमे सेहो एहि घटनाक पुनरावृत्ति नहि हुअए ताहि लेल अहाँक पारखी नजरि आस आगाँ सेहो रहत। एहि तरहक कोनो घटनाक जानकारी हमर ई-पत्र [illegible] पर अवश्य पठावी।

[illegible]

अन्तर्जालपर विदेहमेलि विलिद्य गूगल, याहूग्रुप आ विभागवालीकेँ सूचित करू, साइबर क्राइम आ विदेहमेलि रोकबा लेल सेहो ठोस प्रावधान छै, विशेष जानकारी [illegible] पर सम्पर्क करू। अहाँसँ पत्रकार, न्यूजपेपर, पत्रिका आ हिन्दीक [illegible] लेखकगण प्रोफेसर विशिष्टविद्यालय आदिकेँ एहि घटनासँ सूचित करबाक अनुरोध अछि। विशेष जानकारी लेबाक आ देबाक लेल [illegible] पर सूचित करू।

ઢ઼૫Θ૪઼ ०्१२६्२०१० ।ռ ०१:५६ શ્રુમ

२

વ઼ર્યએહ્શ્ર ઘશ્રહ્એજ્ઞયઢ઼શ્ર થહશ્રપ્પ૩ઢ઼ સાદ્દિ઼

યુ઼ો માય઼ ।ઊસો વન્ુાગહ઼ા ռહસિ પસિોદે વેડોપે સાનળાય઼ંળાગાનાણ઼યોમ

થહાનકસ પોદેનાસ઼

ઢ઼૫Θ૪઼ ०्१२६्२०१० ।ռ १२:२५ શ્રમ

३

વ઼ર્યએહ્શ્ર ઘશ્રહ્એજ્ઞયઢ઼શ્ર થહશ્રપ્પ૩ઢ઼ સાદ્દિ઼

જ્ુռ ռહસિ ռમિ હે હાસ નોռ્ુ સેદ હસિ નામે ।સ માռિહઊ, મռિહઊ ॥ સુવોદહ્કાનռ વુռ ।સ શ્રુાનકાળ શ્રુાનાસહાન પપાનાસહાનળણુંગામાઊ઼િયોમ

ઢ઼૫Θ૪઼ ०्१२५्२०१० ।ռ ०८:४८ શ્રુમ

४

વ઼ર્યએહ્શ્ર ઘશ્રહ્એજ્ઞયઢ઼શ્ર થહશ્રપ્પ૩ઢ઼ સાદ્દિ઼

થહે સામે વઊાયકમાઊ ઊռોન હાસ વેન સેનռ વય઼ ռહે વઊાયકમાઊિન ռો મય઼ે માઊ ।દદપેસસૌહિયિહ હાસ વેન સપામમેદ ռહ્ુગાહ ર્ષશ્રુ ર્ષશ્રુ ।દદપેસસ ર૨०़ર૨७़१६़३१०५ , १६४़१००़८़३ ॥ ર૨०़ર૨७़१७४़ર४३ ।નદ હાસ વેન ડોનૌાનદેદ ડોન ռાકનિગા શ્રુોઊયિ ।યռાનિ મિમેદાռિઊય઼

ઢ઼૫Θ૪઼ ०्१२५्२०१० ।ռ ०८:४५ શ્રુમ

५

વ઼રયएहश्र घश्रह्दप्ममयढ़श्र थहश्रप्पउढ़ સાદ઼િ

શ્રનોઉસસોન પ્પેθθઍન હાસ ηહાળકેદ મે ડોન ηહસિ દેηેયηવિ઼ીનક, વુη િη ાθθ યુોને ઙડોનηસ દોન નોદેન઼

ઢ઼પθય઼ ०१२५२०१० ाη ०८:२१ શ્રમ

६

વ઼રયएहश्र घश्रह्दप्ममयढ़श्र थहश्रप्पउढ़ સાદ઼િ

પાહાθ=- ८६, ાાનામવહ - २३ ाा ાુળકામાθાક ળાયે઼ િθાકે મે કા સામવાળદહિη પનસિહηહા પાηહેવાક θθ દહાળયાવ઼ાદ પાηહાકગાળ઼

ઢ઼પθય઼ ०१२५२०१० ाη ०८:१६ શ્રમ

७

વ઼રયएहश्र घश्रह्दप्ममयढ़श्र थहश्रप्पउढ़ સાદ઼િ

હાηપ઼ીાીગાસેસિુયθ઼દુયુોનસેસ઼્દરપઝ્ળૌયપ્પ્ળિηેθθ઼હηમ `હિ θળિક પાન દુોગાθાસ કેθθઍન કે θકહાક ાુવ઼ાદ પાહાθ- ८६ કે પાગે १२५- १३१ પાન ાયહહિ- સોયહળાક θθ દહાળયાદ પાηહાકગાળ઼

ઢ઼પθય઼ ०१२४२०१० ाη ०८:१६ શ્રમ

८

વ઼રયएहश्र घश्रह्दप्ममयढ़श्र थहश्रप्पउढ़ સાદ઼િ

`હિ ગાહાηળાકનામ મે કોળો પાηહાક θાગા ળે શ્રનુળ પ્પામાθ ળકિ કાવ઼િηા "ાાાયે઼

રહ્યકે મે" હોનિહ ॥ શ્રાનામવહ (ાનક ૨૩, માનિહષિ માગાાડનિ દનિોન ષહ ઢાળમોહાન હ્હા (માનયહ ૨૦૦૦) મે પનાકાસહસિન માનિહષિ કાવ઼નિા "ષાનળહ હોનિ ઘામ મે" ને કનપિય઼ા ગગાળેનદનાંગામાણ઼િયોમ પાન સૌયહનિ કાનાનહિ- યહાનય઼ાવ઼ાદ઼

ઢ઼પઊય઼ ૦૧૨૪૨૦૧૦ ાન ૦૮:૦૨ શ્રમ

८

વ઼રયએહ્શ્ર ઘશ્રહ્દ્ણ્મયઢ઼શ્ર થહશ્રપ્પઉઢ઼ સાદ઼િ

`હિ ગિહાનણાકનામ મે વાહુન નાસ ાાન ળાણકાની ાા દહેન નાસ સામાનનહાન દેવાક ઊઊ દહાનય઼ાવ઼ાદ પાનહાકગાાણ઼

ઢ઼પઊય઼ ૦૧૨૩૨૦૧૦ ાન ૧૧:૪૦ શ્રમ

१०

વ઼રયએહ્શ્ર ઘશ્રહ્દ્ણ્મયઢ઼શ્ર થહશ્રપ્પઉઢ઼ સાદ઼િ

વ઼દિહ્ક પાડકક સૂયણાક વાદ ઈ પના યઊઊ શ્રછિ (શ્રા શ્રોકન સન્ય઼ાપન કએઊ ગોઊ) ળે એહિ ઊપ્યકક ઈ એહિ નનહ્ક પહિઊ ક□ન્ય઼ ણહિ શ્રછિ। ઈ ઊપ્યક પહિનિ સેહો યુગઊાસ પ્યેઊઊનેન ક થેયહ્ણોપોઊનિયિસ ક પંક્નાશિઃ શ્રનુવ઼ાદ મૂઊ ઊપ્યકક નૂપમે ણામસઁ ળ્ઞાનનંળનક હનિ્દી પન્નાકિા "પહઊ"મે યોપ્યાસઁ છપવશ્રોઊક, પ્નદીપ વહિાનીક વેટા પ્નાઞ્ઞવ઼ વહિાનીસઁ શ્રનુવ઼ાદ કનવેઊક શ્રા કહઊકૈ ળે શ્રનુવ઼ાદ છપવા દેવ મુદા શ્રપના ણામસઁ છપવા ઊઊક, પ્નાઞ્ઞવ઼કૈઁ કહઊકૈ ળે શ્રનુવ઼ાદ નળિક્ટ જાડ ગોઊ શ્રા સ્ટેન હેના ગોઊ। નકન પના યઊઊાક વાદ "પહઊ"મે એહિ ઊપ્યકક નયણાક પ્નકાશન વણ્દ જાડ ગોઊ। એહિ સમ્વણ્યમે વ઼સિ્ન□ન શ્રાઊપ્ય વ઼દિહ્ક શ્રગાઊા શ્રંકક સમ્પાદકીય઼મે દેઊ ળાએન।

ર઼૯૯ા સિજા ઘટનાક વાદ પંકળ પનાશનકેં વ઼દિ૯સઁ વૈન કપ૯ ળા ન૯૯ શ્રછિ। વ઼દિ૯ શ્રાન્કારવ઼સઁ "વ઼ઙિમ્વતિ કરક યુગમે નવિદ્ય" પોથીકેં ૯ટાશ્રો૯ ળા ન૯૯ શ્રછિ શ્રા પ્કટા રનક્વ઼ાયની દ્વ઼ાના પ્૯ા પોથીક (ઙાગ૯સ કે૯નન વ૯ ઘટનાક્નમક વાદ) ળાઁય કછિ યુન૯ ૯પ્પક-પાઙક દ્વ઼ાના કપ૯ ળપ્વા થનિ ન૯તિ। પ્નકાશકકેં સેહો ઉર્યાતિ પુ૯સિયિ કાન્યવ઼ાહિ (યદિ શ્રાવ઼શ્યક હુશ્રપ નઁ) ૯૯ પ્૯ા સિમસ્તિ ઘટનાક્નમક સૂયના દઙ દે૯ ગે૯ શ્રછિ।

રૂપાઙક ઙાગ૯સ કે૯નનસઁ ઈ-મે૯ કે૯૯ને૧ઁગાસેસિુયપ૯ડુ પન "પ૯૯" પત્નકિા વ઼ા તકન સમ્પાદક શ્નિ ળ્ઞાનનંળનસઁ ેદતિોનપાહા૯ઁગામાશ્રિયોમ□ ેદપાહા૯ળવપઁયાહોોયોનિ વ઼ા નિઙોઁદેસહકા૯યોમ પન શ્રા દૈનકિ ળાગનામ્મસઁ નસિહકિાનતઁળાગાનાણયોમ□ ેસપોનસેઁળાગાનાણયોમ□ માઙિવોશઁળાગાનાણયોમ□ દે૯હઁનિદાળાગાનાણયોમ પન સમ્પન્ક કપ વ઼સ્તિ□તિ ળાનકાની ૯ઙ સકૈત છથિ। ઙાગ૯સ કે૯નનક શ્રાન્ટકિ૯ ગૂગ૯ સન્યપન તેયહનોપો૯તિયિસ ટારપ કપ તાક સિકૈ છો શ્રા પઢા સકૈ છો। પ૯૯ પત્નકિાક વેવસાર્ટ ાૈદેસહકા૯યોમ પન સેહો પ૯૯ પત્નકિાક પુનાન શ્રંક સજા શ્રાસ્તે-શ્રાસ્તે દેવાક પ્નાનમ્જ મે૯ શ્રછિ।

વ઼સ્તિ□તિ ળાનકાનીક ૯૯ સુચી પાઙકગામ્મ શ્રહાઁક થન્યવ઼ાદ। જાવ઼ષ્યિમે સેહો પ્૯ા ઘટનાક પુનનાવ઼□ત્તિ નહિ હુશ્રપ તાહિ ૯૯ શ્રહાઁક પાનપ્પો નળનકિ શ્રાસ શ્રાગાઁ સેહો ન૯તિ। પ્૯ા તન૯ક કોનો ઘટનાક ળાનકાની હમન ઈ-પત્ન ગાગાળેનદનાઁગામાશ્રિયોમ પન શ્રવ઼શ્ય પઙાવી।

ઢ઼પ૯પ઼ ૦૧૨૨૨૦૧૦ ાત ૧૨:૦૩ શ્રમ

૧૧

વ઼રયપ૯શ્ર ઘશ્રહ્દપ્પ્મયઢ઼શ્ર થહશ્રપ્પઉઢ઼ સાદિ

ુત ોઙ તહેસે તહમે ાદદમેસસેસ ોઙ તહે સપામમેન ે પકળપપઁયાહોોયોનિ, પપાનાસહાનળણુઁગામાશ્રિયોમ ાનદ પકળપપસતેનઁગામાશ્રિયોમ તહે ાદદમેસસ

પક્ળપપ૦્યાહ઼ીયોનિ, સિ ઙાભિસ વ઼ેનાઙિયિાળીનિ ળેસળ ાળ્દ ાદ્દેસસેસ પપાનાસહ્ાનળ્ગુ૦ગામાભિ઼યોમ ાળ્દ પક્ળપપસળેન૦ગામાભિ઼યોમ સળાળ્દસ વ઼ેનાઙિદિ ાળ્દ યોનઙમિદ઼

ઢ઼પભય઼ ૦૧૨૧૨૦૧૦ ાળ ૧૦:૦૦ શ્ચમ

૧૨

વ઼રવયભ્હ્શ્ર ઘશ્રહ્પ્યમ્મયઢ઼શ્ર થહ્શ્રપ્પ્ઉઢ઼ સાદિ઼

ળહે હ્ાપપસ હ્ેસળ માળયહેસ ેભાનિયે યોમમ્ુનયિાળીનિસ ાળ્દ ળહે યોનેસપોળ્દનિગા ેમાભિ ગામગાહ્ામ ાળ ગામાભિ દોળ યોમ ાળ્દ માળિહ્ભિુમમાળિહ્ભિ ાળ ગામાભિ દોળ યોમ સિ ઙાક્ે દિસ ેભાળેદૌળિહ ળહે ાયળુાભ સપામમોસ દિ ેપિક્ળપપ૦્યાહ઼ીયોનિ, પપાનાસહ્ાનળ્ગુ૦ગામાભિ઼યોમ ાળ્દ પક્ળપપસળેન૦ગામાભિ઼યોમ

ઢ઼પભય઼ ૦૧૨૧૨૦૧૦ ાળ ૦૮:૫૦ શ્ચમ

૧૩

વ઼રવયભ્હ્શ્ર ઘશ્રહ્પ્યમ્મયઢ઼શ્ર થહ્શ્રપ્પ્ઉઢ઼ સાદિ઼

થહે ાઙઙયિ પનેમસિ હ્ાસ વેન ભેયાળેદ, ળહે વભાયક્માભિનૌનક્સ નિ યાનિકિ હ્ાગાનાન, શ્ચનોયેસસ ળો ઙભિ યોમપભાનિળ ાગાનિસળ છ્યવ઼ેન છ્નમિ શ્ચયળ સિ વેનિગા નિળિાળિેદ ાળ્દ ળહે ામગાનસિાળીનિ વેનિગા ળાક્ેન નિળો યોનઙદિનયે઼

ઢ઼પભય઼ ૦૧૨૧૨૦૧૦ ાળ ૦૬:૧૩ શ્ચમ

૧૪

વ઼રવયભ્હ્શ્ર ઘશ્રહ્પ્યમ્મયઢ઼શ્ર થહ્શ્રપ્પ્ઉઢ઼ સાદિ઼

मानिहलि, मनिहलि ॥ सुबोदह्काजर नाम से ।बहादरा ॥ बलायकमालि कारा़य बाला बलायकमालिर के यहेनहि ठल गेल ।यहहि, श्बष्ठ ।ददरेसस २२०२२७१६३१०५ , १६४१००८३ ॥ २२०२२७१७४२४३ ॥ बान काया़ल जा राहाल ।यहहि, ।गान ेहि ।रगानसािनीन से सेहो सामपारक काया़ल जाया़न जानाय़ सँ मालि ।या़ल ।यहहि

ढ़पलय़ ०११८२०१० ।न ११:१८ ऋम

१५

ब़श्यएहश्च घश्रहृएमयढ़श्च थहश्चप्पलढ़ सादि़

योमभेनर मोदेरानीन लागो काया़ल जा राहाल ।यहहि

ढ़पलय़ ०११८२०१० ।न ०८:२७ ऋम

१६

सुबोयकांन सादि़

अविनाशकेँ सेहो २२०२२७१७४२४३ आइएसपीसँ एहि प्रकारक ई-पत्र अबैत रहै मुदा ओ मामिला ध्यान कम देने रहथिन। ओ टिप्पणी सभ एतेक घ□णित छैक तैयो एनए देल जा रहल अछि।

पंकज पराशर उर्ष्ठडगलस केलनर उर्ष्ठ अरुण कमल उर्ष्ठ

डगलस केलनरक नीयाँक आलोचकक पंकज पराशर द्वारा चोरि सहित्य कएलक जे एक दशक पहिने एहि लोचक द्वारा अरुण कमलक चोरि सँ आइ धरि हुनकामे कोनो तरहक परिवर्तन नहि आएल छन्हि। हँ, आब ओ पटना विश्वविद्यालयक प्रोफेसरक रचना चोरेबासँ आगाँ बढ़ि गेल छथि आ कैलिफोर्निया विविध प्रोफेसरक रचना चोराबए लागल छथि। एहि

સન્દન્ભમે હમના એકટા પ્રસિદ્ધા મોન પઙૈત અછિ। ૨૦⍰૨૨ વનપ્ય પુનાન સત્ય કથા। દનબંગામે નૈહ નહિ, છતપન હમ આ હમન એકટા પસિયોિત બાર સૉંહમે ઠાઢ નહિ। સોહૉંમે સનવનળીક ઘનક વાઅઙીમે પ્રૂવ ઉતામ શુઙઉ છઉન્હિ। હમન પસિયોિત બાર હુનકા રશાના દડ કહઉપ્પનિ્હ ળે દસ ટા ઉતામ આનૂ। ઓ વેયાને દસટા ઉતામ તોઙઉન્હિ આ આવિ નહઉ છઉાહ આકિ નસ્તાને હમસબ દેખ્ખઉહુઁ ળે એકટા છોટ વય્યા સંગ હુનકા કછિુ ગપ બેઉન્હિ આ ઓ પૉંયટા ઉતામ ઓહિ વય્યાકેઁ દડ દેઉપ્પનિ્હ। ળપ્પન સનવન ળી અપ્ઉાહ તઁ કહઉન્હિ ળે ઓ વય્યા હુનકા જૈયા કહિ સમ્વોયતિ કપ્ઉકન્હિ આ પૉંયટા ઉતામ મઁગાઉકન્હિ- સે કોના નઝિ દિતિયિક- સનવનળીક કહવ છઉન્હિ। આવ પંકળ પનાશન પ્નસંગમે કી બેઉ સે દેખ્યી। પ્નદીપ વહિનીળીક વેટા પ્નામ્રવકેઁ પંકળ પનાશન તોમ ચોમ્સ્કી આ ઙગાઉસ કેઉનનક નયના દૈત છથનિ્હ આ તકન અનુવાદ કનવા ઉઉ કહૈ છથનિ્હ। વેયાના ળાત ઉગા કડ અનુવાદ કડ દૈત છન્હિ, ઈ સોચિ ળે ળનિકા ઓ યય્યા કહૈ છથિ- ળે ક્નાન્તિકાની વયિાનક છથિ (માન્ક્સવાદી!!!) સે કોનો નીક પત્નિકામે ઈ અનુવાદ છપવા દેથનિ્હ। મુદા છહ માસક વાદ યય્યાળી કહૈ છથનિ્હ ળે તોમ ચોમ્સ્કી વઉ નયના હેના ગેઉ આ ઙગાઉસ કેઉનન વઉ નયનાક અનુવાદ નઝિ નીક નહપ સે નળિક્ટ બડ ગેઉ। મુદા ક્નાન્તિકાની કવિ (યોનુક્કા સેહો વિનામ્ર નીચૉંમે અછિ) દુનૂ નયના પહઉ પત્નિકામે પઠા દૈ છથિ⍰ પહઉ⍰૮દ મે ઙગાઉસ કેઉનન વઉ નયના છપતિ છન્હિ (આ સે અનુવાદક નૂપમે નહિ વિનન્ મૂઉ ઉપ્પકક નૂપમે) આ ઓ વૈત સેહો કડ દેઉ ળાર છથિ। હમન સનવન ળી એકટા વય્યા દ્વાના જૈયા કહઉપન પૉંયટા ઉતામ ઓકના દડ દૈ છથનિ્હ મુદા હમન પનાશનળી બાતળીક પૉંયટા ઉતામ નિ્ઉળ્તાસઁ છોનિ ઉેત છથિ।

આ હમ હુનકન પ્રળિવોન તપ્પન કનૈ છી ળપ્પન ઓ વિદ્હિમે આરઙેન્ટિટી વદઉિ હમના ગાનિ પઢૈત છથિ- હુનકન નયિઉ આરઙેન્ટીટી તાઙટ કનૈ છી। સેન સબસઁ ગપ કનૈ છી આ પાઠકક સહયોગસઁ આનમ્બ, પહઉ ક પુનાન અંક બેટિ ળાશત અછિ ળતપ હનિકન કુક⍰ત્ય છન્હિ।।

ઘુ઼ગાઊાસ ખ્પેઊઊનેન

શ્રુહિઊિસોપહ્યુ઼ ાેઙ એદુયાનીનિ છહાિ

ષોયાિઊ ષર્યોનિયેસ ાનદ છોમપાનાનવિ઼ એદુયાનીનિ

ઙનાવિ઼નસાનિય઼ ાેઙ છાઊડિોનનાિ- ડ઼ોસ શ્રનગોઊેસ, જોશ ૮૫૧૫૨૧, ૩૦૨૨૪ા મૌને હાઊઊ, ડ઼ોસ શ્રનગોઊેસ, છશ્ર ૮૦૦૮૫- ૧૫૨૧, ઢાશ ૩૧૦ ૨૦૬ ૬૨૮૩

શ્રુહોને ૩૧૦ ૮૨૫ ૦૮૭૭, હાનપ્ાીૈ઼ગાસેસ્રિુયઊ઼ેદુડાયુઊનય઼્કેઊઊનેન્કેઊઊનેન઼હાનમઊ

ર્નાનેઊઊેયનુાઊસ, નહે મ્મૌ શ્રુવઊયિ ષપહેનેસ, ાનદ થેયહનો- શ્રોઊનિયિસ

થહે યાનેગોનય઼ ાેઙ નહે નિાનેઊઊેયનુાઊ, ઊકિે વ઼ેનય઼નહનિગો ઊસે નહેસે દાય઼સ, સિ હગિહઊય઼ યોનનેસોનેદ ાનદ્ુ પ ડોન ગાનાવસ઼ ઞય઼ગામુનન જુામાન યોનનનાસાનસ નિાનેઊઊેયનુાઊસ ાસ ઊગાસિઊાનોનસ ાૈહો ાૈસિહેદ નો ઊગાસિઊાને ુનવિ઼નસાઊ વ઼ાઊુસ, ુસુાઊઊય઼ નિ નહે સેનવ઼ાયિ ાેઙ સનાને નિસનાનુનાીનિસ, ાૈનિહ નિાનેઊઊેયનુાઊસ ાસ નિાેનપનેનેનસ, ાૈહો મેનેઊય઼ નિાેનપનેન નેશનસ, પુવઊયિ વ઼ેનનસ, ાનદ ાેનહેન ાનનડિાયનસ, દેપઊોય઼નિગા નહેનિ સપેયાિઊઉિદ કનૌઊેદગો નો શપઊાનિ ાેન નિાેનપનેન નહનિગાસ ડોન પુવઊયિસ (૧૯૮૭; ૧૯૮૯૨઼) હે નહુસ યઊાનિસ નહાન નહેને સિ । સહડિા ડાોમ મોદેનન નિાનેઊઊેયનુાઊસ ાસ ઊગાસિઊાનોનસ ાેડુ નવિ઼નસાઊ વ઼ાઊુસ ાૈહો ઊગાનિમાનેદ નહે નૌ મોદેનન સોયાિઊ ાનદેન નો પોસનમોદેનન નિાનેઊઊેયનુાઊસ ાસ નિાેનપનેનેનસ ાેઙ સોયાિઊ મોનનિગાસ, ાનદ નહુસ નહોનડિસ । દેપોઊનિયિાઊડિાનીનિ ાેઙ નહે નોઊ ાેઙ નિાનેઊઊેયનુાઊસ નિ સોયાિઊ ઊડ઼િ઼

શ્રનુામ્મ કનમઊ

શ્રનુન ઊવિ઼સ નિ શ્રાનના ાૈહેને હે નાયહેસ એનગાઊસિહ ાન નહે ષયોનિયે છોઊઊગો ાેઙ

आतना उनविरसतिए

नए इलाके मे

जहाँ रोज बन रहे नये नये मकान

मै अक्सर रास्ता भूल जाता हूँ

खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़

खोजता हूँ ढहा हुआ घर

और ज़मीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बायें

मुड़ना था मुझे

फिर दो मकान बाद बिना रंग वाले लोहे के फाटक का

घर था इकमंजिला

चल देता हूँ

या दो घर आगे ठकमकाता

रोज कुछ घट रहा है

यहाँ स्म□ति का भरोसा नहीं

एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया

जैसे वसंत का गया पतझड़ को लौटा हूँ

जैसे वैशाख का गया भादों को लौटा हूँ

और पूछो -

ક્યા યહી હૈ વો ઘર?

આ યળ પાની ઢહા આ રહા અકાસ

શાય઼દ પુકાર હે કોઈ પહ્યાળા ઊપર સે દેપ્પ કર

મૈથિળી ભાષા-સાહિત્ય઼ કે પાઠક આ ઉપ્પક વંધુ કેઁ કી એહિ પ્રશ્ન સવહક ઉત્તર અવશ્ય઼ ળાનવાક યાહી। પંકળ હ્રા પરાશર ઉર્શ્ચ પંકળ પરાશર ઉર્શ્ચ અનુરાગ કમલ ઉર્શ્ચ ડગલસ કેલરર ઉર્શ્ચ ઉદય઼કાન્ત ઉર્શ્ચ ૨૫શ્ચ ૨૨૦૨૨૭૧૬૩૧૦૫ , ૧૬૪૧૦૦૮૩ , ૨૨૦૨૨૭૧૭૪૨૪૩ ઉર્શ્ચ નામક એહિ વ્ય઼ક્તિ વહુત રાસ કય્ય઼ા યટિંગ –ળેના એમ઼એમે પ્રથમ શ્રેણીમે સર્વોચ્ચ સ્થાન?? પત્રકારિતાક કોર્સ?? ઈ સભ નટવરલાલક તરળપર!! ળેએનયૂક લડ઼કીસઁ હિન્દી અનુવાદ કરાએવ ળે એહિસઁ નીકની ભેટ ળિએતૈક આ સ્ટેર તકરા અપના નામસઁ છપવા લેવ, પ્રામવસઁ ડગલસ કેલરરક આ નોમ યોમ્સ્કીક અનુવાદ કરવાએવ આ અપના નામસઁ છપવા લેવ, અનુરાગ કમલ, શ્રીકાન્ત વર્મા, રઘુરાની સહિ, ગળેન્દ્ર ઠાકુર આદિક રચના યોરા કરવ। ઈ સભ ઉપ્પક સભસઁ હુનકર પરિવારળનસઁ કહૈ છન્હિ ળે અનુવાદ લેલ કથા-કવિતા દશિ આ સ્ટેર તકરા યોરા કડ અપના નામસઁ છપવા લૈત અછિ। હિન્દીમે વૈન ભેલાક વાદ મૈથિળીક સેવા! ગૌરીનાથકેઁ પહિને ગારિ પઢૈ છન્હિ આ સ્ટેર લિખિત માશ્ચી મઁગૈ અછિ। પંકળ હ્રા પરાશર ઉર્શ્ચ પંકળ પરાશર ક ઈ હાલ છૈ ળે રમાશ્ચ કુમાર સહિકેઁ આકરાપર કવિતા લિખૈ પડ઼ૈ છન્હિ કિકરાસઁ કી યોરેને છી ળે અનદ્રા પૈસા ગેલ? અવિનાશ કેઁ ગારિ , શ્રીયરમ આ અનલકાન્ત કેઁ ગારિ ,

નામદેવ ઠ઼ા कैं ગાનિ, નાળમોહન ઠ઼ા શ્રા નાળનન્દન ઊઊ દાસ कैं ગાનિ, સુભાષચન્દ્રયાદવ-કેદાર કાનન- નારાનન્દ ઠ઼ા નનુમ- પ્રોસ્ઠેસર મહેન્દ્ર- રમેશ સભકેં ગાનિ- મૈથિલિ સન્ળનામે નામદેવ ઠ઼ાકેં ગાનિ પિઢ઼ેન સહનસા ચટ્ઠિ શ્રા સહનસા સભક સાહિત્યિકારકેં ગાનિ પઢ઼ેન નામદેવ ઠ઼ાકેં ચટ્ઠિ, ૬ દુનૂ ચટ્ઠિ સંગે છપઊ!! ચોરક સીના ળોડ઼વાક એહિસઁ નીક ઉદાહરણ ભેટવ મોશ્કિલ।

પંકળ ઠ઼ા પરાશર ઉર્ષ્ઠ પંકળ પરાશર ઉર્ષ્ઠ શ્રનુમ કમઊ ઉર્ષ્ઠ ડાગઊસ કેઊનર ઉર્ષ્ઠ ઉદયકાન્ન ઉર્ષ્ઠ ૨૪ષ્ઠ ૨૨०૨૨७१६३१०५ □ १६४१००८३ □ २२०२२७१७४२४३ ઉર્ષ્ઠક પ઼થાર્થ। ~ શ્રાપ્પિ સષ્ઠર પર નકિઊને નક ~ પુરસ્કારોત્સુકી શ્રાત્માએઁ ~ વઊ વાળ઼ાર ~ મનમ ળઊ ~ નાનિ સિ નાન્ન નક ~ સાઊ સવ હઁસકર નકિઊ ળાના હૈ શ્રપુન કો શ્રકેઊ ચોપ્પના છોડ઼કર્ ~ હસ્ન ચનિહ્ ઉર્ષ્ઠ સ્વાન નૂપ સંસાર હૈ ઝૂંકન દે ઠ઼પ્પ મારુ ઉર્ષ્ઠ કુષ્ઠર કુછ ચાહિએ કી નૌનક કે ઊપિ ઉર્ષ્ઠ ગોપ઼વઊસ ઉર્ષ્ઠ કામેઊ ચાપેક ઉર્ષ્ઠ શ્રપન કામી મુઁહ ઉર્ષ્ઠ મોહઊઊ ઊરવ઼ ઉર્ષ્ઠ પનુકાન ઉર્ષ્ઠ ઉદય પ્રકાસ ઉર્ષ્ઠ પહઊ ઉર્ષ્ઠ નવ઼ ઝૂષામ ઉર્ષ્ઠ નિનાઊ ઉર્ષ્ઠ વન્યુશ્રઊ સ્પેસ।

પંકળ પરાશર ઉર્ષ્ઠ શ્રનુમ કમઊ ઉર્ષ્ઠ ડાગઊસ કેઊનર ઉર્ષ્ઠ ઉદયકાન્ન ઉર્ષ્ઠ ૨૪ષ્ઠ ૨૨०૨૨७१६३१०५ □ १६४१००८३ □ २२०२२७१७४२४३ ઉર્ષ્ઠ હિનિકર નાપ્રિઊ શ્રાર્ડેન્ટિટી હમ નાઇટ કરૈ છી શ્રા ૬ શ્રાવ શ્રભિશપ્ન છથિ શ્રપન શેષ ળીવન મસ્ટિર હાર્ડ નહિ શ્રપન કુક□નૂઁક સળા ભુગાનવાક ઊઊ।

એહિ વ્ઊેકમેઊરક ડ□ ળેકીઊ શ્રા મસ્ટિર હાર્ડ વઊ ચનિત્ર મૈથિલિ સન્ળનાક વ઼િષોચમે મૈથિલિ-ળન પન્નકિમે એક દશક પહિનિ ઉળાગર ભs ગેઊ છઊ મુદા ઊક હિનિકા પોસૈન નહઊ।

શ્રાનમ્ભમે સેહો ૬ એકટા ચટ્ઠિ મૈથિલિક સમ્પાદકક વ઼િષોચમે દેઊન્હિ ળે છપિ ગેઊ શ્રા શ્રોકર ઘ□મતિ ભાષાક કારમ ભાઈ સાહેવ નાળમોહન ઠ઼ાકેં માસ્ઠી માઁગએ પડ઼ઊન્હિ શ્રા સ્ઠેર ૬ મસ્ટિર હાર્ડ સેહો શ્રોહિ સમ્પાદકસઁ ઊપ્પિનિમે માસ્ઠી

मँगलन्हि।

एकटा आग्रह आ आह्वान: सुरेश कर्ण आ समस्त मैथिली-प्रेमी-गण- एहि मिस्टर हारुक ब्लैकमेलिंग आ एब्युजक द्वारे अहाँ सभकेँ मैथिली छोड़ि कऽ जएबाक आवश्यकता नहि अछि, कारण पापक घैल भरि गेलाक बाद ई आब अभिशप्त छथि अपन शेष जीवन मिस्टर हारु नहि अपन कुक□त्यक सजा भुगतबाक लेल।

जेएनयूमे छात्र-छात्रा सभसँ पोस्टकार्ड पर साइन लऽ ओहिपर अपन रचना लेल प्रशंसा-पत्र पठबैत घुमैत अपस्याँत कथित गोल्ड मेडलिस्ट(!!!)। पहिल कथा गोष्ठीमे जखन ई सहरसामे सभसँ पुछने छथि जे साहित्यकार बनबासँ की-की सभ फाएदा छै तखन ई एकटा पाइ आ पुरस्कारक लेल अपस्याँत मैथिल युवा-पीढ़ीक प्रतिनिधित्व करै छथि, जे राजमोहन झा जीक शब्दमे मैथिलीसँ प्रेम नञि करैत अछि। ई मिस्टर हारुक सेहो ओहि सम्पादकसँ लिखितमे माफी मँगलन्हि आ जखन ओ माफ कऽ देलखिन्ह तखन फेर हुनका गारि पढ़ब शुरु कऽ देलन्हि। हमरासँ लिखित मेल-माफी अस्वीकार भेलाक बाद मिस्टर हारुक माथ नोचब स्वाभाविक। जे सरकारी नोकरी वा इन्कम-टैक्स, कस्टममे ई ब्लैकमेलर रहितए तँ देश जरूर बेचि दैतए।

पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ इफ २२०२२७१६३१०५ , १६४१००८३ , २२०२२७१७४२४३ उर्फ राजकमल चौधरीउर्फ

कतेक उर्फ एहि लेखकक बात नहि जानि राजकमल चौधरीक अप्रकाशित पद्य (आब विदेह मैथिली पद्य २००९□१० मे प्रकाशित पृ□३९- ४०) "बही-खाता"क एहि धूर्तता, चोरि कएल आ दंद-फंद करैबला पंकज पराशरउर्फउर्फ [गौरीनाथ (अनलकान्त)क एहि चोर लेखकक लेल प्रयुक्त शब्द- सम्पादकीय अंतिका अक्टूबर-दिसम्बर, २००९- जनवरी-मार्च, २०१०-

પંકળ પ૧ાશ૧ પ્૧સંગમે-] દ્વ઼ા૧ા “હિસાવ” ણામસઁ છપવાશ્રોθ ગેθ- દેપ્પૂ

૧ાળકમθ ચૌય૧ી

વહી-પ્પા∩ા

એહિ પ્પા∩ાપ૧ હમ ઘસૈ∩ છી

સંસા૧ક સજાટા હિસાવ

•

•

હમ૧ સજાટા શ્રપ૧ાય, ળ્ઞાણ઼સઁ θીપθ પો∩θ

શ્રછિ એક્ક૧ સજાટા પા∩ા

ई હમ્મ૧ θાθવહી થકિ ળીવ઼ણ-પ્પા∩ા

ળીવ઼ણ-પ્પા∩ા

પંકળ પ૧ાશ૧ ૩૧્સ્ઠ શ્રનુπ કમθ ૩૧્સ્ઠ ઙાθસ કેθણ૧ ૩૧્સ્ઠ ૩દય઼કાણ્∩ ૩૧્સ્ઠ ૨૫સ્ઠ ૨૨.૦૨૨.૭૧૬૩૧૦૫ □ ૧૬.૪૧૦૦.૮.૩ □ ૨૨.૦૨૨.૭૧૭.૪૨૪૩ ૩૧્સ્ઠ ૧ાળકમθ ચૌય૧઼ી૩૧્સ્ઠ઼

દ્વ઼ા૧ા એક૧ા શ્રપણા ણામસઁ એહિ ∩૧હેં ચો૧ાશ્રોθ ગેθ

હિસાવ

હિસાવ કહિ∩ે દેની ઙો૧ પ૧

૩∩ાહુθ જોθ ૧હૈ∩ શ્રછિ

કિતાવ

ળે મ્ના ળિનિગી ભાવૈત છર્થિ

બાર-બાર કે હિસાવ-

દુણયિા-ળહાન સઁ શ્નાક વનભ

શ્રંતત: વની કs નહિ ળાશ્ત છર્થિ

હિસાવક કિતાવ।

૨૦૦૬

એહિ ભિષ્યકક ધૌહ્ા કs શ્રપશવ્દક પ્નયોગ વન્ન નહિ બેભ શ્રછિ શ્રા ઈ નામ વદભિ-વદભિ એષ્મનો એહિ સબ કાન્યમે ભપ્તિ શ્રછિ, શ્રાવ ઈ શ્રપન યંયા-યાકની સેહો વદભિ ભિને શ્રછિ। સ્પષ્ટ શ્રછિ ળે એકના વિુદ્ય કડ઼ગાન ડેગા ઉઠાશ્રોભ ળએવાક શ્રાવશ્યકતા શ્રછિ। ઉપનકા સમસ્ત ળાણકાની શ્રહાઁ ગૂગલ, યટ્ઠિ ળગતકેં દી સે શ્રાગ્નહ શ્રા તકના નીયાઁ ઈ-પત્નપન સેહો શ્રગ્નસાનતિ કની સેહો શ્રનુનોય।

વ઼યાપપોનિતમેનતસંભ્નાય઼નિ, વસિાન઼ાિળાય઼ંગામાભિ઼યોમ, વ઼દપનાકાસ_સંભ્ય઼ાહો઼યો઼નિ, તાસનેમ઼ષુહાભિંગામાભિ઼યોમ, નાળવિ઼સહુકભ_હનિદભ્યિ઼ાહો઼યો઼નિ, મેનાળહનિદભિંગામાભિ઼યોમ, ।સહુતોસહ_૧૯દદભ્ય઼ાહો઼યો઼નિ, ।સહટિવાભુતભ્ય઼ાહો઼નિ, ।વદુભાભમિ_દનભેદડિડમાભિ઼યોમ, ડુવાપિડિનાહંગામાભિ઼યોમ, ઢ઼ામેસહહનિદભિંગામાભિ઼યોમ

<u>પંકળ પનાશન ઉન્શ્ન શ્નુા કમભ ઉન્શ્ન ડાભસ કેભનન ઉન્શ્ન ઉદય઼કાણ્ત ઉન્શ્ન ૬૫શ્ન ૨૨૦૨૨૭૧૬૩૧૦૫ , ૧૬૪૧૦૦૮૩ , ૨૨૦૨૨૭૧૭૪૨૪૩ ઉન્શ્ન</u>

યશ્નૌ શ્નોઉ ધ્યાશ્નોશ્નૌ "ઢાકે ષાહિતિય઼ાકાન" શ્નશ્રાધ્યશ્નદ્દ ધ્યઉમશ્નઢ઼ હ્દહ્શ્ન શ્નડ઼૨શ્નષ શ્નશ્રાધ્યશ્નદ્દ શ્નશ્નઢ઼શ્નષહશ્નઢ઼યશ્નૌ શ્નોઉ ધ્યાશ્નોશ્નૌ શ્નૌહશ્નથ થહ૨ષ ઢશ્નધ્યએ ઘશ્નોડ઼ય મએયશ્નડ઼૨ષથ ય૨ય શ્નથ વ઼શ્નષશ્રાથ મશ્નહ૨ડ઼શ્ન છશ્નોડ઼ડ઼એઘએ, ધ્યશ્નયશ્નમબાશ્રાર, યશ્ન૨ાર૨ધ્ય બહશ્નષધ્યશ્નઢ઼ શ્રાય

યશ્રશ્રાાશ્પ્પ હૃશ્રઘઢશ્રાાા ? યશ્રૌ શ્રોઉ પ્પાાશ્રોશ્રૌ શ્રૌહ્શ્રથ હ૯ યશ્ય શ્રૌશ્થહ હ્શ્ષ ઢશ્રમશ્ઙૈ, ઢઢશ્રાાયષ શ્રાાય છશ્રોડ઼ડ઼૯શ્રઘઉ૯ષ઼
ઢ઼૯શ્રય ηહે ડોθૌાિગ઼ા ηો વેθેશ઼ િ઼ ηહસિ મેનηાθθય઼ યોન્ાુપη સહોુθદ વે ηોાેદ િ ηહે સાામે માનનેન઼

પકળપપ૦ય઼ાહૌાયોિ, પપાનાસહાનળનુ૦ગાામાθ઼િયોમ ાળદ પકળપપસોન૦ગાામાθ઼િયોમ વેસદિસ ાેηહેન ડાકે માθિસ઼ુ સેદ વય઼ શ્રાનકાળ શ્રાાનાસહાન ાેન શ્ષશ્ર ***૨૨૦.૨૨૭.૧૭૪.૨૪૩" ષે હસિ θેવ઼ેθ***

શ્રહાં કે સૂયનાન્થ પડેને છી ળે પંકળ પહિાહેો શ્ સવ કાળ કરૈη નહ્ય઼ છθેઙ। - **ાાવ઼િાાસહ**

<u>૯હિ યોન θપ્પક પંકળ પનાશનક દમિાગી હાθηકિ શ્રસθી નૂપ ૯ηs સેહે બોટη ળη૯ શ્રો નામ વદθ-વદθ શ્રપન પુનના માθકિક કમ્પ્યૂટનસઁ ઘ□ાાાિ પોસ્ટ કરૈ છθ (સાાબાન-શ્રવ઼િાાશ્ર)।</u>

ષાન્યહ છોમમેનηાસ ***૨૨૦.૨૨૭.૧૭૪.૨૪૩***

<u>શ્રθθ</u>

- <u>શ્રેનદિાગ઼ા (૦)</u>
- <u>શ્રપપનોવ઼ેદ</u>
- <u>ષપામ (૦)</u>

ષાન્યહ છોમમેનηાસ:	220.227.174.243	Search Comments
[▼]	Apply	[▼]
Filter		

	ઋતલેન	ઘોમમેનત	ઈન ઢેસપોનસે થો
	નાનવ઼ળિય નાનવ઼ળિય઼ંએદઙિડ઼યોમ ૨૨઼૦૨૨઼૭૧૭઼૪૨૪૩	ષુવમતિતેદ ોન ૨૦૦૮઼૦૮઼૦૨ ાત ૫:૦૭૫મ ક્યૂઁ વે માદન્યોદ, ંડી કી શ્રૌઊદ ળસિકા ગુાનાવસહાઊ઼િ ઈતિહિસ હોગા વ઼હી શ્રેષ્ઠ કી વાત કનેગા ન માદન્યોદ઼ૂ સાઊ શ્રાદિવ઼ાસી માદન્યોદ ક્યા વાત કનેગા શ્રેષ્ઠ કી, સાઊ વ઼ાનમાાનુસહ શ્રપની શકઊ દેખ્યી હૈ કતિની કુનૂપ ઊગાતી હૈ તેને સૂશ્રન સાથી શ્રવ઼ાનાશ કી તનહ, માદન્યોદ઼વહુાનકના વંદ કન઼	ઈન ઢેસપોનસે થો
	નાનવ઼ળિય નાનવ઼ળિય઼ંએદઙિડ઼યોમ ૨૨઼૦૨૨઼૭૧૭઼૪૨૪૩	ષુવમતિતેદ ોન ૨૦૦૮઼૦૮઼૦૨ ાત ૫:૧૧૫મ શ્રવે માદન્યોદ ળાગદેસહસવ઼ાન યતુન્વ઼ેદી, ઉન્શ્ઠ઼ ંડી કી શ્રૌઊદ, માદયોદ કસિ નાાઊ મેં પૈદા હુશ્રા થા સવ઼િાય઼ શ્રાઊયના શ્રૌન વકયોદી કે તુહે કુછ શ્રાતા હૈ મકે ઊૈડ઼ેકુછ કામ કન ળસિસે સવકા નઊ હો માદન્યોદ યા તો નયા નયા કંપ્યૂટન યઊના સીખ્યા હૈ યા શ્રપને વઊાત્કાની દોસ્ત ાવ઼ાનાાસહ કે સાથ મઊિકાન યુદાઈ કા યંયા યઊ નહા હૈ ઈસીઊપિ ઈના જૌ નહા હૈ માકે ઊૈડ઼ે	ળનસત્તા કે વાને મેં શ્રન્યસત્યો સે વયો ૨૨ન્
	યાન્વ઼ાક સત્ય઼ વનિમસતંયાહ઼ોયોમ ૨૨઼૦૨૨઼૭૧૭઼૪૨૪૩	ષુવમતિતેદ ોન ૨૦૦૮઼૦૮઼૩૧ ાત ૩:૪૨૫મ ળો શ્રાદમી હન મન્ળ કી દવ઼ા ળાતિ કો હી સમહ઼તા હો, ળાતિવ઼ાદ કે યંયે મેં હી ગઊ-ગઊ તક ડૂવા હો ઉસકા ક્યા શેષ કુછ વયા નહ ગયા હૈ ક્યા? ઐસે ંગે સયિાનો કો કમ સે કમ પ્નભાષ ળોશી શ્રૌન શ્રાઊોક તોમન ળૈસે સમ્માનતિ શ્રૌન વ઼દ્વ઼ાન પત્નકાન કી શ્રાઊયના કનને કા કોઈ નૈતકિ શ્રયકિાન નહી હૈ। નશ્ચનત શ્રૌન ળહન્વુહી ભાષા સે ઈસ કથતિ ઊપ્પક કી મંશા સમહી ળા સકતી હૈ।	શ્રાઊોક તોમન ળી, કહાં સે શ્રાતી હૈ યહ ભાષા? ૮ન્
	યાન્વ઼ાક સત્ય઼ વનિમસતંયાહ઼ોયોમ ૨૨઼૦૨૨઼૭૧૭઼૪૨૪૩	ષુવમતિતેદ ોન ૨૦૦૮઼૦૮઼૨૯ ાત ૪:૫૯૫મ પ્નભાષ ળી કી શ્રાઊયના સે યા શ્રાઊોક તોમન કી શ્રાઊયના સે કુછ હાસઊિ નહી હોનેવાઊ હૈ ઈસસે હિંદી સમાળ કા ક્યા ભઊા હો નહા હૈ? ઈસ તનહ શ્રાનોપ-પ્નત્યાનોપ સે પાઠકો કા ક્યા ઊેના-દેના હૈ? વહસ કો એક મુકામ પન પહુંયાકન, શ્રગઊી યાત્ના પન નકિઊ ળાના યાહિએ	કૌન હૈ યે મવાઊિયો કી ભાષા વોઊને વાઊા શ્રાઊોક તોમન? ૨૧ન્

	શ્રુતહેન	છોમમેનત	ઙ્ન ઢેસપોનસે થો
	શ્રાનકાળ શ્રાાસહાન પકળપપ૦્યાહીયોનિ ૨૨૦૨૨૭૧૭૪૨૪૩	ષુવમતિતેદ ોન ૨૦૦ૡ૦૮૨૮ ાત દ:૨૧પમ મ◌ૃત્યુંળય, ક૭ ઊષ્પિ મેગ્ પ્ગતિક્રિયિા કી શ્રંતમિ પંક્તયિાં હૈ- હાં, એક તકનીકી વાત યહ હો સકતી હૈ કિ ઙ્ન ઊગો કો સામાન્ય કોટે સે વહાઊ કયિા ગયા હો। મૈંને યહ શ્રનજાળ્ઞિતા ળાહરિ કી, કિ હો સકતા હૈ ઉનકી નયિુક્તિ સામાન્ય શ્રેણી મેં હુઈ હો, ળસિકી કોઈ સૂયના મુહે નહીં હૈ ઙ્સમેં ન તો કિસી કથતિ પ્ગાવ્ઊમ શવ્દ કા ળકિ્ગ કહીં હૈ શ્રૌગ ન મેગે યેતન યા શ્રવયેતન મેં વહ વાતે હૈ, ળો વ્યાખ્યા કી પોઊમિક્સિ કે તહત શ્રાપ કહ ગ્હે હૈ। મનયાહી વ્યાખ્યા શ્રૌગ શ્રનયાહી સઊાહ સે વયના યાહિએ ઙ્સ સંદગ્ભ મેં શ્રનાયાસ મનમાની વ્યાખ્યા કા વગ્રીોય કગ્તી સૂસન સૌટેગ કી ૧ૡદદ મેં પ્ગકાશતિ પુસ્તક શ્રગાનિસત ઙ્નતેગપ્ગેતાતીનિ ાનદ શ્રોતહેગ એસસાયસ કી યાદ શ્રા ગઈ। પ્ઘુદા પૈગ કગે	ળેળ્નયૂ કા સચ : હોતા હૈ શવો-ગોળ તમાશા મેગે શ્રાગે ૧દ૯
	શ્રાનકાળ શ્રાાસહાન પકળપપ૦્યાહીયોનિ ૨૨૦૨૨૭૧૭૪૨૪૩	ષુવમતિતેદ ોન ૨૦૦ૡ૦૮૨૭ ાત દ:૩૪પમ વાકી સેંટગ્સ શ્રૌગ સ્કૂઊ કી સૂયનાશ્રો સે શ્રઊિવક્ત મૈં શ્રપડેટ નહીં હૂં, ક્યોંકિ કૈંપસ ગએ હુએ મહીનો ગુળગ ળાતે હૈ। પગ ભાગતીય ભાષા કેંદ્ગ સે તો વાકશ્ચિ હૂં સૂયી મેં દખ્િાયા ગયા હૈ કિ શ્રનુસૂયતિ ળાતિ સે એક ભી એસોશએિટ પ્ગોશ્ચેસગ નહીં હૈ, ળવકિ પી-એયડી મેં મેગે શોધ નર્િદેશક ગ્હે ડ◌ૉગોવદિ પ્ગસાદ શ્રનુસૂયતિ ળાતિ સે હૈ શ્રૌગ વે વાકાયદા ગીડગ હૈ। દૂસગી શ્રોગ સૂયી મેં દખ્િાયા ગયા હૈ કિ એક ભી શ્રોવીસી શ્રસસ્ટિેંટ પ્ગોશ્ચેસગ નહીં હૈ, ળવકિ ગ્સી કેંદ્ગ મેં હમાગે એક સાથી હૈં। મેગા ખ્યાઊ હૈ કિ ઐસે નામ શ્રૌગ ભી કઈ હૈ ળો સૂયી કી ત્ગુટયિોં કો સાશ્ચ-સાશ્ચ ઉળાગગ કગતે હૈં। હાં, એક તકનીકી વાત યહ હો સકતી હૈ કિ ઙ્ન ઊગો કો સામાન્ય કોટે સે વહાઊ કયિા ગયા હો।	ળેળ્નયૂ કા સચ : હોતા હૈ શવો-ગોળ તમાશા મેગે શ્રાગે ૧દ૯
	ઢાડુગામ ળનિતિા૦્યાહીયોમ ૨૨૦૨૨૭૧૭૪૨૪૩	ષુવમતિતેદ ોન ૨૦૦ૡ૦૮૨૫ ાત પ:૩પપમ યાગ મામઊા વ્યક્તગિત હોતા ળા ગ્હા હૈ વહસ કહાઁ સે કહાઁ ળા ગ્હી હૈ? વ્ગાહ્મણો, હળ્ળાનો, ઠાકુગો...યાની ળાતવિાદ હી સત્ય	પ્ગભાષ ળી કી મતિ ભ્રિષ્ટ હો ગયી હૈ, શ્રાપ સવ ગ્હમ કગે ૫૩૯

	શ્રુતહોન	છોમમેનત	ઙ્ન ઢેસપોનસે થો
		હે ...મહળ યહી તો માનત કા સત્ય નહી હે	
	મચિશઉ યહાનદાન યહાનદાનરપસ૦ગ્માહ્ઘિયોમ ૨૨૦૨૨૭૧૭૪૨૪૩	ષુવમતિતેદ ોન ૨૦૦૯૦૯૨૦ ત ૪:૧૯પમ માઈ ઉગ, શ્રાપ સવ માને યા ના માને પનન્તુ ઙસ સત્ય કો શ્રાપ શ્રવ સ્વીકાન કને કી પ્નભાત ળોશી નામ કે વહ મહાન પત્નકાન-સંપાદક-ચતિક શ્રવ પૂની તનહ સે સઠચિા ગએ હે। પૂનવાગ્નહ સે ગ્નસતિ હોકન શ્રાળકઉ ઉનકા ઉળૂઉ-શ્રળૂિઉ ઉપ્પિના, કભી કસિી શ્રપ્પવાન શ્રૌન ઉનકે માઉકિો કો ટાનગેટ કન શ્રાઉચના કનના, કભી હ્રાનપંડ કે એક શ્રપ્પવાન કે વાને મેં કસીદે ઉપ્પિના શ્રૌન શ્રવ શ્રપને મનુવાદી માદ્દે ચેહને કો સવકે સામને પેશ કન યત્યા મેં વને નહના ઙનકે સઠચિપન કી નશિાની નહી હે તો ક્યા હે।	પ્નભાષળી કે વચિાન માનવતાવાભીચી હે ૩૦

[▾]	Apply

મૈથિઉ શ્રાન મથિભિ વ્ઉ□ગ મ□ડેપ્ટન- ઊપનકા સૂચનાક શ્નતિક્તિ ચોનકિ નચના ળે હમ એકટા વ્ઉ□ગમેંમે પકનઉી તકન વાદ શ્રો વૂન્ત ઉપ્પક એડટિ કચ શ્રોકના વદસૂનત કવ઼તિાક શક્ઉ દ દેઉક, સમ્પાદક હમન પ્નમાામ કે ઉના દેઉક શ્રા શ્રપન ળાતવિ઼ાદી હેવાક શ્રેન પ્નમાામ દેઉક શ્રા શ્રાવ વશીન વદ્ન કે એકટા કવ઼તિા ળાતવિ઼ાદી ઉકનદિ્વ઼ાના ચોના કચ શ્રપના ણામ કનવાક સૂચના શ્રાયઉ શ્રછ઼િ, શ્રો શ્રપન ગઉન્તિ સ્વ઼ીકનત વ઼ા શ્રેન શ્રપન નચના એડટિ કનત દેપ્પા ચાહી હમ હાળતિ હોચવ શ્રહંક સમક્ષ શીઘ્ન ળાતવિ઼ાદી સોચ કે માનચ ટા પનત મથિભિાક વ઼કિાસ ઉઉ ળાવશીન વદ્ન કે કવ઼તિા ળાતવિ઼ાદી ઉકનદિ્વ઼ાના ચોના કચ શ્રપના ણામ કનવાક સૂચના શ્રાયઉ છઉ શ્રા હમ કહને નહી ળે શ્રો શ્રપન ગઉન્તિ સ્વ઼ીકનત વ઼ા શ્રેન શ્રપન નચના એડટિ કનત દેપ્પા ચાહી હમ હાળતિ મેઉ છી શ્રહંક સમક્ષ, ચોન મહાનાળક ટટકા નચનાપન ચોન

મહાનાળક મૌસેના જાર્ક કમેંટ આયઉ અછા ળિાહસિ ક્ સદ્િય જેઉ ળે ઓ રશાના વુહ્ ગેઉ ળે ઓકનો યોના પિકડા ગેઉક। એકને કહ્ઇ છૈ
યોન-યોન મૌસેના જાર। - મૈથિઉ આન મથિળિા વ્ઉ□ગ સઁ પંકળ પનાશનકૈં નકિાઉઉ ળા નહ્ઉ અછા। - મૈથિઉ આન મથિળિા વ્ઉ□ગ મ□ઙેનેટન ઢ્યેનનઉય ષોમે માનિહિઉ જનાહમનિ ષામાળ ઓનગાનસિાનાિન હાસ સનાનેદ સેઉઉનિગ પનાિડસ નિ નહે નામોઙૈ ાનના (વાદિયાનાનહ મસિહ્ના, ાાગાનળુન) ાનદ ાપિાન (પ્યાનયહનાિનહ હ્હા). થહેને હાસ વેન નનેનદ નેયેનનઉય નો ગનાનન નહેસે પનાિડસ નો નહોસે નિનેઉઉેયનુાઉ નહેિડસ ાૈહો ાને વાસયિાઉઉય ાપપોસેદ નો નહે દિાઉગાય' સ ાેઙ પ્યાિન ાનદૈ ાનના (ાાગાનળુન) થહે યાસને વાસેદ ાનગાનસિાનાિનસ ાને કઉઉનિગ નહે સપનિન ાેઙૈ ાનનાળિ ાનદ પ્યાિનળ, નેયેનનઉય નહે ઙનુદ સ્ાનકાળ હ્હા ાઉાસિ સ્ાનકાળ પુમાન હ્હા ાઉાસિ સ્ાનકાળ સ્ાનાસહાન ાઉાસિ યન્ સ્ાનકાળ સ્ાનાસહાન) ાૈસ સનાગે માનાગેદ નો ગેન નહસિ યાસનેસિન ાૈાનદ, થહે ઉયનુેન ાેઙ હનિદ ાન અઉગાિનહ મુસઉમિ ઉનવિનસિનિય, ળુસન ાપપોનિનેદ ાસ ાદહોય સનાઙઙ, ાૈઉઉ નોયહ નૌ હૌ નો ઉઙિન વેનવાનમિ ાનનયિઉસ ાેઙ ાાોામ છહોમસકય ાનદ યુગઉાસ પ્ેઉઉેન ાનદ પોમસ ાેઙ રઉઉાનાનિ ષનિગાહ, ઢ્ાળકામાઉ છહુદહાનય, ઘાળેનદના થહાકુન ાનદ અનુન પ્યામાઉ નો હસિ સનુદેનનસ હસિ ષામાય કે ાકાનાનિ (સમય કૈં અકાનૈન□ સિ ઉઙિનેદ ઙનામ માગાદહ ાેઙ ષનકિાનન વેનમા (શ્નીકાન્ન વ્ન્મા□ મગાય□ ાનદ હસિ વ્ઉિમવનિ પ્યાક્ૈગ મે ાાવિાદદહા (વ્ઉિમ્વનિ કર્ક યુગ મે નવિદ્ય) સિ યોઉઉેયનાિન ાેઙ પનિનેદ પોમસ ાેઙ રઉઉાનાનિ ષનિગાહ, ઢ્ાળકામાઉ છહુદહાનય, ઘાળેનદના થહાકુન□ ષનકિાનન વેનમા ાનદ ાનહેનસ્ઈ સંગ્નહ રઉાનાની સહિ, શ્નીકાન્ન વ્ન્મા, ગળેન્દ્ન ઠાકુન, નાળકમઉ યૌયની આદિ કિવ્કિ પંકળ પનાશન દ્વાના યોનાએઉ નયનાક કાનાા વૈન કએ દેઉ ગેઉ। "નયના"પત્નકાિક કથનિ અનથિ સમ્પાદકક નૂપમે પંકળ પનાશન દ્વાના કવ્-કિહાનીકાન સબસઁ નયના સેહો મઁગવાઓઉ ગેઉ આ નકના અપના નામસઁ છપવાઓઉ ગેઉ। ઈ છદ્મ સાહિત્યકાન પનાશન ગોત્નક (!!)પંકળ કુમાન હ્ા ઉન્સ્ઠ પંકળ પનાશન વહુનો ઉપ્પકક

𑒁𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠 𑒏𑒩𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒪𑒹𑒪𑒏 𑒂 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒢𑒰𑒧𑒹𑒿 𑒕𑒣𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒏। 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒂𑒑𑓂𑒩𑒯𑒣𑒩 𑒂𑒩𑓂𑒏𑒰𑒃𑒫𑒧𑒹 𑒆 𑒞𑒟𑓂𑒨 𑒩𑒰𑒐𑒪 𑒖𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। – **𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏, 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯**

চকেরাঁ আদি। হিনক গড়া ভগি জে মহিলা কলাকারক প্রতি মিথিলা সমাজক নজরিয়ামে বঁদলার অএরাঁক চাহী। কম্পলা জীক প্রিয় নির্দেশিক ভথি সঁজয় চৌধরী আ প্রিয় নাট্টককাব মহেন্দ্র মলংগিয়া।

সূচনা: পংকজ পবাশিবকেঁ ডগলস কেলনব আ অরুণ কমলক বচনাক চোবিক পুষ্ঠিক বাঁদ (http://www.box.net/shared/75xgdy37dr)বৈঁন কএ রিদেহ মৈথিলী সাহিত্য আন্দোলনসঁ নিকালি দেল গেল অছি।

পংকজ পবাশিব উর্ফ অরুণ কমল উর্ফ ডগলস কেলনব উর্ফ উঁদয়কান্ত উর্ফ ISP ২২০.২২৭.১৬২.১০৩, ১৬৪.১০০.+.২, ২২০.২২৭.১৭৪.২৪২ উর্ফ.....**পংকজ পবাশিবকেঁ বৈঁন কএ রিদেহ সাহিত্য আন্দোলনসঁ। নিকালল জা বহল অছি।**

সম্পূর্ণ দস্তারেজ মূল আ পংকজ পবাশিব উর্ফ অরুণ কমল উর্ফ ডগলস কেলনব উর্ফ উঁদয়কান্ত উর্ফ ISP ২২০.২২৭.১৬২.১০৩ , ১৬৪.১০০.+.২ , ২২০.২২৭.১৭৪.২৪২ উর্ফ.....ক চোকক্কা *নীচাঁক লিংকপব সেহো অছি।*

http://www.box.net /shared/75xgdy37dr

রিদেহমে কিছু অলোমিয়ম ওা-মেল অএলাক বাঁদ ওকব গংক্রায়বীক বাঁদ চেতনা সমিতি দ্বাবা পংকজ পবাশিবকেঁ দেল সম্মানকেঁ রাপস লেবাঁ লেল আ এহি লেখককেঁ বৈঁন কবরাঁ লেল ওা হমব (চেতনা সমিতিক আজীরন মেম্বরক হৈসিয়তসঁ) আধিকাবিক অনুবোধ অছি আ গংক্রায়বীক রিস্তৃত রিরিচন নীচা দেল জা বহল অছি। প্রগয়া চেতনা সমিতি এহি রিয়য়পব অপন আগাত বৈসকী কবএ আ উচিত নির্ণয় লএ সে অনুবোধ। - গজেন্দ্র ঠাকুব

গংক্রায়বীক রিববণ:

পাঠকক সূচনাক বাঁদ ওা পতা চলল অছি (আ ওকব সত্যাপন কএল গেল) জে এহি লেখকক ওা এহি তবহক পহিল প্রয়হ নহি অছি। ওা লেখক পহিল সেহো Douglas Kellner ক Technopolitics ক পংক্তিশঃ অনুরাদ মূল লেখকক ক্ণমে নামসঁ ক্তানবঁজনক হিন্দী পত্রিকা "পহল"মে ধোখাসঁ ছপরাঁওলক। তকব পতা চললাক বাঁদ "পহল"মে এহি লেখকক বচনাক প্রকাশিন বঁন্দ ভ২ গেল। এহি সম্বন্ধমে রিস্তৃত আলেখ রিদেহক অগিলা অংকক সম্পাদকীয়মে দেল জাএত।

২. এহি সভ ঘটনাক বাঁদ পংকজ পবাশিবকেঁ রিদেহসঁ বৈঁন কএল জা বহল অছি। রিদেহ আর্কাইরসঁ "রিলম্বিত কগক হাগমে নিরঁদ্ধ" পোথীকেঁ হটাওল জা বহল অছি। প্রকাশিককেঁ

सेहो उचित प्रतिक्रिया कार्यवाही (यदि आवश्यक हुअए तँ) आ आन कार्यवाही लेल एहि समस्त घटनाक्रमक सूचना दऽ देल गेल अछि।

२.पाठक डगलस केलनरकेँ ई-मेल kellner@gseis.ucla.edu पर "पहल" पत्रिका वा तकर सम्पादक श्री ज्ञानरंजनकेँ editor.pahal@gmail.com, edpahaljbp@yahoo.co.in वा info@deshkaal.com पर आ दैनिक जागरणकेँ nishikant@jagran.com, sanjay@jagran.com पर सम्पर्क कए विस्तृत जानकारी लऽ सकैत छथि। डगलस केलनरक आर्टिकल गूगल सर्चपर technopolitics टाइप कए ताकि सकै छी आ पढ़ि सकै छी। पहल पत्रिकाक वेबसाइट www.deshkaal.com पर सेहो पहल पत्रिकाक पुरान अंक सभ आस्ते-आस्ते देबाक प्रावधान भेल अछि।

विस्तृत जानकारीक लेल स्वीकृत पाठकगण अहाँक धन्यवाद। भविष्यमे सेहो एहि घटनाक पुनरावृत्ति नहि हुअए ताहि लेल अहाँक पारखी नजरिक आस आगाँ सेहो रहत। एहि तरहक कोनो घटनाक जानकारी हमर ई-पत्र ggajendra@gmail.com पर अवश्य पठाबी।

पंकज पराशर उर्फ अरूण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उद्‌यकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 उर्फ.....

डगलस केलनरक नीचाँक आलेखकक पंकज पराशर द्वारा चोरि सिद्ध कएलक जे एक दशक पहिने एहि लेखक द्वारा अरूण कमलक चोरि सँ आग धरि हुनकामे कोनो तरहक परिवर्तन नहि आएल छन्हि। हँ, आब ओ पटना विश्वविद्यालयक प्रोफेसरक रचना चोरेबासँ आगाँ बढ़ि गेल छथि आ कैलिफोर्निया वि.वि.क प्रोफेसरक रचना चोराबए लागल छथि। एहि सन्दर्भमे हमरा एकटा खिस्सा मोन पड़ैत अछि। २०-२२ बरख पुरान सन् कथा। दरभंगामे रहैत रही, भतपर हम आ हमर एकटा पिसियौत भाग साँझमे ठाढ़ रही। सोझाँमे सरवनजीक घरक बाँसड़ीमे खूब लताम फड़ल छलन्हि। हमर पिसियौत भाग हुनका गौरवा दऽ कहलखिन्ह जे दस टा लताम आनू। ओ बौंचासँ दसटा लताम तोड़लन्हि आ आबि रहल छलाह आकि बस्तामे हमसभ देखलहुँ जे एकटा छोट बाँचा संग हुनका किछु गप भेलन्हि आ ओ पाँचटा लताम ओहि बाँचाकेँ दऽ देलखिन्ह। जखन सरवन जी अएलाह तँ कहलन्हि जे ओ बाँचा हुनका भैया

কহি সম্বোধিত কএলকহি আ পাঁচটা লতাম মঁগলকহি- সে কোনো লঘ্রিং দিতিযৌক- সবরণজীক কহব ভনহি। আর পংকজ পবাশিব প্রসংগমে কী ভেল সে দেখী। প্রদীপ বিহাবীজীক বেটা প্রণরকেঁ পংকজ পবাশিব লোম চোমস্কী আ ডগলস কেলণবক বচণা দৈত ভথিন্হ আ তকব অনুবাদ কবয়া লেল কহি ভথিন্হ। বৈচাবা জাণ লগা কয় অনুবাদ কয় দৈত ভহি, ও সোচি জে জিণকা ও চচা কহি ভথি- জে ক্রান্তিকাবী বিচাবক ভথি (মার্ক্সবাদী ! ! !) সে কোনো লীক পত্রিকামে ও অনুবাদ ভপবা দেখিন্হ। মুদা ভহ মাসক বাদ চচাজী কহি ভথিন্হ জে লোম চোমস্কী বলা বচনা হেবা গেল আ ডগলস কেলণব বলা বচণাক অনুবাদ লঘ্রিং লীক বহএ সে বিজেক্ট ভয় গেল। মুদা ক্রান্তিকাবী কবি (চোকক্কা সেহো বিবণ লীচাঁমে অছি) দুনু বচণা পহল পত্রিকামে পঠা দৈ ভথি- পহল-+৬ মে ডগলস কেলণব বলা বচণা ভপিতো ভহি (আ সে অনুবাদক কপমে লহি ববন্ মূল লেখকক কপমে) আ ও বৈণ সেহো কয় দেল জাগ ভথি। হমব সবরণ জী একটা বচা দ্বাবা ভৈযা কহলাপব পাঁচটা লতাম ওকবা দয় দৈ ভথিন্হ মুদা হমব পবাশিবজী ভাতিজোক পাঁচটা লতাম নির্লজ্জতাসঁ ভীলি লৈত ভথি।

আ হম হুলকব খোজবীল তখণ কবৈ ভী জখণ ও বিদেহমে আগডেম্পিটী বদলি হমবা গাবি পঢ়ৈত ভথি- হুলকব বিযান আগডেম্পিটী লাণ্ডট কবৈ ভী। ফেব সভসঁ গপ কবৈ ভী আ পাঠকক সহযোগসঁ *আবস্তু, পহল* ক প্ববান অংক ভেটি জাগত অছি জতএ হিলকব ফগ্লব ভহি।

ডাঁ. জেকীল আ মিস্টব হাগডক কথা অংগ্রেজী বিষএমে স্কুলমে পঢ়লে বহী। একটা বৈজ্ঞানিক বহথি ডাঁ. জেকীল দ্বদ্এসঁ কন্বষিত। মোণ কবহি জে চোবি-উচক্কাগিবী কবী। সে একটা দ্রবক খোজ কএলহি জকবা পীবি কয় ও মিস্টব হাগড বলি জাথি আ বাতিমে চোবি-উচক্কাগিবী কবথি। এক বাত্তক গপ অছি জে মিস্টব হাগড ককবো হত্যা কয় ভাগি বহল বহথি মুদা ভোব ভয় গেল বহি সে লোক সভ হুলকা খেহাবএ লগলহি। ও ডাঁ.জেকীলক ঘবমে পৈসি গেলাহ (কাবণ ডাঁ.জেকীল তঁ ও স্বযং ভলাহ) আ কেবাব ভীতবসঁ লগা লেলহি। লোক সভ চিন্তিত জে ডাঁ. জেকীলকেঁ ও বদমাশ মাবি দেতহি সে ও সভ কেবাব পীটএ লগলাহ। মিস্টব হাগড দ্রব পীঅব শুক কেলহি মুদা ওহি দিণ দবাগমে বিএক্শণ লহি ভেলৈক আ হুলকব কপ ডাঁ. জেকীলমে লহি বদলি সকলহি। আর এহি কথাক অন্তমে মিস্টব হাগড মাথ লোচি বহল ভথি জে হুলকা অপণ সমস্ত পাপক

প্রায়শ্চিত মিস্টর হাগড রঁমি করএ পড়তন্হি।

পঁকজ পরাশর উর্ফ অরুণ কমল উর্ফ ডগলস কেললব উর্ফ উদ্যাকান্ত উর্ফ ISP 220.227.163.105 , 164.100.8.3 , 220.227.174.243 উর্ফ..... হিনকর বিমল আগডেস্টিটী হম নাঙ্গট করৈ ছী আ ও আর্ব অভিশপ্ত ছথি অপন শেষ জীরন মিস্টর হাগড বহি অপন কঙ্গলক সজা ভুগতরাঁক লেল।

মৈথিলমে ও একটা তথ্য ছৈ জে চুপচাপ জে গারি স্বলৈ অছি তকরা করুল জাগ ছৈ জে ও রঁঙ্গ নীক লোক ছথি। ক্দা সমএ আরি গেল অছি মিস্টর হাগড সভকেঁ দেখার কররাঁক আ ওকরা কঠোর সজা দেরাঁক। ক্দা ও তঁ মাত্র প্রারম্ভ অছি। মৈথিলীমে রঁহুত গোষ্টে ছথি জে হিন্দীমে রৈণ ভেল লেখককেঁ পোসৈ ছথি (মৈথিলী সেরাক লেল) জে জখন ককরো গারি পঢ়রাঁক হোএ তঁ ও তকর প্রয়োগ ক২ সকথি।

এহি র্লৈকমেলবক ডাঁ. জেকীল আ মিস্টর হাগড রঁনা চরিত্র মৈথিল সর্জনাক রিরোধমে মৈথিল-জন পত্রিকামে এক দশক পহিলে উজাগর ভ২ গেল ছল ক্দা লোক হিনকা পোসৈত রহল।

আরম্ভমে সেহো ও একটা চিট্ঠী মৈথিলীক সম্পাদকক রিরোধমে দেলন্হি জে ছপি গেল আ ওকর ঘৃণিত ভাষাক কারণ ভাগ সাহেব রাজমোহন ঝাকেঁ মাফী মাঁগএ পড়লন্হি আ ফের ও মিস্টর হাগড সেহো ওহি সম্পাদকসঁ লিখিতমে মাফী মাঁগলন্হি।

একটা আগ্রহ আ আহ্বান: স্বভেশ কর্ণ আ সমস্ত মৈথিলী-প্রেমী-গণ- এহি মিস্টর হাগডক র্লৈকমেলিং আ এর্ব্যজক দ্বারে অহাঁ সভকেঁ মৈথিলী ছোড়ি ক২ জএরাঁক আরশ্যকতা নহি অছি, কারণ পাপক ঘৈলা ভরি গেলাক রাঁদ ও আর্ব অভিশপ্ত ছথি অপন শেষ জীরন মিস্টর হাগড বহি অপন কঙ্গলক সজা ভুগতরাঁক লেল।

জে.এন.য়ু.মে ছাত্র-ছাত্রা সভসঁ পোস্টকার্ড পর সাগল ল২ ওহিপর অপন রচনা লেল প্রশংসা-পত্র পঠরৈত ঘুমৈত অপস্যাঁত কথিত গোল্ড মেডেলিস্ট(! ! !) মিস্টর হাগডকেঁ চিড়ৈক খোতা তোড়রাঁক সখ শুরুহেসঁ ছন্হি। পহিল কথা গোষ্ঠীমে জখন ও সহরসামে সভসঁ পুছলে ফিরৈ ছথি জে সাহিত্যকার রঁনরাঁসঁ কী-কী সভ ফাএদা ছৈ তখন ও একটা পাগ আ পুরস্কারক লেল অপস্যাঁত মৈথিল হারা-পীঢ়ীক প্রতিনিধিত্ব করৈ ছথি, জে রাজমোহন ঝা জীক শৈলীমে মৈথিলীসঁ প্রেম নহিঁ করৈত অছি। ও মিস্টর হাগড সেহো ওহি সম্পাদকসঁ লিখিতমে মাফী মাঁগলন্হি আ জখন ও মাফ ক২ দেলখিন্হ তখন ফের হুনকা গারি পঢ়রঁ

শুরু কং দেলন্হি। হমরাসঁ লিখিত মেল-মাফী অস্বীকার ভেলাক বাদ মিস্টর হাগড়ক মাথ লোচব স্বাভাবিকে। মিস্টর হাগড় ককরো গনকম ঠৈক্স, কস্টম রা সবকারী লোকরীমে দেখৈ ছথি, স্বলৈ ছথি তঁ পাগক মারল জেকাঁ হিনকা মোনমে ব্লৈকমেলিংগ কন্বরুনাএ নগৌ ছন্হি, প্রায: আনন্দ ফিল্মক এক গোষ্ঠ কলাকার জেকাঁ- জে এহনে মিস্টর হাগড় লেল কহৈ অছি- জে ওা ডাক্টর বহিতএ তঁ কিডনী বেচিতএ, সে ও জতএ ছথি ওতহু ব্লৈকমেলিংগক ধন্ধা শুরু কৈযে দেলে ছথি। হ্নদা চিড়ৈক খোতা উজাড়ৈত-উজাড়ৈত মধুমাখীক ছত্তা উজাড়বাক গলতী এহেন ব্লৈকমেলব কৈযে দৈত অছি। জে সবকারী লোকবী রা গন্কম-ঠৈক্স, কস্টমমে ওা ব্লৈকমেলব বহিতএ তঁ দেশ জরুব বেচি দৈতএ।

জে কিযো সূচনাক স্বতংত্রতাক নাম পব, অন্তর্জালপব স্বতংত্রতাক নামপব রা সাহিত্যিক সমালোচনাক নামপব গারি পঢ়ৈত অছি তঁ সর্বদা মোন রাখু জে ওা সভ স্বতংত্রতা অহুঁকেঁ প্রাপ্ত অছি। এহি ঘটনাক বিষএমে অহাঁসঁ পত্রকার, ন্যুজপেপব, পত্রিকা আ হিন্দীক গণমান্য লেখকগণ/ প্রাফেসব/ বিশ্ববিদ্যালয আদিকেঁ এহি ঘটনাসঁ সূচিত করবাক অনুরোধ অছি। বিশেষ জানকারী লেবাক আ দেবাক লেল ggajendra@gmail.com পব সূচিত করু।

কোনা পকড় াএল ওা চোব:-স্টেপ বাও স্টেপ:-

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
But this time he has not used his name as maithil, mithila aa subodhkant but as Pankaj Parashar
pparasharjnu@gmail.com
Reply ০১/২৩/২০১০ at ০৯:৪+ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
The same blackmail letter has been sent by the blackmailer to my email address which has been spammed through ISP address ২২০.২২৭.১৬৩.১০৩ , ১৬৪.১০০.+.৩ aa ২২০.২২৭.১৭৪.২৪৩.
Reply ০১/২৩/২০১০ at ০৯:৪৩ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
pahal =- +৬, aarambh -২৩ aa arunkamalak naye ilake me ka sambandhit prishtha pathebak lel dhanyavad

pathakgan.
Reply ०१/२७/२०१० at ०५:१७ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
http://www.gseis.ucla.edu/courses/ed२७३a/newDK/intell.htm
ehi link par douglas kellner ke lekhak anuvad pahal-५७ ke page १२७-१३१ par achhi- soochnak lel dhanyad pathakgan.
Reply ०१/२४/२०१० at ०५:१७ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
ehi ghatnakram me kono pathak lag je Arun Kamal jik kavita "Naye Ilake Me" hoinh aa Aarambh (ank २३, maithili magazine editor Sh. Rajmohan Jha (March २०००) me prakashist maithili kavita "Sanjh Hoit Gam Me" te kripya ggajendra@gmail.com par soochit karathi- Dhanyavad.
Reply ०१/२४/२०१० at ०५:०२ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
ehi ghatnakram me bahut ras aar jankari aa dher ras samarthan debak lel dhanyavad pathakgan.
Reply ०१/२३/२०१० at ११:४० PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
out of these three addresses of the spammer i.e. pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com the address pkjpp@yahoo.co.in, is fails verification test and addresses parasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com stands verified and confirmed.
Reply ०१/२१/२०१० at १०:०० PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
the htpps host matches reliance communications and the corresponding email gamghar at gmail dot com and maithilaurmithila at gmail dot com is fake ids related with the actual spammers id i.e.pkjpp@yahoo.co.in, pparasharjnu@gmail.com and pkjppster@gmail.com
Reply ०१/२१/२०१० at ०५:७० PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
The office premise has been located, the blackmailer works in Dainik Jagran, the organisation being taken into confidence.
Reply ०१/२१/२०१० at ०७:१३ PM
१४

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
maithil, mithila aa subodhkant nam se abhadra aa blackmail karay bala blackmailer ke cheenhi lel gel achhi,ISP address २२०.२२७.१६३.१०७ , १६४.१००.+.३ aa २२०.२२७.१७४.२४३ aa ban kayal ja rahal achhi, agan ohi organisation se seho sampark kayal jaayat jatay se ee email aayal achhi.
Reply ०१/१+/२०१० at ११:१७ PM

VIDEHA GAJENDRA THAKUR said...
comment moderation lagoo kayal ja rahal achhi
Reply ०१/१+/२०१० at ०७:२७ PM
from ISP २२०.२२७.१७४.२४३ of Dainik Jagran he abused many times earlier too to others. খরিনাশিকেঁ সেহো ২২০.২২৭.১৭৪.২৪৩ খাগ.এস.পী.সঁ এহি প্রকাবক ঙা-পত্র খরৈঁত বহ ক্ষদা ও মামিনা খতম কs দেনে বহথিন। ও টিপ্পণী সভ এতেক ঘৃণিত ছৈক জে এতএ নহি দেন জা বহন খছি।

পাঠকক সঁদেশ: এহি ঘটনাক্রমপব

kellner@ucla.edu" <kellner@ucla.edu
Dear Gajendra
thanks for the detective work. was there a response?
best regards,

Douglas Kellner
Philosophy of Education Chair
Social Sciences and Comparative Education
University of California-Los Angeles
Box 951521, 3022B Moore Hall
Los Angeles, CA 90095-1521

Fax 310 206 6293
Phone 310 825 0977

http://www.gseis.ucla.edu/faculty/kellner/kellner.html

dear Gajendraji,
apnek mail milal. Pankajjik kritya janike bar dukh bhel. Ahi se maithilik nam kharab hoyat achhi. Apnek kadam ekdum uchit achhi.
Rajiv K Verma

dhanyvad. muda ehne lok sabjagah aadar pabait achi
shridharam

ওকবা সার্রজনিক নহি কবরেঁ। খহাঁ কেঁ সূচনার্থ পঠেনে ছী জে পংকজ পহিনেহো
গ সরঁ কাজ করৈত বহয ছনৈএ।
avinash

ঠীক ছৈ---_-সম্পাদক।
Dear Gajendra g
You are doing very well in the field of collecting all the documents related to the Maithili. Videha. Com realy a adventureous collection. I will also find some time to learm the article published through the videha.
Now your detective style theft the sleeping of many of the so called literary personnel. Go a head jai Maithili jai Mithila
Sunil Mallick
President
MINAP, Janakpur

your efforts are commendable. Anysuch ghost writer or fake identity holder must be boycotted from literature at once Thanks.
shyamanand choudhary
Namaskar.
Chetna samitik sachiv ken mailak copy hastgat kara del achi.

Dr. Ramanand Jha 'Raman'
গজেন্দ্র জী ,
চেতনা সমিতি হিনকা সম্মানিত কএনক খছি সেহো হমবা জ্ঞাত নহিং | যদ্যপি

হমদ্রু চেতনা ক স্থাঔ সদস্য। জে হো. হ্মদা নিংদাস্পদ ঘটনা তং ঔ থিকে তেঁ দ্খী কযনক। কতিপয নর মৈথিন-প্রতিভাক খাকলন-মূল্যানকনক হমব খপন স্নগ্রমী স্বভার, এহি দ্ঘটনাক বাঁদ তং খাবঁ চিংতা মে ধ' দেনকয।
দেখী,
হম খপনে রিস্মিত ভেলহুঁ। বঁহ্ত দ্:খদ দৃশ্য। সৃজন রিরুদ্ধ সাহিত্যিক সন্দর্ভ মে ঔ ঘটনা খাধ্নিক মৈথিলীক বঁহ্ত হ্বরূপ প্রসংগ ক' ক' স্মবণ কৈন জাযত সম্লেহ,

গগেশ গুঞ্জন.

PRI YA MAI THI LJAN
APPAN BHASHA- SANSKAR-SANSKRI TI KE ASMARAN KARU AA
EHAN VI VADAASAPAD LEKANI B KARANI KE VI RAM DI YA.
DHANYABAD.
SAPREM.

PK CHOUDHARY

Gaj endr a babu
pankaj puran chor achhi. Ham sab okar likhit ninda das sal pahine aarambh me kene rahi. Okra ban k kay ahan nik kayal. Chetna samiti ke seho samman wapas lebak chahi aa okar ninda karbak chahi.

subhash Chandra yadav

প্রিয ঠাকুবজী!
(মাননীয সংপাদক)
"রিদেহ ঔ-পত্রিকা" [মৈথিলী]
এখন ধবিক উঁপনব্ধ সাক্ষ্যক খাধাব পব হম খপনহিক সংগ জাএবঁ পসিন্ন কববঁ।

শংভু কুমাব সিংহ

Sir I have sent the link of Parashar's duplicacy to several people
along with Pranabh Bihari who had traslated that article. I had
telephonic conversation with him also and he was quite upset over
Parashar;s duplicay
Pranav is my junior and a good friend of mine. since you have referred Pranav who had traslated that article it is unfortunate that he was misused by Parashar. But i must congratulate you for exposing scam run by Parashar and his team. Parashar, though must not be blamed if he lifted the article of Nom Chomskey . Now i must doubt the artistic sensibility

of Parashar who is now a pseudo-- intellectuals. I am amazed that how did he dare to publish the article of Nom Chomskey as his own.
God bless him no more
In the past Pankaj Parasar was accused for lifting the
senses and emotions from poems of doyens of Hindi and Maithili poets.
What Pankaj did should be condemned. I regret for him.

These People are hellbent to bring down the literary discourse down to the gutter. Now you have been receiving mails like one. We are with you and i have forwarded your mails to Maithili speaking people all across the country .-

VIJAY DEO JHA

Dear Gajendraji,
I fully agree with you that we must fight against blatant cases of wrongful appropriation.
হাঁ খপন মেন মেঁ নিখনে ছী জে রিদেহ খাকজির সে সঁরঁধিত নেখক'ক সরঁষ্টা বচনা হষ্টা নেন জাযত। খহি সে খাকজির সঁ ঙা প্রসঁগ সেহো, একব সাক্ষ্য সেহো মেষ্টা জাযত। হমব মত ঙা জা সাক্ষ্যরঁ বহরাঁক চাহী নিক খা খধনাহ দ্ন্ব তবহক কাজ'ক। খহাঁ খপ্পসন কামেঁষ্ট খা নিঁণয সেহো খাকজির মে জা কে সঁরঁধিত বচনা কে পোস্টা-সিদ্ধাপ্টব কে রুপ মে ভরিষ্যা'ক পাঠক'ক নেন স্ববক্ষিত বাখি সকৈত ছিযন্হি ।
ঙা দোহবেরাঁক রঁহ্ত ঔচিহ্নক নহি জে রিদেহ নিক নাগি বহন খছি খা খহাঁক পবিশ্রম একদম দেখা বহন খছি।
ঙাতি,
সদন।

Thanx Gajendraji, for your immediate response. I must congratulate you for the work you have done to save the sanctity of the literature world as a whole.
I feel proud for the person like you who shows the courrage to bell the cat. If the so called writers like Parasharji are there to spoil the sea, on the other side it is very hopeful sight to have a person like you who is alert enough to take care of such filth & keep the sea clean.

Thanx for enlightening me on the subject.

Regards,

Bhalchandra Jha.

পংকজ পবাশিবকেব এহন কার্য পব স্মবণ খরৈঁত খছি কবীর্ রীস–পচীস সান পহিন্বক ঘটৈনা, জহিযা খাকাশিরাণী দবভংগাসঁ ম,ম,ডাঁ, সব গংগানাথ ঝাক একমাত্র মৈথিনীক কাকলিক পদকেঁ এক গোষ্ঠ করি দ্বাবা খপন কহি প্রসাবিত কএ দেন গেন ছন, জে রাঁদমে (সজগ শ্রোতা দ্বাবা সূচনা দেনাক রাঁদ) খাজন্ম রৈঁন কএ দেন গেনাহ । কহরাঁক তাপের্য জে জঁ হম মৈথিন দবভেঁগা– মধ্রনীমে গংগানাথ রাঁরূক পদকেঁ খপন কহি সকৈত ছী তঁ ওা কোন রড়কা গপ । নিশ্চযে এহন বচনাকাবকেব সঙ্গ কড়গব ডেগ উঠাএর্ খারশ্যক ।

ajit mishra

Dear Gajendrajee,
We should take strong step to prevent such intellectual cheats.
My support is always with you.

K N Jha

This seems to be a dangerous trend and we should also try and refrain from publishing anything from such authors. Regards,

Prof. Udaya Narayana Singh

প্রিযরব ঠাক্কব জী,
মৈথিন সাহিত্কাব খার্ সাগর্ব ঞাগম সেহো ক বহন ছথি, ওা জানি খপাব প্রসন্নতা ভেন |
পংকজ পবাশিব কে নকাবামেক র্ঁদ্ধিক পূর্ণ উঁপযোগ কবরাঁক নেন হম নোরেঁন প্রাগজ সা সম্মানিত কবায চাহৈত ছী |

র্ঁদ্ধিনাথ মিশ্র

Sampadak Mahoday
Apne ehi prakarak durachar rokwak lel je prayash ka rahal chhee
ohi lel dhanyabad.Ehen blackmailer sa maithili ken bachayab aawashyak achhi
Sadar

SHIV KUMAR JHA

গজেন্দ্র ভাওা,
নমস্কাব ! মৈথিনী মে এহি তবহক কাজ নগাতাব ভ' বহন খছি । কিছু ব্যক্তি এহি ধংধা মে খগ্রসব ছথি । মৈথিনীক সম্পাদক নোকনিক খনভিজ্ঞতাক

ফাযদা কতেকো অংগ্রেজী পঢ়নিহাব তথাকথিত সাহিত্যকাব লোকনি উঠা বহল ছথি। পংকজ জীক পহল মে ছপল লেখ কে হম সেহো পঢ়্লে হী আ কিছুএ দিনক বাঁদ হম লেটে পব মূল লেখকক আলেখ কে সেহো পঢ়লহ্ । হমবা ত' আশ্চর্য লাগল ছল জে পংকজ জী আলেখক কম স কম শীর্ষক ত' বাঁদলি লৈতথি হ্মদা হ্নকা এতেক জ্ঞান বহিতনি তখন কী ছল।

এতবেঁ নহি , হিনক বাঁত্ত বাস কবিতো অংগ্রেজী সাহিত্য স' হেব-ফেব কযল গেল অছি । খৈব ! জে কবথি ... । হ্মদা এহি বেঁব কহাবঁত ঠীক লোবাঁক চাহী " সৌ সোনাব কে ত' এক লোহাব কে "। প্রকাশিন মে জে ভী কিযো ব্যক্তি গলতী ক' বহল ছথি হ্নকা গংভীব ক্রিমিনল বুঁঝবাঁক চাহী।
ধন্যবাদ এহি লেল অহাঁ কে জে এতেক জোবদাব তবীকা স' এহি গপ্প কে উঠৈলহ্।
অহাঁক
প্রকাশ চন্দ্র ।
pankaj parashar vala prasang bar dukhad laagal
kamini

Gajendr jee,
maamailaa ke tool jatabe debainhi, sabhak oorjaa otabe svaahaa hetai. হমব মনতবঁ এতবেঁ, জে এক বেঁব অহাঁ দেখাব ক দেলহ্, আবঁ ছোড়ি দেল জাও. হিন্দীযো মে এহিনা ভ বহল ছৈ. বেঁব বেঁব আ খবাবঁ ভাষা মে লিখল মোল কে দুখী কবৈত অছি. ফেব লাগৈত অছি জে অহি মে সময কিযৈক নষ্ট কবী ?
হিন্দুস্তান মে জাতি আ সেহো মৈথিলী সে জাতি নযি জাএত. হম একবা নযি মানৈত ছলহ্ হ্মদা আবঁ 30 বঁবখ সে মৈথিলী মে লিখলাক বাঁদ আবঁ দেখল জে এক ওব
1 মৈথিলী সাহিত্য মে লিলী জী, উষা জী আ শেফালিকা জী কে বাঁদ যদি কিও নাম লৈত অছি ত হমব.
2 এখলো কোলো পত্রিকা বেঁ ছৈ ত হমবা লেল বচনাক আগ্রহ হোগতে ছৈ.
3 এখলো হম ওতবেঁ সক্রিয ছী আ নিবংতব লিখি বহল ছী.
4 দুখদ জে হমবা বাঁদ (স্মিতা পাঠক আ জ্যোত্স্না মিলন কে হম অপলে ভবিযা বুঝৈত ছী) কে বাঁদ এলে কোলো সশক্ত কোল, মহিলা লেখলে নযি আএলএ.
5 ঙা স্থিতি বহলাক বাঁদো, আবঁ জহল হম দেখৈ ছী, ত পাবেঁ ছী জে হমবা পব, হমব বচনা যাত্রা অথব হমব বচনা পব কিছু নযি লিখল গেলএ, চাহে ও মোহল ভাবদ্বাজ বহথ্ অথবা আল কিও. জহল হমব দশক কেব চর্চ হোগত ছৈ, তীল চাবিটা নাম পব সবিস্তাব চর্চা হোগত ছৈ, জাহি মে হমব নাম নযি বহৈত ছৈ. হমব নাম মাত্র সন্দর্ভ লেল জোড়ি দেল জাগত ছৈ.
6 এতেক দিল মে মাত্র বমণ জী হমবা পব এক গোটে লেখ লিখলহি. হম ওকবা পুন: টৌগপ কববাঁ কে অহাঁ লগ পঠাযবঁ.
7 জাতি পাতি ধর্ম আ দ্বেষ পব কহিযো ধ্যান নযি দেলাক কাবণে ত কহী হমব ঙা স্থিতি নযি ছৈ, আবঁ হমবা ঙা সোচবাঁ মে আবি বহল অছি.
8 হমব শিক্ষক, জে স্বযং হিন্দী কে খ্যাতিলব্ধ কথাকাব ছথি, হমবা বুঝেলে বহলাহ

জে হম মৈথিনী মে নিখবঁ বঁন্ন ক; দী, কিযৈক ত হম গৈব মৈথিন (জাতি রিশেষ) সে নযি ছী, তেঁ হমব নেখন কে কহিযো মৈথিন সভ নযি নোটিস কবতাহ, কহিযো কিছু নযি কবতা.. খপন ভাষাক প্রতি প্রেম কে খাগবহ কাবণে হম হুনকব বাঁত নযি মাননিযৈ, নিখৈত গেনহুঁ, ঋদা খাবঁ নাগি বহনখএ জে হুনকব কহবী সহী ছনন্হি কী ?

9 এখনো কী হান ছৈ মৈথিনী মে, দেখিযো. ওকবা রিকল্প কিছু কবিহ্য. মৈথিনী মে জে পৈঘ পৈঘ সংস্থা চাণ, চেতনা সমিতি সনক, সভ রেঁব রিদ্যাপতি পর্র মনরৈঁত ছথি. নাখো খর্চ কবৈ ছথি, ঋদা নীক নেখক কেব পোথী সভ রেঁব 5-7 টা নিকানৈথ্, সে নযি হোরৈঁত ছন্হি.

10 হমবা ভেটৈন জানকাবী কে মোতাবিক রিদ্যাপতি হাঁন কিবাযা পব চঠৈ ছৈ. তকবা মে কোনো খাপত্তি নযি, যদো ওকবা সে কিছু খায হোরৈঁ. ঋদা ওকবা মৈথিনীক কাজ খথরা নাটক খাদি নেন মাঁগন জাএত, ত; নযি ভেটৈ ছৈ. যদি ওকব শ্বঙ্ক চ্কা দী, তহন ত কিবাযাকে ৰূপ মে কিছুঁ ন' সকি ছৈ. একবা সভ কে উঁজাগব কবী.

11 ব্যক্তি সে সংস্থা পৈঘ হোগত ছৈ. জতেক সংস্থা সভ ছৈ, তকবা পব নিখী, সাহিত্য খকাদমীক মৈথিনী রিভাগ সহিত.

12 নিনী বেক সভটা বচনাক খন্বরাদ খধিকাব হমবা দেনে ছথি. হুনক সাহিত্য খকাদমী প্ববস্কাব প্রাপ্ত পোথী 'মবীচিকা' কেব হিন্দী খন্বরাদ নেন পিছনা 2-3 সান সে হম নিখি বহন ছী. সাহিত্য খকাদমীক পত্রিকা 'সমকানীন ভাবতীয সাহিত্য" মে হম পিছনা 25 সান সে খন্বরাদ সহিত ছপি বহন ছী. ঋদা হমবা সে খন্বরাদক নমূনা মাঁগন গেন. ওহি কর্সী পব জে স্বনাম ধন্য বৈঁসন ছথি, হুনকা হমবা মাদে নযি বূঁঝন ত কোনো মৈথিন সাহিত্যকাব সে পূছি সকৈত ছনাহ. ঙা তহিনে ভেনৈ, জেনা এক রেঁব এক গোষ্ঠ চৈনন ঋষিকেশ ঋখর্জী সে হুনকব বাঁযোডাটা মংগনে ছন খা এখনি পঠন সমাচাবক খন্বসাবে খা. জানকী বন্নভ শহস্ত্রী সে হুনকব বাঁযোডাটা পদ্মশ্রী নেন মাঁখগন গেনৈয.

13 খপন রিনম্রতা দর্শারৈঁত হম নিনী জীক দূ তীন টা কথাক হিন্দী খন্বরাদ হম পঠা দেনিযন্হি. তৈযো খঙা পব কোনো রিচাব নযি. নিখনা কে বাঁদ হমবা কহন গেন জে হম নিনী জী সে সাহিত্য খকাদমী কে খন্বরাদক খধিকাব দিযারেঁ মে মদদি কবী. খাবে ভাঙা, খহাঁ কে খন্বরাদ সে মতনবঁ খছি নে, খা জহন হম খন্বরাদ ক; কে দেবঁ' নেন তৈযাব ছী তহন খকাদমী কে কিখযৈক খধিকাব চাহী ? খঙা নেন জে খকাদমী খপন পসীনক খাদমী কে খন্বরাদ নেন দ; সকয. এখনি ধবি ওকবা পব নিপটাবা নযি ভেনৈযে. খকাদমী সে ফেব কোনো পত্র নযি খাএন খছে. খন্বরাদ তৈযাব বাখন ছৈ. নিনী জী খাবঁ বহুত বুঁজুঝ ভ; গেন ছথি. হুনক মাত্র গযৈহ গছা ছৈ (খা বহুত স্বাভারিক) জে হুনকব পোথী সভ হুনকা সোন্মা মে প্রকাশিত ভ; জাএ.

14 নিনী জী কে পোথী হিন্দী মে খানবাঁক শ্রেয হমবে খছি, ঙা মনিতহুঁ ওকবা বেকাঁর্ড কেনাএ মৈথিন সমীক্ষক খারশ্যক নযি বুঁমৈত ছথি. একবা পব নড়ূ.

15 মৈথিনী কে ভাবতীয জ্ঞানপীঠ সে প্বস্তক প্রকাশিন নেন হমহী খাগাঁ এনহুঁ খা প্রভাস জী খা নিনী জী কে পোথী বঁহাব ভেনৈ.ভাবতীয জ্ঞানপীঠ সে মৈথিনী প্বস্তক প্রকাশিন কে শ্রেয হমবে ছন্হি, ঙাহো মনৈত ওকবা বেকাঁর্ড কেনাএ মৈথিন সমীক্ষক খারশ্যক নযি বুঁমৈত ছথি. একবা পব নড়ূ.

গজেন্দ্র জী, মৈথিনীক ঙা সভ মানসিকতা পব খান্দানন কবী জাহি সে বচনাকাব খা রবিষ্ঠ বচনাকাব সভ কে খপমানিত নযি হোবঁ' পড়ৈ. খহাঁ চাহী ত' একবা

রিদেহ পব দ' সকৈ ছী.
হম দোসব রাঁত সেহো লিখি কে পঠাযরঁ. ক্ষদা হম ফেব কহরঁ, জে হম ব্যক্তি কে নযি সংস্থা খা ব্যক্তি কে মানসিকতা কে দোষ দেরঁল্হি. লোক পঢথ্ খা পূচাথ্ ঞা স্বনামধন্য সভ সে জে জকবা সে খহাঁ কে গোনৌসী খছে, তকবা পব খহাঁ লিখরঁ খা জকবা সে নযি খছে, জে মৌন ভারে লিখি বহনএ কোনো রিরিখাদ মে পডন রঁগৌব, হ্নকা লেন ঞা ব্যরহাব ?
–রিভা বালী.

Shri gajendraji
good work.
Anha sa ehi na neer khshir vivekakak ummeed lagatar banal rahat.
chor ke ehi na dekhar kelak baad dandit seho karbak prayas karbaak chahi. anha bahut raas neek pahal ka rahal chhi.
Saadhuvaad.
manoj pathak.

সংগহি "রিদেহ" কেঁ এখন ধবি (১ জনরবী ২০০+ সঁ ১৪ জনরঁবী ২০১০) ৯২ দেশীক ১,০৪২ ঠামসঁ ২৬,৭১৭ গোটে দ্বাবা রিভিন্ন খাগ.এস.পী.সঁ ২,১৯,+৯১ রঁব দেখল গেল খছি (গুগল এলেলেটিক্স ডাটা)– ধন্যরাদ পাঠকগণ। – গজেন্দ্র ঠাকুব

সংদেশ–

[রিদেহ ঞা–পত্রিকা, রিদেহ:সদেহ মিথিলাক্ষব খা দেরনাগবী খা গজেন্দ্র ঠাকুবক সাত খণ্ডক– নিরঁন্ধ–প্ররঁন্ধ–সমীক্ষা, উপন্যাস (সহস্রবাঁঢ়নি) , পদ্য–সংগ্রহ (সহস্রাব্দীক চৌপড়পব), কথা–গল্প (গল্প গুচ্ছ), নাটক (সংকর্ষণ), মহাকাব্য (ত্বখতাহখ খা খসঞ্জাতি মন) খা রাঁল–মংডলী–কিশোব জগত– সংগ্রহ কুরুক্ষেত্রম্ খংতর্মনক মাদেঁ।]

১. শ্রী গোরিন্দ ঝা– রিদেহকেঁ তবংগজালপব উতাবি রিশ্বভবিমে মাতৃভাষা মৈথিলীক লহবি জগাওল, খেদ জে খপনেক এহি মহাভিযানমে হম এখন ধবি সংগ নহি দএ সকলহুঁ। স্বনৈত ছী খপনেকেঁ স্বঝাও খা বচনামেক খালোচনা প্রিয নগৌত খছি তেঁ কিছু লিখক মোন ভেল। হমাব সহাযতা খা সহযোগ খপনেকেঁ সদা উপলব্ধ বহত।

২. শ্রী বমানন্দ ঝা– মৈথিলীমে ঞা–পত্রিকা পাক্ষিক রূপেঁ চলা কহ জে খপন মাতৃভাষাক প্রচাব কহ বহল ছী, সে ধন্যরাদ। খাগাঁ খপনেক সমস্ত মৈথিলীক কার্যক হেতু হম হৃদযসঁ শুভকামনা দহ বহল ছী।

৩. শ্রী রিদ্যানাথ ঝা "রিদিত"– সংচাব খা প্রৌদ্যোগিকীক এহি



<u>૧મેશ</u>

વહસ- પંકળ પ૧ાશ૧ક સાહિત્ય઼કિ યો૧ મૈથિલિ સાહિત્ય઼ક કાની અધ્ય઼ાય઼ થકિ

વ઼િદેહ- સદેહ ૨ (૨૦૦૮-૧૦) સઁ પંકળ પ૧ાશ૧ક સાહિત્ય઼કિ યો૧ શ્રા સા૨વ૧ અપ૧ાયક પાપક ઘેઉક મહા- વ઼િસ્ફોટ ભેઉ અછિ। ૬ પૈઘ શ્ભેય઼ પત્૧કિાક સમ્પાદક શ્૧ી ગળેન્દ્૧ ઠાકુ૧કેઁ ળા૨ત છની। હુનક૧ અપ૧ાય પકડ઼વાક યેતના કે૧ ળતેક પ્૧શંસા કય઼ઉ ળાય઼, કમ હોય઼ત। "વ઼િદેહ"ક મૈથિલિ પ્૧વન્ધ- સમાલોચના- અંક, અ૨ પોઉ- પ્પોઉ ઉઉ કઙક યુગ ય૧ વ઼િભિન્વતિ ભs કs નવિદ્ય ૧હત, સે "સમય઼ કેઁ અકાનૈત" કહવ કઠિન અછિ।
સાહિત્ય઼ોમે યૌન્ય઼કઉાક ઉદાહ૨ાણ પહિનિહુઁ અવૈત ૧હઉ અછિ ગોટપગા૧ા। મુદા એક વે૧ક યો૧ પિકડ઼ા ગેઉાક વાદ પ્૧ાય઼: યો૧કિ અા૧ોપી સાહિત્ય઼કા૧ મૌન- વ઼્૧ત યા૨ાણ કઐત ૧હઉાહ અછિ અા મામલિ ઠંઢ઼ા૨ત ૧હઉ અછિ।
મુદા તાહિ પિ૧મ્પ૧ાક વ઼િપિ૧ીત અ૨ વે૧ક યો૧ 'સન્હિા યો૧' નકિઉઉ અછિ અા વ઼િગત એક દશકસઁ નનિન્ત૧ યો૧ કિઐત ળા ૧હઉ અછિ- સેન્હ કાટકિs। અા તેહેન મહાયો૧કેઁ મૈથિલિક સાહિત્ય઼કા૧ અા સંસ્થા સભ ત૧હત્થીપ૧ ઉઠા- ઉઠા કs પુ૨સ્ક□ત કેઉક અછિ અા સમીક્ષાક યાસનીમે યો૧ાય઼ઉ કવ઼િતા સવકેઁ વો૧ દિઉ ગેઉ અછિ।
વ઼િદેહ- સદેહ- ૨ પ્૧માણ- પુ૨સ્સ૧ અભિય઼ોગે ટા નહિ ઉગૌઉક, અપિતુ એહેન

महत्वाकांक्षी असामाजिक तत्वक विद्रूप साहित्यिक दम्भ आरोपित कऽ अपन "वोटबेस" सेहो प्रदर्शित केलक अछि। एक दशकमे तीन बेर पकड़ायल चोर प्रायः "ठेयर ठेजाओ" होइत अछि आ अपन अनुयायि। सीमाहीन महत्वाकांक्षाक पूर्ति हेतु अपन वरीय संवर्गीय व्यक्तिकेँ सीढ़ीक रूपमे उपयोग करैत अछि आ स्वार्थ- सिद्धिक उपरान्त अपन पयर सँ ओहि सीढ़ीकेँ नीचाँ खसा दैत अछि। शेर ओकरा अपन ट्विटर- फेसबुक- नेट वा पत्रिकामे गारिक निकि□ष्टतम स्तरपर उतरि मे करयो देरी नहि होइत छै। ओ नाम बदलि- बदलि कऽ गारि पढ़ैत अछि आ अपन प्रशंसामे जेएनयूक छात्र- छात्राक पोस्टकार्ड लिखवामे अपस्याँत भऽ जाइत अछि। ओ हिन्दीक कोनो बड़का साहित्यकारक बेटीक संग अपन नाम जोड़ि विवाहक वा प्रेम- प्रसंगक खिस्सा रस लऽ लऽ कऽ प्रचारित करैत अछि। एहेन प्रव□त्ति कएटा आओर तकिड़मबाजमे देखल गेल अछि जे हिन्दीक पैघ- पैघ नामक माला जपि कऽ मठोमाठ होअय चाहैत अछि। वस्तुतः ई चरित्राजनक तथ्य थिक जे मैथिलीक नव- तूरकेँ हिन्दीक पैघ- पैघ नामक वैशाखीक एतेक जरूरति किएक होइत छनि?

"विदेहक" "रचनावलीक विवरण" पढ़ि कऽ नोरयाँ ठाढ़ भऽ जाइत अछि। पहिल- ८६ आ आरम्भ- २३ मे जे पोल खुजल छल, अर तथाकथित साहित्यकारक, तकरा बादे मैथिली साहित्यसँ बारि देल जेबाक चाहैत छल। मुदा विडम्बना देखू जे चेतना समिति सम्मानित कऽ देलक। "मैथिल ब्राह्मण समाज", रहिका (मधुबनी) सन अँखिगर संस्थाकेँ चकचोन्हि लागि गेल, जखनकि संस्थामे विख्यात साहित्यकार उदयचन्द्र झा "विनोद" आ पढ़ाकू प्रोफेसरगण छथि। ई संशयविहीन अछि जे पुरस्क□त करेबामे विनोदजीक महत्वपूर्ण भूमिका रहल हैत। "विदेह" द्वारा रहस्योद्घाटन केलाक बादहु एखन धरि चेतना समिति अथवा मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिकाकेँ अपन पुरस्कार आपस करेबाक वा आने कोनो कारबाइ करबाक बेगरता नहि बुझा रहल छै आ सन्देह गुम्मी लधने अछि। एहेन "जड़- संस्था" सभ मैथिली साहित्यक उपकार करैत अछि वा अपकार? ई केना मानल जाय

ળે પહ૭-૮૬ વ઼ા શ્રાનમ્જા-૨૩ શ્ર૨ દુનૂ સંસ્થાક કોનો શ્રયકિાનો વ઼ા સાહિત્ય઼કાનકેં પઢ૭ નહિ છિ૭નિ?

ε શ્રાસ્યન્ય઼ળનક સત્ય઼ થકિ ળે મૈથિ૭ીક કહ્ટા પૈઘ સાહિત્ય઼કાન પંકળ પનાસનક ક□ત્નામિ કાવ્ય઼ શ્રા શ્રાય઼ાતિ સવ્દાવ઼૭ીમે શ્રુઁસ઼ા ગે૭ાહ શ્રછિ। "વ઼૭િમ્વાિ કહ્ક યુગ મે નવિદ્ય" ક જૂમકિામે શ્રનેનો વ઼દિસી સાહિત્ય઼કાનગામક તીસ-યા૭સિ ટા નામ શ્રોહિના નહિ ગનાશ્રો૭ ગે૭ શ્રછિ, શ્રપન કવ઼િતા કેં વ઼સિવ઼સ્તનીય઼ પ્રનમાામતિ કનવાક ૭૭ શ્રેંપ્પાગિન યોને એના કS સકેત શ્રછિ। સમ્જાવ઼ના વનેત શ્રછિ ળે ૭ગ૭સ કે૭નન ળકાઁ શ્રોહૂ સજા કવ઼િકિ નયનાક જાવ઼જૂમકિ વ઼ા સવ્દાવ઼૭ીક યોનકિ પ્રનમામ એહી કાવ્ય઼-પોથીમે જેટ઼િ ળાય઼। શ્રતતઃ મ઼ હિ૨૭ક કોન ઠેકાન? મૈથિ૭ીમે તેઁ ૭ેક વ઼સિવ઼-સાહિત્ય઼ કમ પઢૈત શ્રછિ। તકન ગાળાય઼ળ શ્રાય઼દા કોનો વ઼ેકમે૭ન કહિક નહિ ૭ગ્રાશ્રોત? શ્રાપ્પાિ ટેક્નો-પો૭ટિક્સ કી થકિ- ટેકનકિ૭ પો૭ટિક્સ થકિ, સૈહ કનિ? એકના વદૌ૭ત હાઁસા દS કS પાકસ્તિાનીક યાત્ના કય઼૭ ળા સકેત શ્રછિ। "ટેક્નો-પો૭ટિક્સક" વદૌ૭ત કનિામ-યાત્નો પુનસ્કાન, વ઼ૈદેહી-માહેસ્વ઼નો સહિ "મહેસ" પુનસ્કાન, એતેક યતા ળે વ઼દિતિળીક શ્રકાદમીય઼ોક પુનસ્કાન ૭૭ ળા સકેત શ્રછિ। પ્નદીપ વહિાનીક સુપુત્નક જાતળિ-કકા સમ્વન્યક મન્ય઼ાદાક શ્રતક્નિમામ કય઼૭ ળા સકેત શ્રછિ। પ્નો શ્રનુામ કમ૭ક "નયે ૨૭ાકે મેં" સેયમાનો કS કS "સમય઼ કેં શ્રકાન૭" ળા સકેત શ્રછિ। શ્રાન તેઁ શ્રાન, શ્ર૨ ટેકનકિ૭ પ□૭ટિક્સક વદૌ૭ત ળીવ઼કાન્તળી સન મહાનથી સાહિત્ય઼કાનસઁ "વ઼૭િમ્વાિ કહ્ક યુગ઼" પોથીક સમીક્ષા ૭ખ્વિા કS "મથિ૭િ દન્સન" (૫) સન પત્નકિામે છપવ઼ા કS સ્થાપતિ શ્રા શ્રમન જે૭ ળા સકેત યછિ। મૈથિ૭ી સાહિત્ય઼ક સજાસઁ પૈઘ સશ્રુ૭ શ્રૌળાન થકિ "ટેક્નો પો૭ટિક્સ"!

ε માન૭ ળા સકેત શ્રછિ ળે મથિ૭િ દન્સનક સમ્પાદકકેં શ્રાનમ્જા-૨૩ શ્રા પહ૭-૮૬ કો૭કાતામે નહિ જેટ૭ હો૨ન્હિ। મુદા ળીવ઼કાન્તળી નહિ પઢ઼ને હેતાહ સે માનવામે શ્રસૌકન્ય઼ જS નહ૭ શ્રછિ। ળીવ઼કાન્ત ળી તેઁ પ્નય઼ાગ શુક્૭ક "યન્દ્નજાગા મેં સૂન્ય઼ોદય઼" શ્રા એહી શીન્ષકક ગાનાય઼ામળીક કવ઼િતા

(ચન્દ્રમાગામે સૂર્યોદય) સેહો પઢ઼ને હેતાહ જે છપલ અછિ મૈથિલીમે। તખન પંકજ પરાશરક સમુદ્રસઁ અસંખ્ય પ્રશ્ન પૂછઇ વલા કવિતાક ભાવાર્થ કહિક નહિ લાગલનિ જે સમીક્ષામે કહલ તોડ઼ પ્રશંસા કરઇ પડ઼લનિ વા કરા ગેલનિ? એકરા "પ્રાયોજિત સમીક્ષા" કહિક નહિ માનલ જાય? કી પ્રયાગ શુક્લ વા નારાયણજીક સમુદ્ર વિષયક કવિતાસઁ બેશી મૌલિકતા પંકજ પરાશરક કવિતામે ભેટલનિ જીવકાન્તજીકેં? ઓર સભ કવિતાક કનિયોં "છાયા"ક સંકો નહિ ભેટલનિ સમીક્ષકકેં? "સભ્યતાક સભટા મર્યાદાક પુકાર"ક નોટિસ લેલક વલા સમીક્ષકકેં સાહિત્યિક ચોરિ અસભ્ય આ મર્યાદાક પીડ઼ાદાયક નહિ લાગલનિ? આબ જીવકાન્તજી સન સમીક્ષકક "પોલીશન સ્ટ□લસ" ભઇ જેતનિ સે અન્દાજ તઁ મિથિલા દર્શનક સમ્પાદકકેં નહિયે રહલનિ, ઉદય ચન્દ્ર ઝા "વિનોદ" કેં સેહો નહિ રહલનિ। ઈ અભિજ્ઞાન તઁ પંકજે પરાશર ટાકેં રહલ હેતનિ? બેચારે "પરાશર" મુનિક આત્મા સ્વર્ગમે કનૈત હેતનિ આ પંકસઁ જનમલ જોંક કમલ અછિ સભ અવિશ્વસનીય યથાર્થક સામના કરૈત હેતાહ। પરાશર ગોત્રી ભઇ કઇ તીન બેર ચોરિ કેનાઇ "પરાશર" મહાકાવ્યક રચયિતા સ્વ. કિરણજીકેં સેહો કનૈત હેતનિ। આખિર જીવકાન્તજી સાહિત્યિક ચોરિક નોટિસ કિએ ને લેલનિ, જખનકિ હુનકા વિચારેં "મૈથિલીક સમીક્ષક પ્રાયઃ મૂર્ખતા પીબિકઇ વિષવમન કરૈત અછિ"(વિદેહ- સદેહ- ૨- ૨૦૦૮- ૧૦) વિનીત ઉત્પલ- સાક્ષાત્કાર આ જીવકાન્તજી સ્વયં પંકજ પરાશરક ચોરિવલા કવિતા- પોથીક સમીક્ષક છથિ, અપિતુ ચોર્યકલા પ્રવીણ કવિક ઘોર પ્રશંસક છથિ। તખન અર સમીક્ષા- આલેખમે અન્તર્નિહિત અસીમ- પ્રશંસા સાકાંક્ષ- પાઠકકેં "વિષ-વમન" કોના ને લાગૌક? હુનકા સન "પઢ઼ાકૂ" સમીક્ષક- પાઠકકેં "સ્ટ□લસ પોલીશન"મે અન્તર્નિહિત "એક્સપર્ટ આ હૈબિચુએટેડ" સાહિત્ય- ચોરસઁ પ્રશંસા આ પુરસ્કાર દુનૂ પાબિ જાય તઁ મૈથિલી- કાવ્યક ઈ ઉત્કર્ષ થિક વા દુર્ભાગ્ય? અંતતઃ વિદેહ- સદેહ ટા કહિક નિન્દા કેલક એહિ ઘટનાક? આન કોનો પત્રિકા કહિક નહિ કેલક? ડ□ રમાનન્દ ઝા "રમણ" ઇન્ટરનેટપર નિન્દા કરૈત છથિ તઁ ઘર- બાહર પત્રિકામે કહિક નહિ જકર ઓ સમ્પાદક

छथि? जेना समिति, पटना सम्मानित करैत अछि एहने-एहने साहित्यकारकेँ तखन अपने पत्रिकामे कोना निन्दा करत, जखनकि पुरस्कार आपसो नहि भेल अछि, जानकारी लेखक वा साकांक्ष साहित्यकारक अनुरोध प्राप्त लेखक वादो? नचिकेताजी लेटपर निन्दा करताह आ "विदेह"मे छपत तँ "मिथिला दर्शन"मे कहियो नहि निन्दा वा सूचना छपल? कारण स्पष्ट अछि- जीवकान्तक समीक्षा पंकज पराशरक काव्य-पोथीपर छपत, तखन ओहि पोथीक चोरि कयल कविताक निन्दा कोना छपत? चारु भाग साहित्यिक आदर्श, मर्यादा आ नैतिकताक धज्जी उड़ि रहल अछि- पितामह आ आचार्यगणक समक्ष आ (अनजाने मे सही) हुनको लेखनिक द्वारा। मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिका; जेना समिति, पटना आ साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीमे अन्ततः कोन अन्तर अछि वा रहल? एहन नामी पुरस्कारक संचालन आ चयनकर्ता महारथी सभकेँ नव लेखककेँ पढ़बाक बेगरता कहियो नहि बुझाइत छनि? बिना पढ़ने पुरस्कारक निर्णय वा समीक्षाक निर्णय करैत उचित, जखन किछु चोरि तेसर बेरक चोरि थिक आ से छपि-कऽ भाण्डाफोड़ भेल अछि। एकरा वर्गीय आ वर्णीय साहित्यकारगण द्वारा काव्य-चोरि, आलेख-चोरिकेँ प्रश्रय देल जाइत कहियो नहि मानल जाय, जखनकि आरम्भ, मैथिल-जन, पहल आ विदेह-सदेह पहिनहि छापि चुकल छल? की साहित्यिक चोरिकेँ प्रश्रय देब, दलित वर्गकेँ प्रश्रय देब नहि थिक? एहन सम्भावनायुक्त नव कविकेँ प्रश्रय देब मैथिली साहित्य लेल घातक अछि वा कल्याणकारी, जकरा मौलिकतापर तीन बेर प्रश्न चेन्ह लागल होइक? की पोथीक आवरणक गत्ता देखि वा विदेशी कविगणक नामावली (भूमिकामे) पढ़ि कऽ समीक्षा लिखल जाइत अछि वा पुरस्कारक निर्णय लेल जाइत अछि? जँ से भेल हो तँ सब किछु "ठिक्के छै भाइ"?

अइ सबसँ तँ जीवकान्तजीक बात सत्य बुझाइत अछि जे समीक्षकगण दारू पीबि कऽ वा पैसा पीबि कऽ वा मूर्खता पीबि कऽ समीक्षा लिखैत छथि। डाक्टर केलनरक "टेक्नोपोलिटिक्स" तँ छपि गेल "पहल"मे चोरा कऽ। आब

ઊીવકાન્તઊી, ધ્યાન ગંઊનઊી શ્રથવા હિન્દી ઊગાતક શ્રાન સાહિત્યકાન-સમ્પાદકસઁ પૂછથુ ઊે નોમ ચોમ્સ્કીવઠ ગયના કતય ગેઠ, કી જેઠ, કોન નામે છપઠ? પંકઊ પગાશનક નામે કિ પિદીપ વહિાનીઊીક સુપુત્નક નામેં (શ્રનુવાદ ગૂપમે)। ई નસિન્ય એપ્પન નહિ જેઠ તઁ જાવષ્યિમે પુનઃ એકટા સાહિત્યિકિ ચોનકિ પોઠ ધૂઊત? શ્રંતતઃ એકટા માઁછકેઁ કએટા પોખ્ખનકિઁ પ્નદૂષતિ કનએ દેઠ ઊાય શ્રા સે કએ વેન? ૩દય-કાન્ત વર્ના કS ગાના પિઢ઼વાક શ્રાદતા તઁ પુનાન છર્ના ૭ મહાયોન કેઁ। કકનો "સનીસ□પ" કહિ સકૈત છથિ (મૈથિઠ-ઊન) શ્રા કોનો પનવિાનમે ઘોસયિા કS વ઼ષિ વ઼મન કS સકૈત છથિ। ઑફ્ટોપસક સજા ગુાામસઁ પનપ્નિાા ૭ પ□ઠ વાવાકેઁ ચોનકિ જાવષ્યિવાામી કનવ઼ાક વડ઼કા ગુાા છર્ના તેઁ હનિકા નામી શ્રુટવ□ઠ ટીમ દ્વાના પોસઠ ઊાઽત શ્રછિ, ઊાહિસઁ "વ઼શ્વિ-કપ"કેઁ દૌનાન શ્ર૨ "શ્રમોઘ શ્રસ્ત્નક" ૩પયોગ શ્રપના હિસાવેઁ કયઠ ઊા સકય।

સહનસા-કથાગોષ્ઠીમે પઠતિ હનિકન પહિઠ કથાક શીન્ષક છઠ- હમ પાગઠ નહિ છી। ई ૩દ્ઘોષાા કનવ઼ાક કી વેગનતા નહૈક- સે શ્રા૨ ઠોકકેઁ વુઢ઼ા નહઠ છૈક। શ્રવ઼નિાશ શ્રા પંકઊ પનાશનક માનાઊી તહિયા હનિકન કથાકેઁ "ટપ્પિાણીક"ક્નમમે મૈથિઠિ-કથાક "ટન્નિગ પ્વ઼ાઽન્ટ" માનને છઠાહ। શ્રા૨ શ્રો "ટન્નિગ પ્વ઼ાઽન્ટ" ઠીકે એક હિસાવેઁ "ટન્નિગ પ્વ઼ાઽન્ટ" પ્નમાાાતિ જેઠ, કાનાા કથાક શ્રોહિ શીન્ષકમે સઁ "નહિ" હટિ ગેઠ શ્રછિ, હનિકન તેવાના ચોનસઁ। હનિકન પહિઠ ચોના (શ્રનુાા કમઠક કવ઼તિા- નએ ઽઠાકે મે) ક નન્દિા પ્નસ્તાવ઼મે "માનાઊી" શ્રા ૭ મહેન્દ્નકેઁ છોડ઼િ, સહનસાક શેષ સજા સાહિત્યિકાન હસ્તાક્ષન કS "શ્રાનમ્જ"કેઁ પઠૌને છઠાહ। શ્રા૨ શ્રો હસ્તાક્ષન નહિ કેનહિાન સજા કનછિ કાટિ કS વ઼ામ-દહનિ તાક-ઢાઁક કનવ઼ાક ઠઠ વાય્ય છથિ। દ્વૈય-ચનાત્નિ શ્રા દોહના માનદાા્ડક પનાાામ સૈહ હોઽત શ્રછિ। શ્રવ઼નિાશ તપ્પન તઁ દેખ્ખન જાS ઊાઽત છથિ ઊપ્પન શ્રો વ઼દિહ-સદેહ-૨ મે ઠખ્ખૈત છથિ ઊે "એકના સાન્વ઼ઊનકિ નહિ કનવૈ"। ણુકા કS સૂચના દેવ઼ાક કોન વેગનતા? પંકઊ પનાશનસઁ સમ્વન્ધ ખ્ખનાવ હેવ઼ાક ૭ન વ઼ા કોનો "ટેક્નોપોઠટિક્સિ"(?) કેન ચન્તિ?

विदेह- सदेह- २ क पाठकक संदेश नै कएटा साहित्यकारकेँ देखार कऽ दैत अछि। जतय राजीव कुमार वर्मा, श्रीधरम, सुनील मल्लिक, श्यामानन्द चौधरी, गंगेश गुंजन, पी.के.चौधरी, सुभाष चन्द्र यादव, शम्भु कुमार सिंह, विजयदेव झा, भालचन्द झा, अजित मिश्र, केएणझा, प्रो.नचिकेता, बुद्धिनाथ मिश्र, शिव कुमार झा, प्रकाश चन्द्र झा, कामिनी, मनोज पाठक आदि अपन मुखर भाषामे प्रखरतापूर्वक निन्दनीय घटनाक निन्दा केलनि अछि, ततहि अविनाश, ड□ रमानन्द झा "रमण", विभारानीक झाँपल- तोपल शब्द आश्चर्य- भावक उद्रेक करैत अछि। मुदा संतोषक बात ई अछि जे पाठकक "प्रबल भाव- भंगिमा" साहित्यकारोक "मेहायल आवाज"क कोनो चिन्ता नहि करैत अछि। विभारानी नै कमाल कऽ देलनि। एहि ठाम मैथिली भाषा- साहित्यक एक सय समस्या गनेबाक उचित स्थान नहि छल। ई ओनाठ काल खोनाठ आ महादेवक विवाह कालक लगानी भऽ गेल। कोनो चोर बेर- बेर अपन कु- क□त्यक परिचय दऽ रहल अछि आ हुनका समय नष्ट करब बुझा रहल छनि आ चोरकेँ देखार केलासँ दुःख भऽ रहल छनि? ओ अपन प्रतिक्रियामे करोक आत्म स्लाघा आ हीन- भावना व्यक्त केलनि अछि से अपने पत्र अपने ठंढा भऽ कऽ पढ़ि कऽ बूझि सकैत छथि। हिन्दीयोमे एहिना भऽ रहल अछि, तैँ मैथिलीमे माफ कऽ देल जाय? आब हिन्दीसँ पूछि- पूछि कऽ मैथिलीमे कोनो काज होयत? विभारानी ज्योत्सना चन्द्रमकेँ ज्योत्सना मलिन केना कहैत छथि? हुनकर उपेक्षा कोना मानल जाय? ओ सभ साहित्यिक कार्यक्रममे नोतल जाइत छथि, सम्मान आ पुरस्कार पबैत छथि, पाठक द्वारा पठित आ चर्चित होइत छथि। समीक्षाक शिकाइत की उच्चवर्गीय (?) साहित्यकारकेँ मैथिलीमे नहि छनि? समीक्षाक दुःस्थिति सभ जातिक मैथिली साहित्यकार लेल एके रंग विषम अछि। ओइ मे जातिगत विभेद एना भेलए जे ब्राह्मण- समीक्षक, आरक्षणक द□ष्टिकोणसँ निम्न जाति (?)क साहित्यकारक किछु बेसीए समीक्षा (सेहो सकारात्मक रूपेँ) केलनि अछि। समीक्षा आ आलोचनाक विषम स्थितिक कारणेँ जँ नैराश्यक शिकार भऽ जाय लेखक, तँ लेखकीय

प्रतविद्याक की अर्थ नहि जाइत? विभाजीकेँ बुझल नहि छनि जे हुनका लोकनिक बाद मैथिली महिला लेखनमे कामिनी, नूतन चन्द्र झा, वन्दना झा, माला झा आदि अपन तेवरक संग पदार्पण कऽ चुकल छथि। हुनका ने कामिनीक कविता संग्रह पढ़ल छनि आ ने "रजोड़ियाक अडैठी मोड़"। हुनका अपन गुरुदेवक बात मानि हिन्दीमे जाइसँ के कहियो रोकलकनि? ओ गेल छथि हिन्दीमे। मात□भाषाक प्रेरमा अद्वितीय होइत छै। मैथिलीक जड़ संस्था अथवा समीक्षक सभपर प्रहार करबामे हमरा कोनो आपत्ति नहि, मुदा अर्थालाभ तँ एतय नगण्य अछि। सामाजिक सम्मान विभाजीकेँ अवश्य भेटलनि अछि। समाजमे "जड़"लोक छै तँ "चेतन" लोक सेहो छैक। हुनकासँ मैथिली भाषा-साहित्य आ मिथिला-समाजकेँ पैघ आशा छै, हीनभाव वा आत्मश्लाघासँ ऊपर उठि काज करबाक बेगरता छैक। सक्षम छथि ओ। हुनका श्रेय लेबाक होड़सँ बँचबाक चाही। अन्यथा साहित्य अकादेमी प्रतिनिधि, दलालियापन केर शिकार जूरीगण आ मैथिलीक सक्षम साहित्यकारमे की की अन्तर नहि जाइत? विभारानीक बयिलनक दशा हमरा चिन्तित आ व्यथित कएने अछि। ओ दमगर लेखिका छथि, सशक्त रचना केलनि अछि, आर ने काल्हि समीक्षकगण कलम उठेबापर बाध्य हेबे करताह। समीक्षकक कर्त्तव्यहीनतासँ कतौ लेखक निराश हो?

पंकज पराशरक श्रं□खलाबद्ध साहित्यिक चोरीपर सार्थक प्रतिक्रिया देब कोनो साहित्यकार लेल अनुचित नहि अछि कतहुसँ। साहित्यकार लेल साहित्यिक मूल्यक प्रति ओकर प्रतिबद्धता मुख्य कारक होइत अछि आ हेबाको चाही आ तकरा देखार करबाक "बोल्डनेस" हेबाक चाही। "चाही"वला पक्ष साहित्यमे बेशी होइत अछि। एहेन-एहेन गम्भीर विषयपर साहित्य आ समाजक "चुप्पी" एहेन घटनाकेँ प्रोत्साहित कएने अछि आ जबदाह जड़ताकेँ बढ़ौने अछि, भाषा-साहित्यकेँ बदनाम तँ करिते अछि। जायनि पंकज पराशरक चोरि-काव्यक समीक्षा लिखल जाइत रहत, विभारानीक मूल-रचनाक समीक्षा के लिखत? ककरा जरूरी बुझैक? विभारानी अपने तँ समीक्षा प्रायोजित नहि करओती? सक्षम लेखकक व्यवहारोक अपन स्तर

𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻। 𑒞𑒹𑒿 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒨𑒼𑒑𑒏𑒱 𑒁𑒦𑓂𑒨𑒰𑒮𑒏 𑒯𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒲।

